आयरलैंड की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Ireland Ki Lok Kathayen (Fairy and Folk Tales of Ireland)
Cover Page picture: Cathedral of Dublin, Ireland
Publishes Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Web Site: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Ireland

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

आयरलैंड की लोक कथाऐं 7

परियों और जादूगरनियों की कहानियॉ 9

1 जादुई दूध 11

2 सींगों वाली जादूगरनियॉ 14

संतों और पादरियों की कहानियॉ 21

3 पादरी की आत्मा 23

शैतानों की कहानियॉ 33

4 काउन्टैस कैथलीन ओशी 35

5 तीन इच्छाऐं 40

राजाओं, रानियों, राजकुमारियों और डाकुओं की कहानियॉ 59

6 बारह जंगली हंस 61

7 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ 73

8 घमंडी राजकुमारी 82

9 मूनाचर और मानाचर 89

10 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी 97

11 लो अर्न के सुनहरी सेब 106

12 निडर आदमी 122

13 कवि शौनचन और बिल्लियों का राजा 134

आयरलैंड की कुछ और लोक कथाऐं 141

14 जैमी फ्रील और एक नौजवान स्त्री 143

15 लालची लोमड़ा 159

16 बिना मोजे वाली स्त्री 163

17 बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियॉ 170

18 अंडों की टोकरी 181
19 एक वकील और एक शैतान 184
20 स्नीम का भूत 186
21 परी नर्स 191

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

आयरलैंड की लोक कथाऐं[1]

आयरलैंड यूरोप महाद्वीप के ग्रेट ब्रिटेन देश के पश्चिम में स्थित एक टापू है। यह यूरोप की मुख्य जमीन के उत्तर पश्चिम में है। आयरलैंड अपने किलों, चर्च, पशुपालन, बड़े बड़े घास के मैदानों, दूध की बनी चीज़ों जैसे चीज़ और मक्खन आदि के लिये बहुत मशहूर है।

आयरलैंड की लोक कथाऐं जिन्हें "कैल्टिक टेल्स" भी कहते हैं कुछ अलग ही तरीके की कहानियॉ हैं। वहॉ जादूगरनियों और परियों की कहानियॉ बहुत पसन्द की जाती हैं। इनमें से जादूगरनियॉ अपनी ताकत बुरी आत्माओं से और परी वाले लोग अपनी ताकत परियों से लेते हैं। जादूगरनियों को लोग अक्सर पसन्द नहीं करते क्योंकि वे दूसरों को नुकसान पहुॅचातीं हैं, परन्तु परियों वाले लोगों को सब पसन्द करते हैं क्योंकि वे सबकी सहायता करते हैं या फिर कभी कभी शरारत भी करते हैं।

सबसे ज़्यादा परियों वाले वे लोग पसन्द किये जाते हैं जिनको किसी समय परियों ने पसन्द किया था, या फिर वे उनको अपने साथ ले गयी थीं और सात साल तक उनको अपने पास रखा और उनको सिखाया पढ़ाया। उनको जड़ी बूटियों और जादू की बहुत सारी बातें भी आती हैं।

लेडी वाइल्ड[2] ने ऐसे ही एक आदमी के बारे में लिखा है – "वह कभी बीयर नहीं पीता था, शराब नहीं पीता था, मॉस नहीं खाता था, केवल रोटी, फल और सब्जियॉ खाता था। जाड़ों और गरमियों दोनों में वह एक ही तरह के कपड़े पहनता था – एक फलालैन की कमीज और कोट। बस।

और अगर कोई उसको खाना खाने के लिये बुलाये भी तो वह उसके यहॉ जाता तो जरूर था पर वहॉ कुछ खाता पीता नहीं था। उसको न तो अंग्रजी आती थी और न ही वह सीखने की कोशिश करता था। हॉलॉकि उसका कहना यह था कि बड़ी मुश्किल से वह उसका इस्तेमाल अपने दुश्मन को शाप देने के लिये कर सकता था।

उसने कभी शादी नहीं की और वह साधारण लोगों से दूर रहता था इसलिये उसको बहुत सारी गुप्त चीज़ें मालूम थीं पर वह कितना भी पैसा ले कर अपनी उन चीज़ों को दूसरों को सिखाने क लिये तैयार नहीं था। पर उसका कहना यह भी था कि अगर वह ऐसा करता तो वह तुरन्त ही मर जाता। उसका यह भी कहना था कि मरने से पहले वह अपनी ताकत का भेद बता कर जायेगा□पर उससे पहले नहीं□और वह भी केवल एक आदमी को।

उसने अपनी सारी ज़िन्दगी भले कामों को करने में लगा दी और आज जब कि वह बूढ़ा हो गया है, अभी तक कभी बीमार नहीं पड़ा। उसको कभी किसी ने गुस्सा होते भी नहीं देखा।" ऐसे कई लोग वहॉ की स्लीगो काउन्टी[3] में रहते हैं।

इसके विपरीत जादूगरनियॉ बिल्कुल ही दूसरी तरह की होतीं हैं। उनमें से कब्र की सी बू आती है। उनके जादू की सबसे खास चीज़ है "मरा हुआ हाथ"। किसी मुर्दे के कटे हुए हाथ पर वे मन्त्र पढ़ कर वे एक कुऍ तक को मथ सकतीं हैं और उसमें से मक्खन निकाल सकतीं हैं।

---

[1] The stories of this book have been translated from the book – "Fairy and Folk Tales of Ireland." collected and edited by WB Yeats. New York, Macmilan Company. 1973. This volume contains "Fairy and Folktales of Irish Peasantry" first published in 1888 edition available on the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/yeats/fip/index.htm ; and "Irish Fairy Tales" first Published in 1892.

[2] Lady Wilde

[3] Sligo County

एक मरे हुए हाथ की उँगलियों के बीच में फँसी मोमबत्ती को कभी बुझाया नहीं जा सकता। यह चीज़ डाकुओं के लिये बड़ी फायदेमन्द है परन्तु यह प्रेमियों को भी पसन्द है क्योंकि ये हाथ काली बिल्ली के जिगर को सुखा पीस कर प्रेम की दवा बना सकते हैं। ये पाउडर चाय में मिला कर काली केटली में भर कर उससे वह चाय प्याले में डाल कर पीने से ये अचूक दवा का काम करते हैं। इन पाउडरों की सफलता की कहानियाँ अभी तक सुनने में आतीं थीं पर इसको बार बार करना पड़ता है नहीं तो यह प्रेम फिर घृणा में बदल जाता है।

जादूगरनियाँ अपने आपको बदल भी सकती हैं। आयरलैंड में ये अक्सर अपने आपको खरगोश या काली बिल्ली के रूप में बदल लेती हैं इसलिये वहाँ के लोग इनको अच्छा नहीं मानते हैं।

तो लो पढ़ो आयरलैंड की ऐसी ही कुछ अजीबोगरीब लोक कथाऐं। आशा है दूसरी लोक कथाओं के संग्रहों की तरह से यह लोक कथा संग्रह भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेगा और आयरलैंड के समाज के बारे में कुछ जानकारी देगा।

परियों और जादूगरनियों की कहानियॉ

1 जादुई दूध[4]

एक बार आयरलैंड के एक गॉव में दो परिवार रहते थे। दोनों परिवारों के पास अच्छी गायें थीं पर हैनलौन परिवार[5] के पास ज़्यादा अच्छी गायें थीं।

वे ज़्यादा दूध भी देतीं थीं और उनके दूध का मक्खन भी ज़्यादा पीला होता था। उस परिवार के पास एक कैरी[6] नाम की गाय थी जो बहुत ही अच्छी थी।

दूसरे परिवार डोहर्टी की एक लड़की ग्रेस[7] बहुत ही सुन्दर थी। पड़ोसी लोग भी उसकी बहुत तारीफ करते थे। ग्रेस को हैनलौन परिवार की वह कैरी गाय बहुत अच्छी लगती थी।

एक दिन ग्रेस रात को मिसेज़ हैनलौन के पास एक अजीब सी फरमायश ले कर गयी। उसने पूछा — "क्या आप मुझे अपनी मोइले गाय[8] को दुहने देंगी?"

मिसेज़ हैनलौन भी ग्रेस की यह अजीब सी फरमायश सुन कर कुछ आश्चर्य में पड़ गयीं। उन्होंने उससे नम्रतापूर्वक पूछा — "तुम उस गाय को क्यों दुहना चाहती हो बेटी?"

---

[4] Magical Milk – a folktale of Ireland, Europe
[5] Hanlon Family
[6] Kerry – name of the cow
[7] Grace – name of the girl from Dogherty Family
[8] Moiley cow means a cow without horns

ग्रेस बोली — "कोई ख़ास बात नहीं, बस यूँ ही। मैंने सोचा आपको तो बहुत काम होंगे तो मैं ही आपकी गाय दुह आती हूँ।"

मिसेज़ हैनलौन बोलीं — "नहीं बेटी, अभी मेरे पास बहुत ज़्यादा काम नहीं है इसलिये मैं उसको खुद ही दुह लूँगी। तुमको इस छोटे से काम के लिये मैं परेशान नहीं करना चाहती।"

ग्रेस बेचारी यह जवाब सुन कर घर चली आयी पर अगले दिन वह फिर इसी फरमायश के साथ मिसेज़ हैनलौन के पास आयी। कुछ देर बाद मजबूर हो कर मिसेज़ हैनलौन ने उसको अपनी कैरी गाय को दुहने की इजाज़त दे दी।

ग्रेस खुशी खुशी कैरी को दुहने के लिये गयी पर जल्दी ही वह दुखी हो गयी क्योंकि कैरी ने उस दिन दूध ही नहीं दिया। ऐसा तीन दिन तक होता रहा तो मिसेज़ हैनलौन अपने पड़ोसी मार्क[9] के पास गयीं और उसको सारा हाल बताया।

सारा हाल सुनने के बाद मार्क बोला — "ऐसा लगता है कि तुम्हारी गाय को कोई बुरी नजर से दुह रहा है। ऐसा करो अगर तुम मुझे उसका थोड़ा सा दूध ला दो तो मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि वह गाय दूध क्यों नहीं दे रही है। तुम मुझे केवल आधा सेर दूध ही ला दो। मेरे लिये उतना ही दूध काफी है।"

मिसेज़ हैनलौन बोलीं — "ठीक है मैं ला दूँगी।" कह कर मिसेज़ हैनलौन दूध लाने चली गयीं और जब वह दूध ले कर लौटीं

[9] Mark – name of the neighbor

तो मार्क ने उनसे दरवाजा बन्द करने के लिये कहा। फिर मार्क ने उस दूध को सात नयी पिन डाल कर उबलने रख दिया।

वे पिनें दूध में जल्दी ही उबलने लगीं। तभी दरवाजे के पास ज़ोर ज़ोर से आते हुए कदमों की आहट सुनायी दी और फिर ग्रेस के ऊँची आवाज में बोले गये शब्द सुनायी पड़े —

"मिसेज़ हैनलौन, मुझे अन्दर आने दो और अपना यह दूध वाला बर्तन भी आग के ऊपर से उतार लो। उसके अन्दर की पिनें भी निकाल लो क्योंकि वे पिनें मेरे दिल में छेद किये दे रही हैं। अब मैं आपकी गाय का दूध कभी नहीं छुऊँगी।"

आयरलैंड में शायद ही ऐसा कोई गॉव हो जिसमें इस तरह दूध न चुराया जाता हो पर इस बात को जानने की कई और तरकीबें भी हैं। कभी कभी हल के फल को आग में खूब तपाया जाता है इससे वे जादूगरनियॉ यह चिल्लाती हुई चली आतीं हैं कि वे आग में जल रहीं हैं।

इसके अलावा घोड़े या गधे की नाल को गरम कर के जादूगर के घर के दरवाजे के ऊपर से रात को चुराये गये तीन तिनकों के साथ दूध बिलोने वाले बर्तन के नीचे रख देते हैं। उसकी गरमी से भी वे जलने लगती हैं।

2 सींगों वाली जादूगरनियॉ[10]

आयरलैंड की यह दूसरी लोक कथा भी एक जादूगरनी की लोक कथा है।

एक रात एक स्त्री घर में सबके सो जाने के बाद अपनी ऊन ठीक करने बैठी कि अचानक किसी स्त्री ने दरवाजा खटखटाया और कहा — "खोलो खोलो, दरवाजा खोलो।"

स्त्री ने पूछा — "कौन है?"

बाहर वाली स्त्री ने कहा — "मैं हूँ एक सींग वाली जादूगरनी।"

घर की स्त्री को लगा कि पड़ोस की कोई स्त्री उससे किसी तरह की सहायता मॉगने आयी है सो उसने दरवाजा खोल दिया। एक स्त्री अन्दर घुसी। उसके हाथ में ऊन साफ करने की मशीन थी और उसके सिर पर एक सींग था जैसे वह उसके सिर से ही उगा हो।

वह घर के अन्दर आ कर आग के पास बैठ गयी और जल्दी जल्दी ऊन साफ करने लगी। अचानक वह बोली — "और स्त्रियॉ कहॉ हैं? उनको बहुत देर हो गयी।"

तभी किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया और पहले की तरह से एक आवाज आयी — "खोलो खोलो, दरवाजा खोलो।"

[10] Witches with Horns – a folktale of Ireland, Europe

घर की स्त्री मशीन की तरह उठी और जा कर घर का दरवाजा खोल दिया। एक दूसरी जादूगरनी घर में घुसी। उसके हाथ में चरखा था और सिर पर दो सींग थे।

वह आते ही बोली — "मुझे बैठने के लिये जगह चाहिये। मैं दो सीगों वाली जादूगरनी हूँ।" वह पहली वाली जादूगरनी के पास जा कर बैठ गयी और उसने ऊन कातना शुरू कर दिया।

इस तरह दरवाजा दस बार खटखटाया गया और कई सींगों वाली जादूगरनियॉ अन्दर आती चली गयीं। पहली वाली जादूगरनी एक सींग की थी और आखिरी वाली बारह सींग की।

उन सबमें कोई ऊन साफ कर रही थी तो कोई ऊन कात रही थी, तो कोई उसकी पूली बना रही थी तो कोई उसे बुन रही थी।

काम करते समय वे कोई पुराना गाना गा रहीं थीं पर उनमें से कोई भी जादूगरनी घर की स्त्री से नहीं बोली। इन जादूगरनियों की आवाज बड़ी अजीब थी और सिर पर सींग उगे होने की वजह से ये सब देखने में भी बहुत डरावनी थीं।

घर की स्त्री को यह सब देख सुन कर बड़ा डर लग रहा था। उसको लग रहा था कि वह तो बस मर ही जायेगी। उसने उठ कर सहायता के लिये चिल्लाना भी चाहा परन्तु न तो वह हिल सकी और न ही किसी को पुकार ही सकी क्योंकि उन जादूगरनियों का जादू उसके ऊपर था।

इतने में एक जादूगरनी ने उससे कहा — "उठो और हमारे लिये एक केक बनाओ।"

घर की स्त्री पहले की तरह से एक मशीन की तरह उठी और कुँए से पानी लाने के लिये कोई बर्तन ढूँढने लगी ताकि वह केक बनाने के लिये आटा गूँध सके और फिर केक बना सके पर उसको अपने घर में कोई बर्तन ही दिखायी नहीं दिया।

जादूगरनी बोली — "यह चलनी रखी है इसी में पानी ले आओ।"

उस समय उस स्त्री की समझ में यही नहीं आया कि वह चलनी में पानी कैसे लायेगी। बस वह तो उठी, उसने पास पड़ी चलनी उठायी और कुँए की तरफ पानी लाने चल दी। जब वह पानी उस में भरने लगी तो उसमें तो उससे पानी ही नहीं भरा जा रहा था। वह वहीं कुँए के पास बैठ गयी और रोने लगी।

इतने में कोई उसके कान में फुसफुसाया — "वह पीली मिट्टी उठाओ और वह घास लो और दोनों को मिला कर चलनी के छेद बन्द करो तभी उसमें पानी भरा जा सकेगा।"

उसने ऐसा ही किया। तब कहीं जा कर उसमें केक बनाने के लिये पानी भरा जा सका।

इतने में वही आवाज फिर उसके कानों में फुसफुसायी — "जाओ, अब तुम वापस अपने घर जाओ और जब तुम अपने घर के उत्तरी मोड़ पर पहुँचो तो तीन बार ज़ोर से चिल्ला कर कहना —

"फैनियान की स्त्रियों के पहाड़[11] और उसके ऊपर का आसमान दोनों में आग लग गयी है।"

उसने ऐसा ही किया। उधर घर में बैठी जादूगरनियों ने जब यह सुना तो उनके मुँह से चीख निकल गयी और वे सब रोती चिल्लाती उस पहाड़ की तरफ भाग लीं।

पर इस बीच में उन जादूगरनियों ने उस स्त्री के जाने के बाद एक केक बनाया और उसके परिवार के लोगों के मुँह में रख दिया जिससे वे सब मर गये।

इधर उस कुँए की आत्मा[12] ने जिस कुँए से वह स्त्री पानी भरने गयी थी उस स्त्री को उन जादूगरनियों से अपना घर सुरक्षित करने के लिये कुछ किया ताकि वे जादूगरनियॉ अगर वापस भी लौटें तो उसके घर में अन्दर न घुस सकें।

इसके लिये सबसे पहले उसने अपने पानी से उसके बच्चे के पैर धोये। फिर उस पानी को दरवाजे की देहरी पर छिड़का।

फिर उसने जादूगरनियों ने घर की स्त्री के जाने के बाद जो केक बनाया था उसमें उसके सोते हुए परिवार का खून मिला कर उस केक के छोटे टुकड़े कर के उसके परिवार के सब लोगों के मुँह में रख दिये जिससे वे सब ज़िन्दा हो गये।

[11] Mountain of the Women of Fenian

[12] Spirit of the Well

फिर उसने उन जादूगरनियों के बुने हुए कपड़े को आलमारी में आधा अन्दर और आधा बाहर रख दिया और आलमारी के दरवाजे को एक बड़े से लकड़ी के लट्ठे से बन्द कर दिया और उन जादूगरनियों का इन्तजार करने लगी।

जादूगरनियॉ जल्दी ही वापस लौट आयीं और गुस्से में भर कर बोलीं — "ओ पैरों के पानी, दरवाजा खोलो।"

पैरों का पानी बोला — "मैं यह दरवाजा नहीं खोल सकता, मैं तो जमीन पर बिखर चुका हूॅ और नीचे की तरफ बह रहा हूॅ।"

फिर वे दरवाजे से बोलीं — "जंगल, पेड़, लट्ठे, दरवाजा खोलो।"

दरवाजा बोला — "मैं तो हिल भी नहीं सकता क्योंकि मैं तो लट्ठे से बन्द हूॅ।"

वे फिर बोलीं — "खोलो खोलो, ओ केक जो हमने खून मिला कर बनाया था, दरवाजा खोलो।"

केक बोला — "मैं नहीं खोल सकता क्योंकि मुझे तोड़ दिया गया है और मेरा खून बच्चों के मुॅह पर है।"

यह सुन कर सब जादूगरनियॉ चीखती चिल्लाती और कुॅए की आत्मा को कोसती हुई अपने पहाड़ की तरफ भाग गयीं। इस तरह उस कुॅए की आत्मा ने उस स्त्री का घर बचाया।

जब सब जादूगरनियॉ भाग रहीं थीं तो भागते समय उनमें से एक जादूगरनी का शाल[13] गिर गया। वह उस घर की स्त्री ने उस रात की घटना की याद में अपने घर में टॉग लिया था। वह शाल पॉच सौ साल बाद आज भी उसके घर में सुरक्षित है।

[13] Translated for the word “Cloak: - it is a kind of overall cloth to cover one’s whole body. See its picture above.

संतों और पादरियों की कहानियॉ

आयरलैंड में संतों और पादरियों की अपनी एक अलग और बड़ी महत्वपूर्ण जगह है। वहॉ जगह जगह पर पवित्र कुॅए हैं। लोग उनके पास बैठ कर पूजा करते हैं और पत्थरों के छोटे छोटे ढेर बनाते हैं जो फैसले के दिन गिने जायेंगे और उन्हीं की पूजा भगवान स्वीकार करेंगे जिन्होंने वे ढेर बनाये हैं। ये उन्हीं की कहानियॉ हैं।

संतों के शरीर भी वहॉ एक आश्चर्यजनक चीज़ हैं। कहते हैं कि आयरलैंड में फ़ोर माइल वाटर[14] के पास संतों का एक बहुत बड़ा कब्रिस्तान था। किसी समय वह नदी के उस पार था पर किसी ने वहॉ किसी पापी को गाड़ दिया तो कहते हैं कि रातों रात उस पापी की कब्र को वहॉ अकेला छोड़ कर सारे संतों का कब्रिस्तान नदी के दूसरी तरफ उठ कर चला गया।

हालॉकि एक पापी की कब्र को वहॉ से हटाना आसान था पर संतों को तो अपना काम अपने तरीके से ही करना था न।

[14] Four-Mile-Water – a place in Ireland

3 पादरी की आत्मा[15]

पुराने समय में आयरलैंड में बड़े बड़े स्कूल थे जहॉ लोगों को हर तरीके की शिक्षा दी जाती थी और उस समय के वहॉ के गरीब से गरीब लोग भी आज के अच्छे पढ़े लिखे आदमियों से ज़्यादा जानते थे।

ऐसे ही समय में एक बच्चा अपनी होशियारी से सबको चकित किये दे रहा था। उसके गरीब माता पिता मेहनत मजदूरी कर के अपना और अपने बच्चों का पेट पालते थे।

पर यह बच्चा पैसे से जितना गरीब था ज्ञान का उतना ही अमीर था। राजाओं और महाराजाओं के बच्चे भी उससे ज्ञान में आगे नहीं थे।

कई बार वह अपने मास्टरों को भी नीचा दिखा देता था क्योंकि वे जब भी कोई चीज़ उसे सिखाने की कोशिश करते वह उनको कुछ ऐसी बात बता देता जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी होती।

उसकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह बहस में बहुत होशियार था। वह पहले काले को सफेद साबित करता और फिर जब दूसरे को इस बात का विश्वास हो जाता कि हॉ यह तो सफेद ही है तो फिर अपनी होशियारी से उसी सफेद को काला साबित कर देता था।

[15] Spirit of a Priest – a folktale of Ireland, Europe

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो उसके माता पिता उससे बहुत खुश रहते थे। उन्होंने सोच लिया कि वे उसको पादरी बनायेंगे और उन्होंने एक दिन उसको पादरी बना दिया। क्योंकि इतना अक्लमन्द आदमी उस समय पूरे आयरलैंड में कोई नहीं था इसलिये कोई उसका मुकाबला भी नहीं कर सकता था।

अगर कोई बिशप[16] भी उससे बात करने की कोशिश करता तो उसे तुरन्त ही पता चल जाता कि वह तो उसके आगे कुछ भी नहीं जानता।

उस समय में आजकल की तरह के स्कूल और मास्टर नहीं हुआ करते थे। चर्च के पादरी लोग ही लोगों को पढ़ाया करते थे और क्योंकि यह पादरी उस समय का सबसे अक्लमन्द पादरी था इसलिये बहुत सारे देशों के राजा अपने अपने बेटों को इस पादरी के पास पढ़ने के लिये भेजते थे।

धीरे धीरे इस पादरी में घमंड आने लगा और वह यह भी भूल गया कि वह क्या था और किसकी मेहरबानियों से आज इस जगह पहुँचा था। उसके अन्दर बहस करने की चतुरता का घमंड घर करता चला गया।

वह यह साबित करता चला गया कि न तो कहीं स्वर्ग है और न ही कहीं नरक है, न कहीं आत्मा है और न ही कहीं परगेटरी[17] ही है। यहाँ तक कि कहीं भगवान भी नहीं है।

[16] Bishop – a high status man in Church

वह हमेशा यह कहा करता था — "आत्मा को किसने देखा है? अगर तुम मुझे एक भी आत्मा दिखा दो तो मैं विश्वास कर लूँगा कि आत्मा है।"

लेकिन उस जैसे होशियार आदमी को यह कौन समझाता कि आत्मा को देखा नहीं जा सकता। और फिर सारे लोग यही मानने लग गये।

उसने शादी भी की पर उसकी शादी कराने वाला दुनियॉ भर में कोई पादरी ही नहीं मिला तो शादी की सब रस्में उसे खुद ही पूरी करनी पड़ीं।

लोग आपस में तरह तरह की बातें करते पर ऊपर से कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सब राजाओं के लड़के उसी से पढ़ते थे और सब उसी का पढ़ाया बोलते थे।

वे सब तो उसी के चेले थे और उसी की बातों में विश्वास करते थे। वे सोचते थे कि वह जो कुछ कहता था ठीक ही कहता था। इस तरह दुनियॉ में बुराई फैलती जा रही थी।

कि एक रात स्वर्ग से एक देवदूत[18] आया और पादरी से बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी अब केवल चौबीस घंटों की और है।"

[17] Purgatory - According to the Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

[18] Translated for the word "Angel"

पादरी यह सुन कर कॉप गया और उसने देवदूत से उसे इस धरती पर रहने के लिये कुछ और ज़्यादा समय देने की प्रार्थना की परन्तु देवदूत अपनी बात का पक्का था इसलिये पादरी को उससे ज़्यादा समय नहीं मिल पाया।

फिर भी उस देवदूत ने उससे पूछा — "तुम जैसे पापी को और ज़्यादा समय क्यों चाहिये?"

पादरी ने दीनता भरी आवाज में कहा — "देवदूत, मुझ पर रहम करो, मुझ पर दया करो, मेरी आत्मा पर तरस खाओ।"

देवदूत ने मुस्कुरा कर पूछा — "तो तुम्हारी आत्मा भी है? परन्तु इस बात का तुमको पता कैसे चला कि तुम्हारी आत्मा भी है?"

पादरी बोला — "जबसे तुम मेरे सामने आये हो तभी से यह मेरे शरीर के अन्दर फड़फड़ा रही है। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मुझे इसका पहले पता ही नहीं चला।"

"तुम सचमुच में बेवकूफ हो। तुम्हारे पढ़ने लिखने का क्या फायदा अगर तुम यही पता न चला सके कि तुम्हारी एक आत्मा भी है।" देवदूत बोला।

पादरी बोला — "ओह मेरे भगवान, अच्छा यह बताओ मरने के कितनी देर बाद मैं स्वर्ग पहुँच जाऊँगा?"

देवदूत हॅस कर बोला — "तुम स्वर्ग कभी नहीं पहुॅचोगे क्योंकि तुम तो स्वर्ग को मानते ही नहीं।"

पादरी बोला — "क्या मैं परगेटरी जा सकता हूॅ?"

देवदूत बोला — "पर तुम तो परगेटरी को भी नहीं मानते। तुम तो सीधे नरक जाओगे।"

अबकी बार पादरी के हॅसने की बारी थी। वह बोला — "पर मैं तो नरक को भी नहीं मानता इसलिये तुम मुझे वहॅा भी नहीं भेज सकते।"

यह सुन कर देवदूत कुछ परेशान सा हुआ और बोला — "मैं बताता हूॅ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ। तुम अगर चाहो तो अभी धरती पर सौ साल तक और रह सकते हो और सभी खुशियों को भोग सकते हो, या फिर चौबीस घंटों के बाद तकलीफ के साथ मर सकते हो।

मैं तुमको परगेटरी ले जाऊॅगा फैसले के दिन[19] तक का इन्तजार करने के लिये। पर इस बीच अगर तुमको कोई ऐसा आदमी मिल जाता है जो भगवान में विश्वास करता हो, स्वर्ग नरक में विश्वास रखता हो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ सुधर सकती है।" यह कह कर वह देवदूत वहॅा से गायब हो गया।

[19] Translated for the words "The Day of Judgment". In Christianity it is believed that there will be a Day of Judgment also called "The Judgment Day", or "Final Judgment", or "The Day of the Lord" etc is the day in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

पादरी को निश्चय करने में पॉच मिनट भी नहीं लगे। उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना था। चौबीस घंटे तो उसके लिये बहुत होते थे वह करने के लिये जो देवदूत ने उसको बताया था।

वह तुरन्त ही एक बहुत बड़े कमरे में पहुॅचा जहॉ उसके बहुत सारे चेले और राजाओं के लड़के बैठे थे। उसने उनसे कहा कि तुम सब लोग सब सच बोलना। तुम लोग मेरे खिलाफ बोल रहे हो इस बात से ज़रा भी नहीं डरना। यह बताओ कि तुम्हारा क्या विश्वास है कि आदमी के आत्मा होती है क्या?

वे बोले — "मास्टर जी, पहले तो हम लोग मानते थे कि आदमी के अन्दर आत्मा होती है परन्तु अब जबसे हमने आपसे पढ़ा है कि कहीं कोई आत्मा नहीं है तबसे हम इसमें विश्वास नहीं करते। अब तो कहीं कोई स्वर्ग नहीं है, कहीं कोई नरक नहीं है और कहीं कोई भगवान भी नहीं है, यही आपने हमें सिखाया है।"

पादरी डर के मारे पीला पड़ गया और ज़ोर से बोला — "देखो, मैंने तुम लोगों को जो कुछ भी सिखाया था वह गलत था। भगवान है और एक अमर आत्मा भी है। पहले मैं जिनमें विश्वास नहीं करता था आज उनको मैं मानता हूॅ।"

वहॉ बैठे सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हॅस पड़े क्योंकि वे समझे कि उनका मास्टर उनको बहस करने के लिये उकसा रहा है। सो वे भी ज़ोर से चिल्लाये — "साबित कीजिये, साबित कीजिये। भगवान को

किसने देखा है और आत्मा को भी किसने देखा है?" और कमरा एक बार फिर ठहाकों से भर गया।

पादरी कुछ कहने के लिये उठा और उसने कुछ कहा भी पर सब कुछ उन ठहाकों के शोर में दब कर रह गया। वह चिल्लाता रहा — "भगवान है, आत्मा भी है, स्वर्ग भी है और नरक भी है।" परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी।

उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी उसका विश्वास कर लेगी परन्तु उसने कहा कि वह भी उसी की सिखायी हुई बातों को मानती है। और ऐसा एक पत्नी को करना भी चाहिये क्योंकि पति पत्नी के लिये भगवान से भी ऊँचा होता है।

इसको सुन कर तो वह बहुत निराश हो गया और घर घर जा कर पूछने लगा कि क्या वे भगवान में विश्वास करते थे। पर सबसे उसको एक ही जवाब मिला "हम तो उसी में विश्वास करते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

अब तो पादरी डर के मारे बिल्कुल पागल सा हो गया क्योंकि समय बीतता जा रहा था और उसको कोई एक भी आदमी भगवान में विश्वास करने वाला नहीं मिल रहा था।

वह अकेला ही एक कमरे में जा कर बैठ गया और रोने लगा। कभी कभी डर के मारे वह चिल्ला पड़ता क्योंकि उसके मरने का समय पास आता जा रहा था।

इतने में एक बच्चा आया और बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

बच्चे के ये शब्द सुनते ही पादरी में जान आ गयी। उसने तुरन्त बच्चे को गोद में उठा लिया और उतावली से उससे पूछा — "बेटा क्या तुम भगवान को मानते हो?"

बच्चा बोला — "मैं यहाँ उसी के बारे में जानने के लिये तो आया हूँ। क्या आप मुझे यहाँ का सबसे अच्छा स्कूल बतायेंगे?"

पादरी बोला — "सबसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा मास्टर तो तुम्हारे पास ही है बेटा।" यह कह कर उसने उसको अपना नाम बता दिया।

बच्चा बोला — "नहीं नहीं, मैं इस आदमी के पास नहीं जाना चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि वह भगवान को नहीं मानता, स्वर्ग और नरक को भी नहीं मानता। यहाँ तक कि अपने शरीर में रह रही आत्मा को भी वह नहीं मानता क्योंकि वह उसको देख नहीं सकता। परन्तु मैं उसको बहुत जल्दी नीचा दिखा दूँगा।"

पादरी को उस बच्चे की बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे रहा नहीं गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "तुम उसको कैसे नीचा दिखाओगे बेटा?"

बच्चा बोला — "यह तो बड़ा आसान है। मैं उससे कहूँगा कि अगर तुम ज़िन्दा हो तो तुम अपना ज़िन्दा रहना साबित करो।"

पादरी बोला — "पर बेटे वह ऐसा कैसे कर सकता है? क्योंकि सभी जानते हैं कि वे ज़िन्दा हैं पर वे उसे दिखा तो नहीं सकते क्योंकि उसको देखा नहीं जा सकता।"

इस पर बच्चा बोला — "सो अगर हमारे अन्दर ज़िन्दगी है और हम उसे केवल इसलिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह छिपी हुई है तो हमारे अन्दर आत्मा भी तो हो सकती है जिसको हम केवल इसी लिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह हमारे अन्दर इसी तरह छिपी हुई हो।"

पादरी ने जब उस बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो उसने उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और रो पड़ा क्योंकि अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी आत्मा अब सुरक्षित है।

कम से कम एक आदमी तो उसको भगवान में विश्वास रखने वाला मिला और उसने उस बच्चे को शुरू से ले कर आखीर तक की अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर बोला — "लो बेटे यह चाकू लो और इससे मेरी छाती को गोद दो और गोदते रहो जब तक तुम्हें मेरे चेहरे पर मौत का पीलापन नजर न आ जाये। फिर ध्यान से देखना जब मैं मरूँगा तो मेरे शरीर से एक ज़िन्दा चीज़ निकलेगी। उससे तुमको पता चल जायेगा कि मेरी आत्मा भगवान के पास पहुँच गयी है।

और जब तुम यह देखो तो तुम तुरन्त भाग कर मेरे स्कूल जाना और मेरे सभी शिष्यों को यह देखने के लिये बुला लाना। उनको बताना कि जो कुछ भी मैंने उनको ज़िन्दगी भर सिखाया वह सब

गलत था क्योंकि कहीं भगवान है जो पापों की सजा देता है। स्वर्ग भी है और नरक भी है और हर आदमी के पास एक अमर आत्मा भी है।"

बच्चा बोला —"मैं कोशिश करूँगा।" कह कर वह बच्चा घुटनों के बल बैठ गया। पहले उसने प्रार्थना की फिर चाकू उठाया और पादरी की छाती में मारा और तब तक मारता रहा जब तक उसकी छाती का मॉस चिथड़े चिथड़े नहीं हो गया।

परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी पादरी मरा नहीं। हालॉकि उसको दर्द बहुत था पर चौबीस घंटे पूरे होने से पहले वह नहीं मरा। आखिर उसके चेहरे पर मौत का पीलापन झलकने लगा।

उसी समय बच्चे ने देखा कि एक छोटी सी कोई ज़िन्दा चीज़, चार सफेद पंखों वाली, पादरी के शरीर से निकली और उसके सिर पर मॅडराने लगी।

वह तुरन्त उसके शिष्यों को उनके मास्टर की आत्मा दिखाने के लिये बुला लाया। उन्होंने भी उसको तब तक देखा जब तक वह उड़ कर बादलों के उस पार नहीं चली गयी।

आयरलैंड की यह सबसे पहली तितली थी और आज वहॉ सब यह जानते हैं कि तितलियों में मरे हुए लोगों की आत्मा होती है और उस रूप में दर्द सहती हुई शान्ति पाने के लिये परगेटरी में घुसने का इन्तजार करती रहती हैं।

शैतानों की कहानियॉ

4 काउन्टैस कैथलीन ओशी[20]

यह बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड में अचानक ही पुराने आयरलैंड के दो अनजान व्यापारी देखे गये। उनके बारे में न तो किसी ने पहले कभी सुना था और न किसी ने पहले कभी उनको देखा था पर वे वहॉ की भाषा बहुत अच्छी तरह बोल रहे थे।

दोनों ही की उमर करीब करीब पचास साल थी। दोनों ही बड़ी शान्ति से अपनी ज़िन्दगी बिता रहे थे। वे वहॉ पर अपनी अपनी थैलियों में रखे पीले पीले सोने के सिक्के गिनने के अलावा और कोई काम नहीं करते थे।

एक दिन उनकी मकान मालकिन ने उनसे कहा — "भलेमानसों, ऐसा कैसे है कि आप लोग इतने अमीर हैं फिर भी आप लोग कोई भला काम नहीं करते। किसी को कुछ देते नहीं हैं।"

उनमें से एक बोला — "बात तो आप ठीक कहती हैं परन्तु हम खुद किसी को दान देना नहीं चाहते क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि कोई बहाना बना कर हमको धोखा दे दे। परन्तु अगर कोई गरीब हमारा दरवाजा खटखटायेगा तो हम उसे जरूर कुछ न कुछ दे देंगे।"

[20] Countess Kathleen Oshi – a folktale of Ireland, Europe

बस फिर क्या था अगले ही दिन यह अफवाह फैल गयी कि शहर में दो अजनबी अमीर आये हैं और अपना सोना बॉटना चाहते हैं। सो उनके दरवाजे पर सोना लेने वालों की लाइन लग गयी।

उन दोनों ने शैतान के लिये लोगों की आत्माएँ खरीदनी शुरू कर दीं। एक बूढ़े की आत्मा का दाम बीस सोने के सिक्के था और एक कुँआरी लड़की की आत्मा तो बहुत ही मँहगी थी।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक काउन्टैस कैथलीन ओशी[21] रहती थी। वह बहुत सुन्दर थी और लोग उसको बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह बहुत ही दयालु थी।

जैसे ही उसने यह सब सुना कि ये दो लोग भगवान से उसकी आत्माएँ खरीद रहें हैं तो उसने अपने बटलर यानी नौकर को बुलाया और उससे पूछा — "पैट्रिक[22], मेरे खजाने में सोने के कितने सिक्के हैं?"

पैट्रिक बोला — "एक लाख।"

"और रत्न?"

पैट्रिक बोला — "वह भी उतने ही दाम के हैं।"

कैथलीन ने फिर पूछा — "और मेरी जायदाद, किले, जंगल, जमीन?"

---

[21] Countess Kathleen Oshi - Countess – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

[22] Patrick – name of the butler of the Countess

पैट्रिक बोला — "वे दोनों के दुगुने दाम के हैं।"

कैथलीन बोली — "ठीक है पैट्रिक, तुम मेरे सोने के सिक्कों के अलावा मेरा सब कुछ बेच दो और मुझे बताओ कि वह सब कितने का बिका। बस मेरा यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन छोड़ देना।"

दो दिन के बाद कैथलीन के हुक्म से सारा पैसा गरीबों में उनकी जरूरतों के अनुसार बॉट दिया गया। यह बात उन शैतानों को अच्छी नहीं लगी क्योंकि अब वे आत्माएँ नहीं खरीद पा रहे थे।

सो एक नौकर की सहायता से वे दोनों उस काउन्टैस के घर में घुस गये और उसका बाकी बचा पैसा चुरा लिया। हालॉकि काउन्टैस ने उन दोनों को रोकने की बहुत कोशिश की पर कामयाब न हो पायी।

कहते हैं कि उसने कई बार क्रास बनाने की कोशिश की परन्तु उसके हाथ जैसे बॅध गये थे और वह फिर उन गरीबों की सहायता भी न कर सकी।

करीब आठ दिन के बाद देश के पश्चिमी हिस्से से अनाज आया। पर ये आठ दिन लोगों को आठ युग की तरह दिखायी दिये। इन आठ दिनों के लिये गरीबों के लिये बहुत सारे पैसों की जरूरत थी और कैथलीन के पास अब कुछ था नहीं सो वह बहुत परेशान रही।

उसने कुछ सोचा और उन आत्माओं के व्यापारियों के पास पहुँची। उन्होंने उससे पूछा — "तुमको क्या चाहिये?"

कैथलीन बोली — "तुम लोग आत्माएँ खरीदते हो?"

वे बोले "हाँ"।

कैथलीन बोली — "देखो, मैं तुमसे एक सौदा करने आयी हूँ। मेरे पास एक आत्मा है जो बहुत कीमती है और वह मेरी आत्मा है।"

कैथलीन की यह बात सुन कर दोनों व्यापारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी मुट्ठियाँ भिंच गयीं और उनकी आँखों में चमक आ गयी। वे बड़े खुश थे कि उनको कैथलीन की आत्मा मिल रही थी।

उन्होंने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की, बोल कितना माँगती है अपनी आत्मा के लिये?"

कैथलीन बोली — "पन्द्रह लाख सोने के सिक्के।"

वे बोले "चल, दिये।" और यह कह कर उन्होंने उसके आगे एक काली मुहर लगी खाल बढ़ा दी जिस पर उसने काँपते हाथों से दस्तखत कर दिये। पैसा उसको दे दिया गया।

घर पहुँचते ही उसने पैट्रिक को बुलाया और कहा — "देखो ये पैसे लो और आठ दिन तक इनको गरीबों में थोड़ा थोड़ा बाँटो और आज के बाद अब एक भी आत्मा उन शैतानों को नहीं बेची

जायेगी।" कह कर वह एक कमरे में बन्द हो गयी और सबको यह कह दिया कि कोई आ कर उसको तंग न करे।

तीन दिन बीत गये, न तो उसने किसी को बुलाया और न वह खुद ही बाहर निकली। जब दरवाजा खोला गया तो उसकी ठंडी और अकड़ी हुई लाश मिली।

परन्तु उसकी आत्मा के सौदे को भगवान ने नहीं माना क्योंकि उसकी आत्मा ने अपनी जनता को उस तरह की गन्दी मौत से बचाया था।

आठ दिन बीत जाने के बाद तो वहॉ पर काफी खाने पीने का सामान आ गया। सब लोग खुशहाल हो गये। उधर वे आत्माओं के व्यापारी भी न जाने कहॉ चले गये परन्तु ब्लैकवाटर[23] के लोगों को अभी भी यह लगता है कि लूसीफ़र[24] ने अभी भी उनकी आत्माओं को बॉध रखा है जब तक कि वे कैथलीन की आत्मा उसे वापस नहीं कर देते।

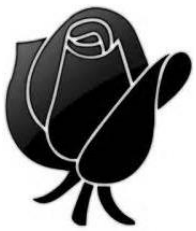

[23] Blackwater – a place in Ireland

[24] Lucifer - Lucifer word occurs only once in the Hebrew Bible. There it meant the "Morning Star". Later Christian tradition came to use the Latin word for "morning star", lucifer, as a proper name ("Lucifer") for the devil; as he was before his fall. As a result, "Lucifer" has become a by-word for Satan/the Devil in the church.

5 तीन इच्छाऐं[25]

बहुत पुरानी बात है कि एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसका नाम बिल्ली डाउसन[26] था। वह सब लोगों को बहुत तंग करता था और पूरे यूरोप में वह अपनी सुस्ती के लिये मशहूर था।

बिल्ली अपने माता पिता का अकेला बेटा था और यह सुस्ती उसको अपने माता पिता से विरासत में मिली थी। फिर उसके पिता ने उसको एक लोहार के यहॉ काम दिलवा दिया पर वह लोहार भी बिल्ली से बहुत तंग था।

कुछ सालों बाद बिल्ली बड़ा हो गया। उसकी शादी हो गयी। किस्मत से उसको उसकी पत्नी भी उसके बराबर की ही मिल गयी।

अगर वह सुस्त था तो वह भी उससे कम सुस्त नहीं थी, अगर वह उससे लड़ता था तो वह भी उससे खूब लड़ती थी। ऐसा जोड़ा पहले कभी किसी ने न देखा था और न सुना था। जल्दी ही उन दोनों की चर्चा गॉव भर में फैल गयी।

लोग उसे सुबह सुबह ही पिये हुए पाते। उसकी कमीज की बॉहें मुड़ी होतीं, उसके आगे के बटन खुले रहते। इस पल वह गा रहा होता तो अगले पल वह अपनी पत्नी से झगड़ रहा होता।

[25] Three Wishes – a folktale of Ireland, Europe

[26] Billy Dawson – name of a man

उसकी पत्नी उसके चारों तरफ चक्कर काट रही होती। उसके सिर पर कहीं एक फटा सा गन्दा सा टोप होता, पैरों में बिल्ली के पुराने स्लिपर होते, गोद में रोता हुआ बच्चा होता। कभी वह बिल्ली को खींच रही होती तो कभी उसे प्यार कर रही होती।

मन को लुभाने वाली ऐसी सुन्दर घटनाएँ उस घर में अक्सर ही देखने को मिल जातीं।

एक दिन सुबह सुबह बिल्ली अपने घर की दीवार के सामने खड़ा था और सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये।

उसकी पत्नी नीचे जमीन पर बैठी बच्चों को सँभालती उसको खाने के लिये चिल्ला रही थी। बिल्ली की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कहाँ से लाये खाना?

इतने में एक बूढ़ा दुबला पतला भिखारी एक डंडे के सहारे चलता हुआ वहाँ आया। उसकी सफेद दाढ़ी काफी नीचे तक लटक रही थी और वह बहुत भूखा दिखायी दे रहा था।

बिल्ली उसको देख कर कुछ होश में आया और उसको उसके ऊपर कुछ तरस भी आया। वह बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

भिखारी ने पलट कर कहा — "भगवान तुम्हारी मदद करे। इस बूढ़े को कुछ खाने को दे दो। तुम देख रहे हो कि मैं काम नहीं कर सकता इसी लिये मैं तुमसे माँगता हूँ।"

बिल्ली बोला — "अगर तुमको मालूम होता कि तुम किससे मॉग रहे हो तो शायद तुम्हें पता चलता कि जैसे तुम किसी डंडे से कुछ मॉग रहे हो।

मेरे घर में तो मेरे खुद के खाने को लिये कुछ नहीं है। मेरी पत्नी मुझे बुरा भला कह रही है और मेरे बच्चे उसे रो रो कर तसल्ली देने की कोशिश रहे हैं। तुम सच मानो अगर मेरे पास खाना या पैसा कुछ भी होता तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करता।"

भिखारी बोला — "अरे, तुम तो मुझसे भी बुरी हालत में हो क्योंकि तुम्हारे पास तो खिलाने पिलाने के लिये एक परिवार भी है। कम से कम मेरे ऊपर यह जिम्मेदारी तो नहीं है। मै तो अकेला ही हूॅ।"

बिल्ली बोला — "फिर भी तुम घर में आओ और मुझे बताओ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ? तुम यहॉ आग के पास बैठो। आज बड़ा बर्फीला दिन है, तुमको इस आग से थोड़ी गर्मी मिलेगी।"

बूढ़ा भिखारी घर के अन्दर आ गया और आग के पास बैठता हुआ बोला — "हॉ आज का दिन बहुत ही ठंडा है। यह आग मुझे बहुत ही अच्छी लग रही है।"

थोड़ी देर तक वह भिखारी आग के पास बैठा रहा फिर वह चलने के लिये खड़ा हो गया और बिल्ली से बोला — "तुमने मुझे खाना तो खाने के लिये दिया नहीं पर जो कुछ तुम मुझे दे सकते थे

वह तुमने मुझे दिया। इसके बदले में तुम मुझसे अपनी कोई भी तीन इच्छाऐं पूरी करवा सकते हो।"

अब सच तो यह था कि बिल्ली अपने आपको बहुत ही अक्लमन्द समझता था परन्तु ऐसे समय में तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया और वह वहीं सिर खुजलाता खड़ा रहा। उसकी समझ में यही नहीं आ रहा था कि वह उससे अपनी कौन सी तीन इच्छाऐं पूरी करवाये।

बूढ़ा बोला — "तुम जल्दी ही मॉग लो क्योंकि मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है और मैं ज़्यादा समय तक यहॉ रुक भी नहीं सकता।"

बिल्ली बोला — "अच्छा ठीक है तो सुनो। यह जो मेरे स्ले[27] का हथौड़ा तुम देख रहे हो न?

मेरी पहली इच्छा यह है कि इसको जो कोई भी अपने हाथ में उठा ले यह तब तक उसके हाथ में से न छूटे जब तक मैं न चाहूँ। और अगर वह इसको स्ले पर चलाने लगे तो यह तब तक न रुके जब तक मैं उसको रुकने को न बोलूँ।"

बिल्ली फिर बोला — "मेरी दूसरी इच्छा यह है कि मेरे पास एक आराम कुर्सी है। उस कुर्सी पर जो कोई भी बैठ जाये वह बिना मेरी इच्छा के उस पर से

[27] Sleigh – a wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by powerful dogs or horses. See its picture above

न उठ सके।

और मेरी तीसरी इच्छा यह है कि जो कुछ पैसे मैं अपने बटुए में रखूँ वह मेरे सिवा उसमें से और कोई न निकाल सके।"

ऐसी इच्छाएँ सुन कर बूढ़े को गुस्सा आ गया। वह बोला — "तुम्हारी नीयत अच्छी नहीं है। तुमने मुझसे कोई ऐसी चीज़ क्यों नहीं माँगी जो तुम्हारी यह दुनियाँ और दूसरी दुनियाँ दोनों ही सुधार देती?"

बिल्ली अपने माथे पर हाथ मारता हुआ बोला — "ओह यह तो मैं भूल ही गया था। क्या तुम मेरी एक इच्छा को बदलने दोगे? एक मौका मुझे और दो न बस एक मौका और।"

बूढ़ा बोला — "नहीं, तुम बहुत नीच हो। तुम्हारे भले दिन गुजर चुके हैं। तुम जानते ही नहीं कि अब तक तुमसे कौन बात कर रहा था।

मेरा नाम सेन्ट मोरोकी[28] है। मैंने तुमको एक मौका दिया था कि तुम अपने और अपने परिवार के लिये कुछ कर सको परन्तु तुमने कुछ ध्यान ही नहीं दिया।

अब वह सब तुम्हारी किस्मत में नहीं है। इसी लिये तुम इतने मशहूर हो। तुम अगर अब मेरे सामने भी आये तो मैं तुमको ऐसी जगह भेज दूँगा जहाँ तुम शान्ति से मर भी नहीं पाओगे।" और गुस्से में भरा वह बूढ़ा अपने पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया।

[28] Saint Moroky – name of a Saint

कुछ पल बाद जब बिल्ली को होश आया तो वह बड़ा पछताया कि उसने एक इच्छा में बहुत सारी दौलत उस बूढ़े से क्यों नहीं मॉग ली। पर अब क्या हो सकता था अब तो उसे अपनी इन तीन इच्छाओं के वरदान से ही सब कुछ हासिल करना था।

वह सोचता रहा, सोचता रहा तो उसके दिमाग में एक तरकीब आयी और उसने अपने शहर के सबसे अमीर आदमी को बुला भेजा कि वह उससे कुछ बिज़नेस करना चाहता है। जब वह आया तो उसने उसको आदर सहित अपनी आराम कुर्सी पर बिठा दिया।

अब बिल्ली सुरक्षित था क्योंकि अब वह अमीर आदमी बिना उसकी मर्जी के उस कुर्सी से उठ ही नहीं सकता था और उसको उस कुर्सी पर से उठने के लिये काफी पैसा देना पड़ा।

ऐसा उसने वहॉ के काफी अमीर लोगों के साथ किया। वहॉ के सभी लोग उससे परेशान हो गये थे। परन्तु यह सब कुछ ही दिनों तक रहा क्योंकि उसकी कुर्सी वाली बात जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी और लोगों को उसकी चालाकी का पता चल गया।

इसके बाद उसने अपनी स्ले के हथौड़े वाला वरदान का इस्तेमाल किया तो उसकी स्ले वाली बात भी चारों तरफ फैल गयी तो क्या आदमी क्या औरत, क्या बूढ़ा और क्या बच्चा सभी ने उसके घर आना छोड़ दिया।

इस तरह से उसे अपनी आराम कुर्सी से पैसे मिलने भी बन्द हो गये और उसका बटुआ भी खाली होता चला गया।

इन सब बातों के साथ साथ उसका चाल चलन भी खराब होता चला गया। घर में फिर से हर समय झगड़ा रहने लगा। हर कोई उससे नफरत करता, उसको बुरा भला कहता और उससे बचने की कोशिश करता।

एक दिन बिल्ली ऐसे ही घूम रहा था और सोच रहा था कि ऐसी दशा से कैसे छुटकारा पाया जाये कि उसने अपने आपको कुछ घनी झाड़ियों के बीच खड़ा पाया।

उसने सोचा कि जब पैसे मिलने के सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं तो शैतान से ही कुछ क्यों न कमाया जाये सो वह ज़ोर से बोला — "ओ निक[29], ओ पापी, अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम सामने आओ, मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।"

इन शब्दों के उसके मुँह से निकालने की देर थी कि एक वकील जैसा सॉवला भला आदमी उसके सामने आया। बिल्ली ने उसके पैरों की तरफ देखा तो उनमें उसे खुर दिखायी दिये। यानी कि वह शैतान ही था।

बिल्ली बोला — "नमस्ते।"

निक बोला — "नमस्ते, कहो बिल्ली क्या खबर है?"

बिल्ली बोला — "मुझे पैसे चाहिये और मैं उसके लिये सौदा करने के लिये तैयार हूँ।"

[29] Nick – another name of Satan. It is the colloquial word for Satan.

निक बोला — "पर अगर मैं तुमको बेचूँगा भी तो मुझको क्या मिलेगा?"

बिल्ली बोला — "अगर मेरी और तुम्हारी दोनों की नीलामी लगायी जाये तो देख लेना कि लोग मेरे लिये ही ज़्यादा पैसा देंगे।"

निक बोला — "खैर, छोड़ो इन बातों को। पर अगर तुम सात साल तक मेरा रहने का वायदा करो तो मैं तुमको इतना सारी दौलत दे सकता हूँ जिसके तुम लायक भी नहीं हो।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। पर पहली बात यह कि मेरे परिवार से तुम्हारा कोई लेना देना नहीं होगा। और दूसरी बात यह कि मैं पैसा नकद लूँगा।"

निक ने बिल्ली को पैसे गिन कर दे दिये। अब क्योंकि वहाँ कोई भी नहीं था इसलिये निक ने बिल्ली को कितने पैसे दिये यह तो पता नहीं चल सका।

पर निक पैसे गिनने के बाद बोला — "क्या तुम मुझे लकी पैनी नहीं दोगे?"

बिल्ली बोला — "उँह, तुम इतने अमीर हो कि तुमको उसकी जरूरत ही नहीं है। भगवान करे तुम बदकिस्मत रहो और हाँ अब तुम यहाँ से दफा हो। कोई भी तुम्हारा साथ पसन्द नहीं करता। अपने साथ से तो तुमने मुझे भी बिगाड़ दिया है।"

निक बोला — "बिल्ली क्या यही तुम्हारी वफादारी है?"

"अच्छा अच्छा अब तुम यहॉ से दफा हो जाओ।" कहता हुआ बिल्ली एक तरफ को चला गया और निक भी यह सुन कर दूसरी तरफ चला गया।

अब क्या था कुछ ही समय में बिल्ली एक बहुत बड़ा आदमी बन गया। जो लोग पहले कभी उससे बचते फिरते थे अब उसके दरवाजे पर आ कर नाक रगड़ते थे। इस बात को सोच कर ही वह मन ही मन बहुत खुश होता था।

पर इतना अमीर हो जाने के बाद भी उसके रहने सहने के ढंग में कोई फर्क नहीं आया था। तीन साल बाद उसके पास गाड़ी थी, शिकारी थे। वह अब जुआ भी खेलने लग गया था। घोड़ों पर दॉव भी लगाने लग गया था।

पर इन सबको एक दिन तो जाना ही था। दो साल बाद यह सब धीरे धीरे कम होना शुरू हो गया। लोग उसके पास से हटने लगे। शिकारी, गाड़ी सभी कुछ खत्म होने लगा। बटुए में पैसे कम रहने लगे और फिर एक दिन ऐसा आया जब उसको फिर से अपना चमड़े का ऐप्रन पहन कर हथौड़ा उठा लेना पड़ा।

कोई भी हालात उसको कुछ भी नहीं सिखा पा रहे थे सो वह अपने पुराने काम पर वापस आ गया था। यानी पत्नी से लड़ाई पर वापस आ गया था।

एक दिन वे सात साल भी खत्म हो गये और एक सुबह बिल्ली और उसका परिवार फिर से भूखा बैठा हुआ था। उसकी पत्नी उस पर चिल्ला रही थी और बच्चे भूखे रो रहे थे।

वह यह सोच ही रहा था कि किस तरह वह अपने किसी पड़ोसी को धोखा दे कर सुबह के नाश्ते का इन्तजाम करे कि निक अपना सौदा पूरा करने उसके सामने आ खड़ा हुआ।

निक बोला — "नमस्ते बिल्ली।"

बिल्ली बोला — "ओ शैतान आओ आओ। पर मानना पड़ेगा तुम्हारी याद बहुत अच्छी है।"

निक बोला — "भाई, ईमानदारों के बीच सौदा तो सौदा ही होता है। जब मैं ईमानदारों की बात करता हूँ तो उससे मेरा मतलब है अपने आपसे और तुमसे।"

बिल्ली बोला — "निक, तुम मेरे साथ कोई गन्दी हरकत नहीं करोगे। तुम मुझ जैसे गिरे हुए आदमी के ऊपर और ज़्यादा बोझा नहीं डालोगे। तुम जानते हो कि इस तरह नीचे आने का क्या मतलब होता है इसलिये अच्छा हो अगर तुम यहाँ से दफा हो जाओ।"

निक बोला — "इतना नाराज होने से कोई फायदा नहीं बिल्ली। तुम्हारी ये चालाकियाँ किसी और को धोखा देने के लिये तो ठीक हैं परन्तु मुझे तुम इन चालाकियों से नहीं बहका सकते। तुमको मेरे साथ दूसरे देशों में भी जाना होगा।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। तुम यह स्ले वाला हथौड़ा लो और ज़रा मेरे इस घोड़े की नाल[30] बना कर तैयार करो मैं तब तक तैयार हो कर और अपनी पत्नी और बच्चों से मिल कर आता हूँ।"

यह कह कर बिल्ली कनखियों से उसकी तरफ देखता हुआ बाहर की तरफ चला गया। वह अपने मन में कहता जा रहा था "मैंने अच्छे अच्छों को सीधा कर दिया है तुम क्या चीज़ हो निक जी।"

इधर निक ने जैसे ही वह हथौड़ा हाथ में पकड़ा तो वह तो उस हथौड़े से जैसे चिपक ही गया। अब वह उसे अपने आप छोड़ना चाह कर भी नहीं छोड़ पा रहा था।

उधर बिल्ली एक महीने के बाद चारों तरफ घूम घाम कर आया तो उसने देखा कि शैतान गुस्से में भरा पसीने में तर बतर उसका स्ले का हथौड़ा चलाये ही जा रहा है चलाये ही जा रहा है।

बिल्ली ने बड़ी शान्ति से उससे कहा — "गुड मौर्निंग निक।"

निक हथौड़ा चलाते हुए बोला — "तुम तो बड़े ज़ोर का धोखा देने वाले निकले। तुमको तो धोखेबाजों का राजा कहा जाना चाहिये।"

बिल्ली फिर बोला — "निक तुम बहुत अच्छे हो। पर यह तो तुम अपनी मर्जी से बैठे थे। मैंने तुमको खाली हथौड़ा चलाने के लिये तो नहीं कहा था। फिर मुझे काम करने वाले लोग पसन्द हैं

[30] Translated for the word "Horseshoe"

इसलिये तुम अपना काम जारी रखो। और फिर तुमको काम करने का मौका ही कहॉ मिलता होगा। आज मिला है तो थोड़ा काम कर लो।"

निक बोला — "बिल्ली थोड़ा तरस खाओ। तुम तो गिरते आदमी के ऊपर और बोझा नहीं डालते हो। तुम तो बहुत ही दयावान हो। बिल्ली मुझे इस हथौड़े से छुड़ाओ।"

बिल्ली बोला — "अच्छा तो मुझे उतना ही पैसा सात साल के लिये फिर से दे दो जितना तुमने मुझे पहले दिया था।"

"हॉ हॉ जो भी तुम कहो।"

बिल्ली ने निक को छोड़ दिया और निक उसको फिर से पैसे दे कर चला गया। अब बिल्ली फिर से अमीर हो गया और लोग फिर से उसके पास आने लगे।

सात साल गुजरते कितनी देर लगती है। सात साल शुरू हुए और चले गये। बिल्ली का सारा पैसा फिर खतम हो गया था। सात साल बाद बिल्ली फिर से गरीब हो गया था।

पर इतने समय ने उसको कम से कम यह सिखा दिया था कि आदमी को केवल अपनी मेहनत पर ही भरोसा करना चाहिये केवल दिये हुए पैसे पर नहीं। सो उसने एक नौकरी कर ली।

पर एक सुबह फिर पति पत्नी में फिर से झगड़ा हो गया और उन दोनों में खूब ज़ोर ज़ोर से लड़ाई होने लगी कि शैतान ने सोचा कि पति पत्नी की यह लड़ाई तो ठीक नहीं है सो वह वहॉ पहुँचा

और बिल्ली की पत्नी की तरफ से बिल्ली से लड़ा और बिल्ली को एक घूँसा मार कर गिरा दिया।

जब पत्नी ने यह देखा कि शैतान ने उसके पति को गिरा दिया तो उसने शैतान को ज़ोर से एक डंडा मारा जिससे शैतान नीचे गिर गया।

पत्नी ने शैतान को ज़ोर की डॉट लगायी तो वह पीछे की तरफ भागा। पत्नी आगे बढ़ती आयी और शैतान पीछे हटता चला गया और पीछे पीछे हटते हटते आखिर वह बिल्ली की आराम कुर्सी में जा कर गिर गया।

बिल्ली ने जब शैतान को अपनी आराम कुर्सी में गिरे हुए देखा तो समझ गया कि अब वह और उसका दुश्मन दोनों सुरक्षित हैं।

वह अपनी पत्नी के पास आया और प्यार से बोला — "क्यों नाराज होती हो प्रिये। मुझे बेरहमी बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती। तुम ज़रा जा कर आग में चिमटा गर्म कर के ले आओ।"

यह सुन कर शैतान ने उठने की कोशिश की पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो उस कुर्सी से उठ ही नहीं पा रहा है।

बिल्ली बोला — "क्या बात है निक, तुम्हारी कुछ तबियत खराब लगती है।"

निक ने एक बार फिर उठने की कोशिश की परन्तु वह तो जैसे उस कुर्सी से चिपक सा गया था।

बिल्ली फिर बोला — "मुझे खुशी है कि तुम यहॉ आ गये। मुझे दूर देशों की यात्रा का बड़ा शौक है। तुम उठो तो ज़रा घूमने चलते हैं।

तुमको तो मालूम ही है कि ईमानदारों के बीच में सौदा तो सौदा ही होता है और ईमानदारों का मतलब होता है हम और तुम। अरे हॉ जूडी[31], चिमटा गर्म हो गया क्या?"

इस समय शैतान की हालत देखने लायक थी पर वह सॅभल कर बोला — "देखो बिल्ली मैंने पहले भी तुहारी सहायता की है और आज भी करने को तैयार हूॅ। चलो मैं तुमको सात साल और देता हूॅ।" पर बिल्ली को तो जैसे कुछ सुनायी ही नहीं दे रहा था।

शैतान फिर बोला — "बिल्ली देखो मैंने हमेशा ही तुम्हारे परिवार की सहायता की है।"

बिल्ली बीच में ही बोला — "बस बस रहने दो और अब तुम अपनी नाक बनवाने के लिये तैयार हो जाओ।"

निक बोला — "मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारे बच्चों का पालन पोषण करूॅगा और उनको दुनियॉ में सबसे बड़ा आदमी बनाऊॅगा चाहे वे बनना चाहें या न चाहें।"

बिल्ली बोला — "और मैं भी तुम्हारी नाक के साथ यही करूॅगा।" कहते हुए अपने हाथ में लिया हुआ गर्म चिमटा उसने उसकी नाक से छुआ दिया और उसकी नाक खींच ली।

[31] Judy – name of Billy's wife

चिमटा उसने अपनी पत्नी को दे दिया और उसकी नाक उसने दीवार पर पॉच फुट ऊॅची जगह पर चिपका कर उस पर अपना टोप टॉग दिया।

फिर वह बोला — "अब तुम मुझे उतने ही पैसे दो जितने तुमने मुझे पहले दिये थे और दफा हो जाओ।"

निक बोला — "ठीक है।" और तुरन्त ही उतने ही पैसे बिल्ली के पैरों के पास आ गिरे जितने उसने उसको पहले दिये थे।

बिल्ली ने पैसे उठाये और निक को छोड़ दिया। निक चला गया। बिल्ली एक बार फिर सात साल के लिये अमीर हो गया था और सात साल के बाद फिर गरीब हो गया।

ऐसी ही हालत में फिर एक दिन सुबह बिल्ली खड़ा सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये कि शैतान फिर उसके पास आया।

अबकी बार शैतान यह सोच रहा था कि वह बिल्ली के सामने कैसे जाये सो उसने एक सोने के सिक्के का रूप रखा और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहॉ बिल्ली उसको आसानी से देख सकता था। वह इस ताक में था कि बस बिल्ली एक बार मुझे उठा ले फिर देखता हूॅ मैं उसको।

बिल्ली ने उसे देखा और खुशी खुशी उठा कर उसे अपने बटुए में रख लिया। बटुए में घुसते ही शैतान एक ज़ोर की हॅसी हॅसते हुए बोला — "ओह बिल्ली आखिर आज मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया।

अपने सामने पड़ी चीज़ ज़रा सोच समझ कर उठाया करो। इतना लालच भी किस काम का।"

बिल्ली ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया और बोला — "अरे बदकिस्मत, तो यह तुम हो? तुम हमेशा ही मेरे जाल में फॅसने के लिये क्यों तैयार बैठे रहते हो?"

शैतान ने बिल्ली के बटुए में से निकलने की लाख कोशिश की पर सब बेकार। निक ने सोचा कि आज वह बैठे बिठाये फिर बिल्ली के जाल में कहॉ से फॅस गया।

निक फिर बोला — "बिल्ली अब तो हम एक दूसरे को अच्छी तरह से जान गये हैं। चलो मैं तुमको सात साल और उतना ही पैसा और दूॅगा। मुझे यहॉ से निकालो।"

बिल्ली बोला — "आराम से आराम से, निक आराम से। निक तुम्हें मेरे उस स्ले वाले हथौड़े का वजन तो याद होगा। तुम्हारे लिये उतना ही काफी है।"

निक बोला — "मैं मानता हूॅ कि मैं तुम्हारी टक्कर का नहीं हूॅ। तुम मुझे छोड़ दो मैं तुम्हें दोगुना पैसा दूॅगा। मैं सिक्का बन कर तुमसे तो केवल मजाक कर रहा था।"

बिल्ली बोला — "तो मैं भी तो कुछ मजाक कर लूॅ न।"

निक बोला — "मैं तुम्हारे सामने एक सलाह रखता हूॅ।"

बिल्ली बोला — "कुछ नहीं। मैं तुम्हारी कोई सलाह नहीं सुनने वाला।"

इस बार बिल्ली की पत्नी बोली — "इस पापी की बात भी एक बार सुन लो न कि यह क्या कहना चाहता है।"

शैतान बोला — "तुम जितने चाहोगे मैं तुम्हें उतने पैसे दूँगा, बस इस बार तुम मुझे आजाद कर दो।"

बिल्ली बोला — "तुम मुझे पिछली बार से दोगुने पैसे दे दो और दफा हो जाओ।"

तुरन्त ही उसके सामने सोने के चमकते सिक्कों का ढेर लग गया। बिल्ली ने अपना बटुआ खोला, सोने के वे चमकते सिक्के उसमें डाले और निक को आजाद कर दिया।

बिल्ली की पुरानी आदतें फिर से लौट आयीं। उसके दो लड़के थे। उनमें से एक को विरासत में उसी की आदतें मिली थीं, यहाँ तक कि नाम भी।

उसके दूसरे बेटे का नाम जेम्स था। वह बहुत ईमानदार और मेहनती लड़का था। वह अपने पिता को छोड़ गया और उसने अपनी मेहनत से खूब नाम कमाया, खूब पैसा कमाया और फिर कैसिल डाउसन[32] नाम का शहर बसाया।

और फिर एक दिन बिल्ली मर गया। वैसे तो जब कोई आदमी मर जाता है तो उसकी ज़िन्दगी की कहानी उसी के साथ ही खत्म हो जाती है पर बिल्ली के बारे में ऐसा नहीं है। उसकी कहानी आगे भी बढ़ी सो अब हम पढ़ते हैं उसकी आगे की कहानी। X X X X X

[32] Castle Dawson – name of a city

जैसे ही बिल्ली मरा वह सेन्ट मोरोकी के पास गया। यह वही सेन्ट था जिसने बिल्ली को तीन इच्छाओं का वरदान दिया था। वहॉ जा कर उसने धीरे से उसका दरवाजा खटखटाया। सेन्ट मोरोकी ने दरवाजा खोला।

बिल्ली धीरे से बोला — "भगवान आपकी इज़्ज़त बनाये रखे।"

सेन्ट मोरोकी बोले — "जाओ जाओ, तुम्हारे जैसे गरीब आदमी के लिये यहॉ कोई जगह नहीं है।"

बिल्ली बहुत थक गया था सो उसको अब आराम चाहिये था। वह चलते चलते एक काले फाटक पर पहुँचा और उसे खटखटाया तो उससे कहा गया कि जब वह अपना नाम बतायेगा तभी उसे अन्दर आने की इजाज़त मिल पायेगी।

बिल्ली बोला — "बिल्ली डाउसन।"

चौकीदार ने अपने साथी से कहा — "तुरन्त जाओ और मालिक को खबर करो कि वह जिससे इतना डरते हैं वही उनके दरवाजे पर खड़ा है।

बिल्ली का पुराना साथी जल्दी जल्दी बाहर निकला और चिल्लाया — "उसको अन्दर मत घुसने देना। फाटक पर ताला लगा दो। क्योंकि अगर वह अन्दर आ गया तो मैं खतरे में पड़ जाऊँगा। और बल्कि फिर इस घर में कोई और भी नहीं बचेगा।"

फिर वह बिल्ली से बोला — "जाओ जाओ, मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। तुम यहाँ अन्दर नहीं आ पाओगे।"

बिल्ली मुस्कुरा कर शैतान से बोला — "ओह तो तुम यहाँ रहते हो। तुम मुझसे डरते हो?"

तुरन्त ही उस शैतान ने बिल्ली की नाक नोच ली और बिल्ली को ऐसा लगा जैसे उसकी नाक उसी लाल गर्म चिमटे से पकड़ ली गयी हो जैसे लाल चिमटे से उसने एक बार निक की नाक पकड़ी थी।

उसके बाद बिल्ली वहाँ से चला तो गया परन्तु हमेशा उसको यही लगता रहा कि उसकी नाक बराबर जल रही है। गर्मी हो या सर्दी, दिन हो या रात, और वह आज तक जल रही है। और उसकी वजह से तभी से वह तड़पता सा इधर से उधर घूमता फिर रहा है।

उसकी दाढ़ी बढ़ कर चिपक गयी है। अपनी नाक को ठंडा करने के लिये आजकल वह भले यात्रियों की नाक लेने के लिये रात को उनको उनके रास्तों से भटका देता है पर अभी तक वह किसी की नाक नहीं ले पाया है।

बच्चों तुम अपनी नाक संभाल कर रखना कभी तुम कहीं रास्ता भटक जाओ और वह तुम्हारी नाक ले कर रफूचक्कर हो जाये।

राजाओं, रानियों, राजकुमारियों और डाकुओं की कहानियॉ

6 बारह जंगली हंस[33]

एक बार आयरलैंड में एक राजा और रानी थे। उनके बारह बेटे थे परन्तु फिर भी वे दुखी थे क्योंकि उनके कोई बेटी नहीं थी।

ऐसा अक्सर होता है कि जो कुछ हमारे पास होता है हम उसकी तो परवाह करते नहीं हैं और जो नहीं होता उसी की इच्छा करते हैं। ऐसा ही कुछ इस रानी के साथ भी था। वह एक लड़की के लिये बहुत बेचैन थी।

एक दिन जाड़ों के मौसम में जब सब जगह बर्फ ही बर्फ फैली हुई थी रानी ने एक ताजा मरा हुआ बछड़ा और उसके बराबर में बैठा एक रैवन[34] पक्षी देखा तो उसके मन में एक इच्छा जागी और वह कह उठी — "काश मेरे एक बेटी होती जिसका रंग बर्फ जैसा सफेद होता, उसके गाल इस बछड़े के खून की तरह लाल होते और उसके बाल इस रैवन की तरह काले होते।"

---

[33] Twelve Wild Swans – a folktale of Ireland, Europe
This is very popular story of Europe, but is not limited to there. It is heard and told in several countries in various flavors. Read all stories in "Chhah Hanson Jaisi Kahanaiyan" in Hindi available from hindifolktales@gmail.com .

[34] Raven is a crow-like bird. See its picture above. Although Raven is a worldwide famous bird still it is most popular and important bird of Native Indians in America and Canada. Read his tales published in Hindi in two books, "Raven Ki Lok kathayen-1" by Sushma Gupta published by Indra publishers, and "Raven Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta published by Prabhat Prakashan. There is one more book "Raven Ki Lok Kathayen-3" available from hindifolktales@gmail.com

पर जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले कि वह डर के मारे कॉप गयी। उसने अपने सामने एक बहुत ही बूढ़ी औरत को खड़े देखा।

वह औरत बोली — "बेटी, ऐसी इच्छा को अपने मुँह से निकाल कर तुमने अच्छा नहीं किया और अब तुम इसकी सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाओ क्योंकि तुम्हारी यह इच्छा पूरी की जा चुकी है।

जैसी बेटी की तुमने इच्छा की है वैसी ही बेटी अब तुम्हारे घर में जन्म लेगी। परन्तु जिस समय वह जन्म लेगी उसी समय तुम अपने दूसरे बच्चों को खो दोगी।" यह कह कर वह औरत तो गायब हो गयी और रानी वहीं की वहीं बुत सी बनी खड़ी रह गयी।

उस बुढ़िया ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। समय आने पर उसने वैसी ही एक बेटी को जन्म दिया जैसी बेटी की उसने इच्छा की थी।

हालॉकि बेटी के आने के समय उसने अपने बारहों बेटों को एक कमरे में बिठा कर उन पर कड़ा पहरा लगा दिया पर जब उसके घर बेटी आयी तो पहरेदारों ने बाहर पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी।

उन्होंने बाहर देखा तो वहॉ उनको बारह हंस एक के बाद एक खुली खिड़की से बाहर जाते और उड़ते दिखायी दिये। वे सब तुरन्त ही जंगल की ओर उड़ गये और गायब हो गये।

राजा को अपने बेटों के इस तरीके से गायब हो जाने का बहुत ही ज़्यादा अफसोस हुआ। उसको अपनी पत्नी पर शायद और भी ज़्यादा गुस्सा आता अगर उसे यह पता चल जाता कि यह सब रानी की इच्छा का फल था।

राजकुमारी बहुत सुन्दर थी और सबकी बहुत प्यारी थी। जब वह बारह साल की हुई तो बहुत उदास और अकेली रहने लगी। उसने अपने उन भाइयों के बारे में पूछना शुरू कर दिया था जिनके लिये वह सोचती थी कि वे मर चुके थे।

रानी को यह भेद छिपाना बहुत मुश्किल हो गया था क्योंकि राजकुमारी एक के बाद एक सवाल पूछती ही जाती थी। अन्त में उसे अपनी बेटी को सब कुछ सच सच बताना ही पड़ा।

राजकुमारी बोली — "मॉ, मेरी ही वजह से मेरे भाई जंगली हंस बन कर तकलीफें उठा रहे हैं। मैं आज ही उनको ढूँढने जाती हूँ और फिर से उनको राजकुमारों के रूप में लाने की कोशिश करती हूँ।" राजा और रानी दोनों ने उसको रोकने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं रुकी।

अगली रात वह महल से निकल पड़ी और जंगल की ओर चल दी। उसने साथ में रास्ते मे खाने के लिये कुछ केक, मेवा, फल और मीठे वाले केंकड़े ले लिये।

चलते चलते अगले दिन शाम को उसको लकड़ी का एक घर दिखायी दिया। उस घर के चारों तरफ बागीचा था जिसमें सुन्दर सुन्दर फूल लगे थे। वह उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर उसने एक खाने की मेज लगी देखी जिस पर बारह प्लेटें रखी थीं, बारह चम्मच रखे थे, बारह छुरी और कॉटे रखे थे। वहॉ केक थी, मुर्गा था और फल भी थे। उसी कमरे में एक तरफ आग जल रही थी। बराबर में एक दूसरा कमरा था जिसमें बारह पलंग पड़े थे।

अभी वह यह सब देख ही रही थी कि इतने में उसको पैरों की आवाज सुनायी दी और उसने देखा कि वहॉ बारह नौजवान चले आ रहे हैं। जैसे ही उन्होंने इस लड़की को देखा तो उनके चेहरों पर उदासी छा गयी।

उनमें से सबसे बड़ा नौजवान बोला — "ओह किसकी बदकिस्मती से तुम यहॉ आयी हो? क्योंकि केवल एक लड़की की वजह से ही हम अपने पिता के घर से निकाले गये हैं और अब हम सारा दिन हंसों के रूप में यहॉ रहते हैं।

इस बात को बारह साल बीत गये और हमने तभी यह कसम खायी थी कि हमारी ऑखों के सामने जो भी पहली लड़की आयेगी हम उसे जान से मार डालेंगे।

और अब यह बड़े अफसोस की बात है कि आज तुम जैसी भोली भाली और सुन्दर लड़की हमारे सामने आ गयी है। पर क्या करें हमें अपनी कसम तो पूरी करनी ही पड़ेगी।"

राजकुमारी बोली — "मुझे मारिये मत। मैं ही आप लोगों की वह एकलौती बहिन हूँ जिसकी वजह से आपको महल से निकलना पड़ा। कल से पहले मुझे इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था।

मैं अपने माता पिता के मना करने पर भी आप लोगों को ढूँढने और आप लोगों के लिये कुछ करने निकली हूँ, अगर मैं कुछ कर पाऊँ तो।"

यह सुन कर बारहों नौजवानों की मुट्ठियाँ भिंच गयी और उनके मुँह से निकल पड़ा — "हमारी कसम को आग लगे पर अब हम क्या करें?"

तभी एक बुढ़िया उस मकान के अन्दर घुसी और बोली — "मैं बताती हूँ कि तुम लोग क्या करो। सबसे पहले तो अपनी कसम तोड़ो जिसको तुम्हें लेना ही नहीं चाहिये था।

अगर तुम लोगों ने इस लड़की को और ज़्यादा कुछ कहा तो मैं तुम लोगों को पेड़ के तनों में बदल दूँगी। पर मैं तुम लोगों का भला चाहने वाली हूँ। यह लड़की भी तो तुम लोगों को इस शाप से आजाद कराने ही आयी है।"

फिर उसने उस लड़की से कहा — "बेटी, अब तुम अपने भाइयों के आजाद होने का तरीका सुनो। इस जंगल में बाहर की

तरफ जो कपास लगी है वह तुम अपने हाथ से इकट्ठा कर के उसको धुनो, कातो और उसके धागे से बारह कमीजें बनाओ।

पर इस सबके बीच अगर तुम एक बार भी बोलीं, हॅसी या रोयी तो तुम्हारे ये भाई हमेशा के लिये हंस बने रह जायेंगे। यह काम पॉच साल में खत्म हो जाना चाहिये। और राजकुमारों तब तक तुम लोग अपनी बहिन की देखभाल करो।"

इतना कह कर वह बुढ़िया गायब हो गयी और भाई लोग यह सोचने लगे कि उनमें से सबसे पहले कौन अपनी बहिन का धन्यवाद करे।

तीन साल तक राजकुमारी कपास चुनने, उसे धुनने कातने और उसकी कमीजें बनाने में लगी रही। उसने तीन साल में आठ कमीजें बना लीं थीं। इस बीच वह बेचारी न हॅसी, न बोली और न रोयी।

एक दिन वह सुबह के समय बगीचे में बैठी सूत कात रही थी कि एक कुत्ता आया और उसके कन्धों पर अपने पंजे रख कर खड़ा हो गया। फिर उसने राजकुमारी का माथा चाटा और बाल भी चाटे।

इतने में उसे एक राजकुमार आता दिखायी दिया। उसने इस तरह अचानक वहॉ आने के लये राजकुमारी से कई बार माफ़ी मॉगी। फिर उसने उससे बातें करने की कई बार कोशिश की परन्तु राजकुमारी कुछ नहीं बोली।

इधर राजकुमार उसकी इन सब बातों से इतना मोहित हुआ कि वह उससे प्यार करने लगा। उसने उसको बताया कि वह एक देश का राजकुमार था और उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता था।

इधर राजकुमारी भी उसको प्यार करने लगी थी। हालॉकि कई बातों में उसको ना में सिर हिलाना पड़ा परन्तु अन्त में उसने हॉ में सिर हिला दिया और अपना हाथ राजकुमार के हाथ में दे दिया।

राजकुमारी को मालूम था कि उसके भाई और परी उसका पता लगा ही लेंगे सो जाने से पहले उसने अपनी रुई ली, आठों कमीजें लीं, और राजकुमार के साथ उसके घोड़े पर बैठ कर उसके साथ चल दी।

राजकुमार राजकुमारी को अपने घर ले तो जा रहा था परन्तु उसको अपनी सौतेली मॉ से डर लग रहा था कि कहीं उसने उसको स्वीकार नहीं किया तो। खैर, घर जा कर बड़ी धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गयी।

सौतेली मॉ इस सबसे बिल्कुल भी खुश नहीं थी। उसको लग रहा था कि वह लड़की यकीनन ही जंगल के किसी लकड़हारे की बेटी थी इसलिये वह उसको बहुत परेशान करती थी परन्तु राजकुमार अपनी रानी को बहुत प्यार करता था।

समय आने पर छोटी रानी ने एक बेटे को जन्म दिया तो राजा को बहुत ही खुशी हुई परन्तु सौतेली मॉ इस बात से बहुत ही ज़्यादा नाखुश थी।

वह यह सोच ही रही थी कि वह उस बच्चे का क्या करे कि इतने में उसे बगीचे में एक भेड़िया दिखायी दिया। बस उसको समझ में आ गया कि उसको क्या करना है। उसने तुरन्त ही सोती हुई छोटी रानी के पास से बच्चे को उठाया और उसे भेड़िये की तरफ फेंक दिया।

भेड़िये ने भी तुरन्त ही बच्चे को अपने मुँह में लपक लिया और बगीचे को पार करता हुआ जंगल की तरफ भाग गया। इधर रानी ने अपनी उँगली चीर कर कुछ खून निकाला और छोटी रानी के मुँह पर लगा दिया।

कुछ देर बाद राजकुमार शिकार से वापस लौटा तो बड़ी रानी ने उसके सामने झूठे ऑसू बहा कर उसे बताया कि छोटी रानी ने अपने बच्चे को खा लिया है और बच्चे का खून अभी भी उसके मुँह पर लगा है। और यह कह कर उसने छोटी रानी का मुँह भी राजकुमार को दिखा दिया।

राजकुमार यह सब देख सुन कर बहुत दुखी हुआ। इधर छोटी रानी बेचारी न कुछ बोल सकती थी और न रो सकती थी।
राजकुमार ने सब लोगों को यही बताया कि छोटी रानी बच्चे को लेकर खिड़की के पास खड़ी थी, बच्चा उसके हाथों से छूट गया और एक भेड़िया उसको ले भागा।

परन्तु बड़ी रानी यह सब कहने के बाद सभी लोगों से छिपे रूप से यह भी कह देती थी कि यह सब गलत था और सही वही था कि वह अपने बच्चे को खा गयी थी।

काफी समय तक छोटी रानी दुख में डूबी रही क्योंकि एक तो उसका बच्चा मर गया था और दूसरे राजकुमार भी अब उससे कुछ खिंचा खिंचा रहता था। पर न वह कुछ बोली और न रोयी। वह केवल कमीजें बनाने में ही लगी रही।

अक्सर ही वह बारह हंसों को अपनी खिड़की के आस पास उड़ते देखती। धीरे धीरे पॉचवॉ साल भी खत्म होने को आया। उसकी ग्यारह कमीजें खत्म हो चुकी थीं और बारहवीं कमीज की केवल एक आस्तीन रह गयी थी। उसी समय उसने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया।

अबकी बार राजकुमार ने खुद उसके कमरे की पहरेदारी करने का निश्चय किया पर बड़ी रानी ने फिर भी किसी तरह उस बच्ची को भी छोटी रानी के पास से उठवा लिया।

वह उसको मारने ही वाली थी कि उसको फिर से एक भेड़िया बगीचे में दिखायी दे गया। बस उसने वह बच्ची भी उस भेड़िये की तरफ फेंक दी।

भेड़िये ने उसको भी तुरन्त ही अपने मुॅह में दबोच लिया और बगीचा पार कर के जंगल की तरफ भाग गया। रानी ने सोती हुई

रानी के मुँह पर फिर खून लगा दिया और शोर मचा दिया कि छोटी रानी ने अपनी बच्ची को खा लिया।

घर के सभी लोग दौड़े चले आये और उन्होंने देखा कि बच्ची अपने बिस्तर पर नहीं है और छोटी रानी के मुँह पर खून लगा है।

बड़ी रानी सोचती थी कि इन दो घटनाओं के बाद छोटी रानी शायद इस दुख को नहीं सँभाल पायेगी और वह मर जायेगी।

परन्तु छोटी रानी तो इस समय ऐसी हालत में थी कि न तो उसके पास सोचने का समय था, न प्रार्थना करने का, न रोने का, न हँसने का और न ही अपनी सफाई देने का। वह तो बस अपनी बारहवीं कमीज की आस्तीन पूरी करने में लगी हुई थी।

राजकुमार ने अपने घर वालों से कई बार कहा कि वह छोटी रानी को जंगल में वहीं छोड़ आता है जहाँ से वह उसको लाया था पर बड़ी रानी ने उसकी एक न सुनी और दरबारियों की सहायता से उसको उसी दिन तीन बजे जला कर मार देने का फैसला सुना दिया।

छोटी रानी के जलाने का समय जब पास आ गया तो राजकुमार महल के किसी दूसरे हिस्से में चला गया क्योंकि इस सबसे वह बहुत ही दुखी था और अपनी प्रिय रानी को इस तरह मरते नहीं देख सकता था। पर वह कुछ कर भी नहीं सकता था।

कुछ ही देर में छोटी रानी को जलाने वाले आ पहुँचे। वे उसको उस जगह पर ले गये जहाँ उसको जलाया जाना था। छोटी रानी ने

सारी कमीजें अपने साथ ले लीं। जाते समय भी वह आखिरी कमीज में कुछ काम करती जा रही थी।

जब वे लोग उसको खम्भे से बॉध रहे थे तभी उसने आखिरी कमीज में आखिरी टॉका लगाया और एक ऑसू उसकी ऑख से कमीज पर गिर गया।

वह चिल्ला पड़ी — "मैं बेकुसूर हूॅ। मेरे पति को बुलाओ।"

केवल एक आदमी को छोड़ कर सभी ने अपने हाथ रोक लिये पर उस एक आदमी ने उन लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी।

सभी आश्चर्यचकित रह गये जब सबने देखा कि कहीं से बारह हंस उड़ते हुए आये और उन्होंने अपने पंखों की फड़फड़ाहट से आग बुझा दी और छोटी रानी के चारों तरफ खड़े हो गये।

तुरन्त ही छोटी रानी ने सबके ऊपर एक एक कमीज डाल दी और पलक झपकते ही वे बारहों हंस सुन्दर राजकुमार बन गये। उन्होंने तुरन्त ही अपनी बहिन को खोल दिया। सबसे बड़े भाई ने आग लगाने वाले को एक झटके में ही मार दिया।

इतने में छोटी रानी का पति राजकुमार भी आ गया। उन सबके बीच एक बहुत ही सुन्दर स्त्री प्रगट हुई। उसकी गोद में एक चॉद सी बेटी थी और उसकी एक हाथ की उॅगली पकड़े एक छोटा सा सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

उसने उन सबको पूरी कहानी सुनायी और बताया कि भेड़िये के रूप में वही उन दोनों बच्चों को ले गयी थी। उसने बच्चों को उनके माता पिता को सौंप दिया और गायब हो गयी।

राजकुमार अपनी छोटी रानी और अपने बच्चों के साथ खुशी खुशी रहने लगा और वे बारह राजकुमार भी अपने माता पिता के पास वापस चले गये।

इस तरह वह छोटी बहिन जिसकी वजह से उसके भाई हंस बन कर घर छोड़ कर गये थे उनको फिर से राजकुमार के रूप में वापस ले आयी।

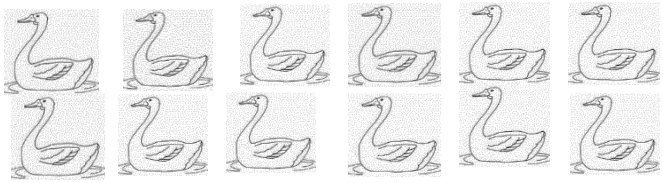

7 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ[35]

एक समय की बात है कि एक गरीब विधवा अपनी एक सुन्दर सी बेटी के साथ रहती थी। उसकी बेटी थी तो दिन के उजाले जैसी सुन्दर पर वह आलसी बहुत थी जब कि वह स्त्री खुद बहुत ही मेहनती थी।

वह स्त्री हमेशा यही चाहती थी कि उसकी बेटी भी उसी की तरह से मेहनती बने परन्तु सब बेकार। उसके मुँह से तो शब्द भी इतनी मुश्किल से निकलते थे मानो उनको भी निकलने में आलस आ रहा हो।

एक दिन वह स्त्री अपनी बेटी को उसके आलसी होने पर डॉट रही थी कि उधर से एक राजकुमार अपने घोड़े पर सवार निकला। वह बोला — "लगता है मॉ जी कि आपके घर में कोई खराब बच्चा है जो जिसको आप इतना डॉट रहीं हैं नहीं तो इतनी सुन्दर लड़की को तो कोई इस तरह नहीं डॉट सकता।"

स्त्री बोली — "योर मैजेस्टी, बिल्कुल नहीं। मैं तो बल्कि इस लड़की को इतना ज़्यादा काम करने से मना करने की कोशिश कर रही थी।

---

[35] A Lazy Girl and Her Aunts – a folktale from Ireland, Europe.
This story is similar to Russian folktale Rumplestiltuskin. Read this and other Russian folktales in the Book "Roos Ki Lok Kathayen-1" in Hindi and such more stories in Hindi in "Billa Aur Chuhiya Jaisi Kahaniyan". Both are available from : hindifolktales@gmail.com

आप शायद विश्वास नहीं करेंगे कि यह एक दिन में तीन पौंड तक रुई कात लेती है, अगले दिन उस सूत का कपड़ा बुन लेती है और तीसरे दिन उस कपड़े की कमीजें बना लेती है।"

यह सुन कर तो राजकुमार की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। वह बोला — "अच्छा? तब तो यह लड़की मेरी मॉ को बहुत पसन्द आयेगी क्योंकि मेरी मॉ भी सूत बहुत जल्दी कातती हैं।

मॉ जी, आप ऐसा कीजिये कि अपनी बेटी को मेरे घोड़े पर मेरे पीछे बिठा दीजिये। मेरी मॉ इसको देख कर बहुत खुश होगी और हो सकता है कि एकाध हफ्ते में वह इससे मेरी शादी भी कर दे अगर आपकी बेटी राजी होगी तो।"

भेद खुलने का डर भी था और रानी बन जाने की खुशी भी, सो उन दोनों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें परन्तु फिर भी उस लड़की की मॉ ने अपनी बेटी को राजकुमार के घोड़े पर उसके पीछे बिठा दिया और राजकुमार उसको ले कर अपने घर चल दिया।

राजकुमार स्त्री को काफी धन दे कर उस लड़की को वहॉ ले गया।

लड़की के जाने के बाद उसकी मॉ बहुत परेशान हुई कि कहीं उसकी बेटी के साथ कुछ बुरा न हो जाये। राजकुमार ने रास्ते में उससे कई सवाल किये पर उनसे उसको उस लड़की के बारे में किसी खास बात का पता नहीं चल सका।

उधर रानी ने जब राजकुमार के पीछे एक देहाती लड़की को घोड़े पर बैठे देखा तो वह भी सकते में आ गयी लेकिन जब रानी ने उसका सुन्दर मुखड़ा देखा और उसके कामों के बारे में सुना तब उसे कुछ तसल्ली सी हुई।

इसी समय राजकुमार ने अपनी मॉ के कान में फुसफुसा दिया कि अगर वह लड़की राजी हो गयी तो वह उससे शादी भी कर सकता है।

शाम गुजर गयी और राजकुमार और वह लड़की जिसका नाम ऐन्टी[36] था आपस में एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु ऐन्टी कातना बुनना आदि कामों के बारे में तो सोच कर ही कॉप उठती थी।

रात को जब सोने का समय आया तो रानी उसको एक बहुत ही सुन्दर सजे हुए कमरे में सुलाने के लिये ले गयी। जब वह वहॉ से जाने लगी तो ऐन्टी से बोली — "बेटी, तुम इस रुई का सूत कातना। कल सुबह के बाद तुम इसे कभी भी शुरू कर सकती हो और यह सूत तुम मुझे परसों सुबह दे देना।"

रानी तो यह कह कर चली गयी परन्तु ऐन्टी को रात भर नींद नहीं आयी। वह रात भर यही सोच सोच कर रोती रही कि उसने अपनी मॉ की सलाह मान कर यह सब काम क्यों नहीं सीखा।

[36] Anty – name of the girl

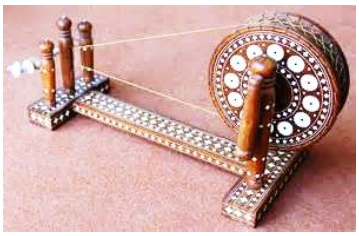

सुबह होने पर उसे एक कमरे में अकेले बिठा दिया गया और उसे एक बहुत ही बढ़िया किस्म का चरखा दे दिया गया।

कपास भी बहुत बढ़िया थी और चरखा भी परन्तु उसका धागा तो बार बार टूट जाता था। कभी वह बहुत बारीक आता और कभी बहुत मोटा।

क्योंकि ऐन्टी ने तो सूत कभी काता ही नहीं था इसलिये उससे सूत कत ही नहीं रहा था। आखिरकार ऐन्टी ने तंग हो कर चरखा एक तरफ खिसका दिया और रोने लगी।

इतने में एक बड़े पैरों वाली छोटी बुढ़िया उसके सामने प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुम्हें क्या दुख है?"

ऐन्टी बोली — "मेरे सामने यह इतनी सारी कपास पड़ी है इस सबका सूत कात कर मुझे कल सुबह तक देना है और मुझसे तो एक गज सूत भी नहीं काता जा रहा है।"

बुढ़िया बोली — "जब तुम्हारी शादी होगी तो क्या तुम मुझे बुलाओगी? अगर तुम ऐसा करो तो रात को जिस समय तुम सो रही होगी तुम्हारा यह सारा सूत कत जायेगा।"

लड़की बोली — "ठीक है। मैं तुमको अपनी शादी पर आने के लिये अभी से बुलावा देती हूँ और वायदा करती हूँ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है। तुम शाम तक अपने कमरे में ही रहो और शाम को जब रानी आये तो उससे कहना कि वह सुबह आ कर अपना सूत ले जा सकती है।"

ऐसा ही हुआ। अगले दिन सुबह रानी ने जब सूत देखा तो उसको देख कर बहुत खुश हुई और बोली — "कल तुम इस सूत का कपड़ा बुनना।"

बेचारी ऐन्टी इस बार पहले से भी ज़्यादा परेशान थी क्योंकि उसको तो कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह राजकुमार को खोना नहीं चाहती थी।

यही सोचती वह परेशान सी बैठी थी कि एक भारी कमर वाली छोटी सी स्त्री उसके सामने प्रगट हुई और उससे पहले वाली बुढ़िया की तरह सौदा किया कि अगर वह उसको अपनी शादी में बुलायेगी तो रात भर में उसके सूत का कपड़ा बुन जायेगा।

ऐन्टी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको अपनी शादी में जरूर बुलायेगी। ऐन्टी ने हॉ कर दी तो वह उससे बोली कि वह आराम करे और रात भर में उसका कपड़ा बुन जायेगा। और अगले दिन सुबह जब वह लड़की उठी तो उसके लिये तो बहुत ही बढ़िया कपड़ा बुन कर तैयार था।

अगले दिन सुबह रानी ने जब कपड़ा देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी अब तुम आराम करो कल मुझे इस कपड़े की कमीजें बना कर और दिखा देना। तुम एक कमीज

मेरे बेटे को भी दे सकती हो, बस फिर तुम्हारी और राजकुमार की शादी हो जायेगी।"

अगले दिन तो ऐन्टी बहुत ही परेशान थी। वह राजकुमार के जितनी पास थी उतनी ही दूर भी थी। पर आज वह उतना घबरा नहीं रही थी क्योंकि उसको विश्वास था कि आज भी उसकी परेशानी दूर करने के लिये कोई न कोई आ ही जायेगा। वह दोपहर तक शान्ति से इन्तजार करती रही।

दोपहर बाद उसके सामने एक बड़ी लाल नाक वाली स्त्री प्रगट हुई और उसने भी उससे पहली दोनों स्त्रियों की तरह ही सौदा कर के उसकी बारह कमीजें सिल कर मेज पर तह कर के रख दीं। सुबह जब रानी आयी तो उन कमीजों को देख कर बहुत खुश हुई।

अब तो बस दोनों की शादी की ही बात होने लगी। शादी बहुत ही शानदार ढंग से हुई। ऐन्टी की मॉ भी आयी हुई थी। रानी के मुँह पर केवल ऐन्टी की कमीजों की ही तारीफ थी।

तभी एक पहरेदार ने आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

ऐन्टी तो यह सुन कर घबरा गयी कि यह उसकी कौन सी चाची आ गयी क्योंकि उसकी जानकारी में तो उसकी कोई चाची थी ही नहीं।

वह अपनी उन तीनों स्त्रियों को बिल्कुल ही भूल गयी थी जिन्होंने उसको रुई कातने में, फिर उस सूत का कपड़ा बुनने में और फिर उनकी कमीजें बनाने में सहायता की थी।

पर राजकुमार बोला — "उनको कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

सो बड़े पैरों वाली एक स्त्री आयी और राजकुमार के पास आ कर बैठ गयी। बड़ी रानी को यह अच्छा नहीं लगा पर उसका कुशल मंगल पूछने के बाद रानी ने पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपके ये पैर इतने बड़े क्यों हैं?"

वह स्त्री बोली — "मैं ज़िन्दगी भर चरखे पर खड़े हो कर सूत कातती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार ऐन्टी से बोला — "प्रिये, मैं तो अबसे तुम्हें कभी सूत कातने ही नहीं दूँगा।"

तभी एक पहरेदार ने फिर आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी कोई दूसरी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

राजकुमार फिर बोला — "उनसे कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

फिर एक भारी कमर वाली स्त्री आयी और आ कर बैठ गयी। रानी ने उसकी भी कुशल मंगल पूछने के बाद उससे पूछा — "मैम,

क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपकी कमर बीच में से इतनी चौड़ी क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "रानी जी, मैं सारी ज़िन्दगी बैठ कर कपड़ा बुनती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार बोला — "प्रिये, मैं तो आज से तुमको कपड़ा बुनने के लिये कभी करघे पर बैठने ही नहीं दूँगा।"

इसके बाद बड़ी लाल नाक वाली स्त्री आयी और वहाँ आ कर बैठ गयी। रानी ने उससे भी पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकती हूँ कि आपकी नाक इतनी बड़ी और लाल क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर सिर नीचा कर के कपड़े सिलती रही हूँ इसलिये मेरे शरीर का सारा खून मेरी नाक की तरफ खिंच आया है, इसी लिये।"

राजकुमार फिर उस लड़की से बोला — "प्रिये, मैं तो तुम्हें कभी सुई ही नहीं पकड़ने दूँगा।"

पर बच्चो, यह तो परियों की कहानी है। ऐसा भी कहीं होता है क्या? न तो आजकल राजकुमार हैं, न सहायता करने के लिये परियाँ हैं। सब कुछ अपने आप ही करना पड़ता है।

इसलिये इस कहानी से हमें यही सीखना चाहिये कि सबको अपनी ज़िन्दगी में बहुत काम करना चाहिये क्योंकि सभी लोग काम को प्यार करते हैं और हर जगह काम की ही तारीफ होती है।

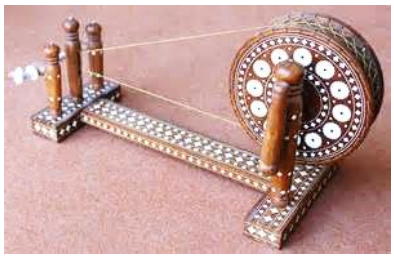

8 घमंडी राजकुमारी[37]

बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड में किसी जगह एक राजा राज करता था। उसकी एक बेटी थी जो सुन्दर तो बहुत थी पर साथ में घमंडी भी बहुत थी।

जब वह शादी के लायक हुई तो राजा ने कई राजकुमारों को बुलवाया ताकि वह किसी राजकुमार को पसन्द कर ले तो उससे उस की शादी कर दी जाये पर वह सबमें कोई न कोई बुराई बता देती थी और उससे शादी करने से इनकार कर देती थी।

एक बार राजा ने कुछ राजकुमारों को बुलाया और अपनी बेटी से उनमें से एक को चुनने के लिये कहा। परन्तु इस बार भी वैसा ही हुआ।

उसने हर राजकुमार में कोई न कोई खोट निकाल दिया और शादी से इनकार कर दिया। किसी को लम्बा ताड़ बताया तो किसी को छोटा बौना। किसी को मोटा बताया तो किसी को छड़ी।

अन्त में वह एक सुन्दर से राजकुमार के पास आ कर खड़ी हुई तो उसमें वह कोई खोट न निकाल सकी। वह कुछ परेशान सी हो गयी। अब वह क्या करे। तभी उसको उस राजकुमार की ठोड़ी के नीचे एक बाल दिखायी दे गया।

[37] Proud Princess – a folktale from Ireland, Europe

बस फिर क्या था उसको मौका मिल गया, वह बोली — "मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती ओ दढ़ियल।" और चली गयी।

यह सब सुन कर राजा बहुत परेशान हुआ। उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी तुम हर किसी में ऐब निकालती हो अब तुम्हारी सजा यही है कि कल सुबह जो भी पहला भिखारी या गाने वाला मेरे दरवाजे पर आयेगा मैं तुम्हारी शादी उसी से कर दूँगा।"

अगले दिन सुबह ही एक भिखारी फटे कपड़े पहने, कन्धों तक बाल बढ़ाये और लम्बी सी दाढ़ी रखे राजा के दरवाजे पर आ कर गीत गाने लगा।

जब उसका गाना खत्म हो गया तब दरबार का दरवाजा खोला गया और उसको अन्दर बुला कर उससे राजकुमारी की शादी कर दी गयी। राजकुमारी बहुत रोयी चिल्लायी पर राजा ने उसकी एक न सुनी।

शादी के बाद राजा ने उस भिखारी को सोने की पॉच मुहरें दीं और कहा — "ये पॉच मुहरें तुम्हारे लिये हैं। अपनी पत्नी को लो और मेरी नजरों से दूर हो जाओ। और फिर कभी अपनी और अपनी पत्नी की सूरत मुझे मत दिखाना।"

वह भिखारी वह पॉच मुहरें और अपनी पत्नी को ले कर वहॉ से चला गया। राजकुमारी इस सबसे बहुत दुखी थी पर कुछ कर नहीं सकती थी। केवल एक ही चीज़ उसको इस समय तसल्ली दे रही थी – वे थे उसके पति के प्यार भरे शब्द और उसका नम्र बर्ताव।

चलते चलते वे एक जंगल में पहुँचे। राजकुमारी ने पूछा — "यह जंगल किसका है?"

उसका पति बोला — "यह जंगल उसी राजकुमार का है जिसको कल तुमने दढ़ियल कहा था।"

यही जवाब उसने रास्ते में पड़े मैदानों, खेतों और अन्त में आने वाले एक शहर के बारे में भी दिया।

यह सुन कर राजकुमारी सोचने लगी कि "मैं भी कितनी बेवकूफ थी कि मैंने उस अच्छे खासे राजकुमार से शादी नहीं की। केवल उसकी दाढ़ी पर उगे एक बाल की वजह से ही मैंने उससे शादी करने से मना कर दिया।"

अन्त में वे एक छोटे से घर के सामने आ पहुँचे तो राजकुमारी ने पूछा — "यह तुम मुझे कहाँ ले आये हो?"

पति बोला — "पहले यह घर मेरा था आज से यह घर तुम्हारा है।"

राजकुमारी कुछ रुआँसी सी हो गयी पर वह बहुत थकी हुई और भूखी थी सो वह उसके साथ उस घर के अन्दर चली गयी।

पर उस घर में न तो खाने की मेज सजी हुई थी और न ही कहीं आग ही जल रही थी। आग जलाने और फिर खाना बनाने में उसको पति की सहायता करनी पड़ी।

फिर दोनों ने मिल कर घर साफ किया, खाना खाया और सो गये। राजकुमारी थकी थी सो वह तो बिना शाही पलंग के ही जैसे घोड़े बेच कर सो गयी।

अगले दिन उसने अपनी नयी पत्नी को सूती कपड़े की एक पोशाक ला कर दी। जब उसका घर का काम खत्म हो गया तो पति ने उसको कुछ जंगली घास ला कर दी और उसको टोकरियॉ बुनना बताया।

टोकरियॉ बनाते समय उस घास की नोकें राजकुमारी के हाथ में गड़ रहीं थीं जिनसे खून निकल रहा था। वह दर्द से रो पड़ी।

इसके बाद उसके पति ने उससे अपने कुछ कपड़े मरम्मत करने के लिये कहा तो सुई उसके हाथों में चुभने लगी और उनसे भी खून निकलने लगा। वह फिर रो पड़ी।

भिखारी पति से राजकुमारी का रोना नहीं देखा गया तो उसने उसके लिये कुछ मिट्टी के बर्तन ला दिये और उनको बाजार में बेच आने के लिये कहा। यह तो उसके लिये बहुत ही मुश्किल काम था परन्तु क्या करती।

वह उनको ले कर बाजार गयी। वह वहॉ खड़ी इतनी सुन्दर और उदास लग रही थी कि दोपहर से पहले ही उसके सारे बर्तन बिक गये। उसके पति को इस बात से बड़ी खुशी हुई।

पति ने उसको अगले दिन बर्तन बेचने के लिये फिर बाजार भेजा। पर लगता था कि वह दिन उसके लिये अच्छा नहीं था। एक

शराबी उस दिन बाजार में आया और उसके सारे बर्तन तोड़ कर चला गया।

राजकुमारी रोती हुई घर पहुँची तो वह भिखारी उसकी कहानी सुन कर बहुत दुखी हुआ और बोला — "तुम इनमें से किसी काम के लायक नहीं हो। मैं ऐसा करता हूँ कि मैं यहाँ के राजा के रसोइये को जानता हूँ तुमको मैं उससे कह कर शाही रसोई में काम दिलवा देता हूँ।"

बेचारी राजकुमारी एक बार फिर शर्म से पानी पानी हो गयी पर वह क्या करती वह तो राजकुमारी थी उसको तो यह सब आता नहीं था।

पति ने उसको रसोइये से कह कर उसको शाही रसोई में काम दिलवा दिया था। वहाँ उसको काफी काम दिया जाता था। काम खत्म कर के वह रात को घर चली जाती थी। जाते समय उसकी पोशाक की दोनों जेबें बची खुची खाने की चीज़ों से भरी रहतीं।

एक हफ्ते बाद उसने देखा कि रसोई में खूब हलचल मची हुई है। पूछने पर पता चला कि उस दिन राजा की शादी हो रही थी पर आश्चर्य की बात यह थी कि दुलहिन का पता ही नहीं था कि वह है कौन।

रोज की तरह रसोइये ने उस दिन भी उसकी जेबें खाने की चीज़ों से भर दीं और बोला — "चलो, तुम्हारे जाने से पहले एक बार राजा के कमरे को देख आयें कि वहाँ क्या हो रहा है।"

वे दरवाजे के पास आ कर कमरे में झॉकने को ही थे कि उसमें से राजा निकला और वह कोई दूसरा राजा नहीं बल्कि वही दढ़ियल राजा खुद ही था जिसको राजकुमारी ने पहले शादी करने से मना कर दिया था।

राजा रसोइये से बोला — "तुम्हारी इस सुन्दर नौकरानी को मेरे कमरे में झॉकने की कोशिश करने की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी। इसको मेरे साथ नाचना पड़ेगा।"

इससे पहले कि राजकुमारी हॉ या न कहती दढ़ियल राजा ने उसका हाथ पकड़ा और उसे कमरे के अन्दर ले गया। साजिन्दों ने उनके नाच के साथ साज बजाने शुरू किये और दोनों उनकी धुन पर नाचने लगे।

राजा को उसके साथ नाचते कुछ पल भी नहीं बीते थे कि नाचते में उसकी जेबों से खाने का सामान निकल कर नीचे फर्श पर गिर गया। वहॉ बैठे हर आदमी के मुॅह से एक चीख सी निकल गयी।

राजकुमारी तो यह सब देख कर शर्म से पानी पानी हो गयी और अपना हाथ छुड़ा कर दरवाजे की तरफ भागी पर राजा ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे बड़े कमरे के पीछे वाले कमरे में ले गया और बोला — "प्रिये, क्या तुम मुझे नहीं जानतीं? मैं वही दढ़ियल राजा हूॅ जिससे तुमने कुछ दिन पहले शादी करने से इनकार कर दिया था।

और मैं ही तुम्हारा पति भी हूँ जो तुमको भिखारी का वेश रख कर तुमसे शादी कर लाया। और वे मेरे ही आदमी थे जो पहले दिन तुम्हारे सारे मिट्टी के बर्तन खरीद कर ले गये। और मैं ही वह शराबी हूँ जिसने बाजार में तुम्हारे मिट्टी के बर्तन तोड़ दिये थे।

जब तुम्हारे पिता ने तुम्हारी शादी मुझसे की थी वह मुझे अच्छी तरह जानते थे। और हम लोगों ने यह सब नाटक मिल कर केवल तुम्हारा घमंड दूर करने के लिये खेला था।"

राजकुमारी के दिल में शर्म, डर और खुशी सभी विचार एक साथ आ रहे थे पर शायद पति के लिये प्रेम पहली बार इन सबसे ऊपर था क्योंकि यह सब सुन कर वह राजा के सीने पर अपना सिर रख कर बच्चों की तरह रो पड़ी और बोली "मुझे माफ कर दो दढ़ियल राजा।" राजा ने उसको धीरज बॅधाया और उसको अपनी दासियों को सौंप दिया।

दासियॉ उसको एक अलग कमरे में ले गयीं और कुछ देर बाद ही उसको सजा कर ले आयीं। सब लोग बैठे यही सोच रहे थे कि रसोई में काम करने वाली इस लड़की का अब क्या हाल होगा। परन्तु उन्होंने जब उसी लड़की को राजा के साथ रानी के रूप में सजे हुए आते देखा तो वे भौंचक्के से रह गये।

अब तक राजकुमारी के माता पिता भी वहीं आ गये थे। दोनों की शादी हो गयी और सारे महल में खुशी की लहर दौड़ गयी।

9 मूनाचर और मानाचर[38]

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक गॉव में मूनाचर और मानाचर नाम के दो आदमी रहते थे। एक बार वे दोनों रसभरी चुनने गये।

मूनाचर जितनी रसभरी चुनता जाता था मानाचर वह सब रसभरियॉ खाता जाता था। जब मूनाचर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

वह लकड़ी का एक डंडा ढूँढने निकला ताकि वह उससे एक रस्सी बना सके और उस रस्सी से मानाचर को फॉसी पर लटका सके क्योंकि उसने मूनाचर की रसभरियॉ खायीं थीं। सो वह एक डंडे के पास पहुँचा।

डंडा बोला — "मूनाचर भाई, कहॉ जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक डंडे की तलाश है जिससे मैं एक रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मानाचर को फॉसी लगाऊँगा जिसने मेरी सारी रसभरियॉ खायी हैं।"

---

[38] Moonachar and Manachar – a folktale from Ireland, Europe.
[This folktale appeared in "Popular Tales of the West Highlands: orally collected, vol 1. 1860." There it was collected from far Northern Europe region. Available at the Web Site : http://books.google.ca/books?pg=RA3-PA160&id=ZlMJAAAAQAAJ&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false] Read more such stories in "Billa Aur Chuhiya Jaisi Kahaniyan" available from hindifolktales@gmail.com

डंडा बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं ले जा सकते जब तक तुम मुझे काटने के लिये कुल्हाड़ी नहीं लाते।" सो मूनाचर एक कुल्हाड़ी के पास पहुँचा।

कुल्हाड़ी ने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक कुल्हाड़ी की तलाश है जो डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा, रस्सी से फिर मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुल्हाड़ी बोली — "मुझे पाने के लिये तुम्हें मेरे डंडे पर एक झंडी बाँधनी होगी।" सो मूनाचर एक झंडी के पास गया।

झंडी ने मूनाचर से पूछा — मूनाचर भाई, इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक झंडी की तलाश है जिसे मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

झंडी बोली — "मैं तब तक कुल्हाड़ी के ऊपर नहीं लग सकती जब तक तुम मुझे पानी से गीला नहीं करोगे।" सो मूनाचर पानी के पास पहुँचा।

पानी ने पूछा — "क्या तलाश कर रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं पानी की तलाश में हूँ। पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

पानी बोला — "तुम मुझे नहीं ले पाओगे जब तक कि हिरन मेरे अन्दर नहीं तैरेगा।" सो मूनाचर चलते चलते हिरन के पास पहुँचा।

हिरन ने पूछा — "किधर चल दिये मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं हिरन की तलाश में हूँ। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

हिरन बोला — "तुम मुझको नहीं पा सकते जब तक कोई कुत्ता मेरा पीछा न करे।" सो मूनाचर एक शिकारी कुत्ते के पास पहुँचा।

कुत्ता बोला — "मूनाचर भाई, किधर जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मैं एक कुत्ते की तलाश में हूँ जो मेरे लिये हिरन लायेगा। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं

रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुत्ता बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगे जब तक तुम मेरे पंजों में मक्खन नहीं लगाओगे।" सो मूनाचर मक्खन ढूँढने चल दिया।

आगे जा कर उसे मक्खन मिला तो उसने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं मक्खन की तलाश में हूँ। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

मक्खन बोला — "मुझे पाने के लिये तुम्हें एक बिल्ली लानी पड़ेगी जो मुझे खुरचेगी।" सो मूनाचर एक बिल्ली के पास पहुँचा।

बिल्ली ने पूछा — "कैसे आना हुआ मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक बिल्ली चाहिये जो मेरे लिये मक्खन खुरचेगी। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

बिल्ली बोली — "तुम मुझे नहीं पा सकते जब तक तुम मुझे दूध नहीं पिलाओगे।" सो मूनाचर एक गाय के पास आया।

गाय बोली — "तुम सुखी रहो मूनाचर भाई, किधर चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं एक गाय की तलाश में हूँ जिसका दूध बिल्ली पियेगी। बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खायी हैं।"

गाय बोली — "मेरा दूध पाने के लिये तुमको भूसे वालों से भूसा लाना पड़ेगा।" सो मूनाचर भूसे वालों के पास पहुँचा।

भूसे वाले बोले — "किसकी तलाश में घूम रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे थोड़े से भूसे की तलाश है। यह भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा। गाय मुझे दूध देगी, मैं वह दूध बिल्ली को

पिलाऊँगा, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

भूसे वाला बोला — "मूनाचर भाई, हम तुमको भूसा तब तक नहीं दे सकते जब तक तुम उस चक्की वाले से हमको केक बनाने का सामान न ला दो।" सो मूनाचर चक्की वाले के पास चल दिया।

चक्की वाले ने पूछा — "मूनाचर भाई इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे केक बनाने के सामान की तलाश है। यह सामान मैं भूसे वालों को दूँगा।

भूसे वाले मुझे भूसा देंगे, भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा, गाय मुझे दूध देगी, दूध बिल्ली पियेगी, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

चक्की वाला बोला — "जब तक तुम मुझे इस चलनी में उस नदी से पानी भर कर नहीं लाते तब तक मैं तुमको केक बनाने का सामान नहीं दे सकता।"

मूनाचर चलनी ले कर नदी पर पहुँचा। वहाँ उसने चलनी में पानी भरने की बहुत कोशिश की पर जैसे ही वह चलनी में पानी में भर कर उसे ऊपर उठाता सारा पानी उसके छेदों में से निकल जाता। ऐसा उसने कई बार किया और हर बार उसका पानी चलनी के छेदों से हो कर नीचे बह गया।

इतने में एक कौआ ऊपर से उड़ा जा रहा था। मूनाचर को चलनी में पानी भरते देख कर बोला — "पोतो, पोतो।" मूनाचर को उसकी बात समझ में आ गयी।

उसने पास पड़ी लाल मिट्टी उठायी और नदी के किनारे लगी घास उखाड़ी और दोनों को ठीक से मिला कर चलनी के ऊपर पोत दिया। कुछ देर में चलनी के छेद बन्द हो गये और चलनी में पानी भर गया।

पानी ला कर उसने चक्की वाले को दिया,
चक्की वाले ने उसको केक बनाने का सामान दिया,
केक बनाने का सामान ले जा कर उसने भूसे वालों को दिया,
भूसे वालों ने उसे भूसा दिया, भूसा उसने गाय को खिलाया,
गाय ने उसे दूध दिया, दूध उसने बिल्ली को पिलाया,
बिल्ली ने मक्खन खुरचा, मक्खन उसने कुत्ते के पंजों पर लगाया,

कुत्ता हिरन के पीछे भागा, हिरन पानी में तैरा,
पानी ने पत्थर को गीला किया, पत्थर ने कुल्हाड़ी तेज की,
कुल्हाड़ी ने डंडा काटा, डंडे से मूनाचर ने रस्सी बनायी

और जब तक यह सब हुआ तब तक तो मानाचर बहुत दूर निकल गया था। बेचारा मूनाचर।

कई और देशों में भी ऐसी कहानियॉ मिलती हैं।[39]

[39] To read other stories similar to this read “Billa Aur Chuhiya Jaisi Kahaniyan” by Sushma Gupta in Hindi.

10 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी[40]

एक बार की बात है कि आयरलैंड के एक गॉव में हडिन, डडिन और डोनाल्ड[41] नाम के तीन आदमी पास पास रहते थे।

तीनों के पास अपने अपने बैल थे, अपने अपने खेत थे और वे अपनी अपनी खेती करते थे। डोनाल्ड अपने खेत में बहुत मेहनत करता था और उसकी फसल भी बहुत अच्छी होती थी इसलिये धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

हडिन और डडिन से उसकी अमीरी देखी नहीं गयी और एक दिन उन्होंने डोनाल्ड के एक बैल को मार दिया। डोनाल्ड बहुत दुखी हुआ पर कुछ कर नहीं सकता था। इसलिये सब्र कर के उसने अपने मरे हुए बैल की खाल निकाली और उसे कन्धे पर रख कर बाजार में बेचने चल दिया।

रास्ते में एक मैना[42] उस बैल की खाल पर आ कर बैठ गयी और उस खाल में लगा मॉस खाने लगी। साथ में वह डोनाल्ड से बातें भी करती जाती थी।

क्योंकि वह आदमी की आवाज में उससे बात कर रही थी तो उसको लगा कि उसको उसकी कुछ बातें समझ में आ रही हैं सो

[40] Donald and His Neighbors – a folktale from Ireland, Europe
[41] Hudden, Dudden and Donald – names of the three neighbors
[42] Translated for the word “Magpie” bird

उसने तुरन्त हाथ घुमा कर उसको पकड़ कर अपनी जेब में रख लिया।

बाजार में जा कर उसने अपने बैल की खाल बेची और फिर शराब पीने के लिये एक होटल में घुस गया।

जब वहॉ की मालकिन उसे अन्दर कमरे में ले जा रही थी तो उसने उस चिड़िया को ज़रा सा दबा दिया। दबाने से चिड़िया के मुँह से कुछ टूटे फूटे शब्द निकल पड़े।

होटल की मालकिन उन शब्दों को सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली — "अरे यह मैं क्या सुन रही हूँ? लगता है कि कोई बात कर रहा है पर फिर भी मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

डोनाल्ड बोला — "आप ठीक कह रही हैं। मेरे पास एक चिड़िया है जो मुझे सब कुछ बताती है। मैं इसे हमेशा अपने पास रखता हूँ। इस समय यह यह कह रही है कि आप जो मुझे शराब दे रही हैं आपके पास उससे भी अच्छी शराब है।"

मालकिन बोली — "अजीब बात है, यह तो बिल्कुल ठीक बोल रही है। क्या तुम मुझे यह चिड़िया बेचोगे?"

डोनाल्ड बोला — "हॉ मैं इसे बेच सकता हूँ अगर मुझे इसके अच्छे दाम मिल जायें तो।"

मालकिन बोली — "मैं तुम्हारा टोप चॉदी के सिक्कों से भर दूँगी।"

डोनाल्ड ने खुशी खुशी वह चिड़िया उस होटल की मालकिन को बेच दी और घर चला गया।

कुछ देर बाद ही वह हडिन और डडिन से मिला और उनसे बोला — "तुम लोग सोच रहे होगे कि शायद तुमने मेरे साथ बुरा किया है पर नहीं, तुमने तो यह सब मेरे अच्छे के लिये ही किया था। देखो न उस बैल की खाल से मुझे कितने सारे पैसे मिल गये।" कह कर उसने उनको अपना चॉदी के सिक्कों से भरा टोप दिखा दिया।

वह फिर बोला — "केवल एक खाल के इतने सारे पैसे तुम लोगों ने तो कभी देखे भी नहीं होंगे।"

उस रात हडिन और डडिन ने भी अपने अपने बैलों को मार डाला और अगले दिन उनकी खालें बेचने के लिये बाजार चल दिये। पर काफी भाव ताव करने के बाद भी उन लोगों को उन खालों का बहुत ही कम पैसा मिला।

आखिरकार उतने ही पैसे से सन्तुष्ट हो कर बड़े गुस्से में वे घर पहॅुचे। वे डोनाल्ड से इस बात का बदला लेना चाहते थे। डोनाल्ड को भी इस बात का पता था कि वे लोग जरूर ही कुछ न कुछ गड़बड़ घोटाला करेंगे।

यह भी हो सकता था कि वे उसका पैसा चुरा लें या फिर उसे सोते में मार दें। मारने के डर से उसने अपनी बूढ़ी मॉ को अपने बिस्तर में सुला दिया।

उसका ख्याल ठीक था। हडिन और डडिन उसका पैसा चुराने और उसको मारने के लिये उस रात उसके घर आये। उन्होंने यह सोचते हुए उसकी मॉ का गला घोट दिया कि वे डोनाल्ड को मार रहे थे। पर डोनाल्ड ने जब कुछ शोर मचाया तो वे उसका पैसा लिये बिना ही भाग गये।

अगले दिन डोनाल्ड अपनी मरी हुई मॉ को अपने कन्धे पर डाल कर शहर ले चला। रास्ते में एक कुँए पर रुक कर उसने अपनी मॉ के शरीर को एक डंडे के सहारे इस तरह खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कुँए पर पानी पीने के लिये खड़ी हो।

फिर वह पास के एक शराबखाने में घुस गया और वहॉ पास में खड़ी एक स्त्री से बोला — "क्या आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करेंगी? मेरी मॉ बाहर कुँए के पास खड़ी है उसको अन्दर आने को कहियेगा।

वह थोड़ा कम सुनती हैं सो अगर वह एक बार में ठीक से न सुनें तो उन्हें थोड़ा हिला लीजियेगा और कहियेगा कि वह यहॉ आ जायें।"

वह स्त्री बाहर आयी और उसकी मॉ से कई बार अन्दर आने को कहा परन्तु उसको लगा कि उसकी बात का तो उसके ऊपर कोई असर ही नहीं पड़ रहा है तो उसने उसको थोड़ा सा हिलाया।

पर यह क्या? उसके छूते ही वह सिर के बल कुँए में गिर गयी और डूब गयी। वह स्त्री इस घटना से बहुत ही डर गयी। उसने तुरन्त ही जा कर डोनाल्ड को यह सब कुछ बताया।

डोनाल्ड सिर पर हाथ मार कर बोला — "अरे यह आपने क्या किया?"

और तुरन्त ही बाहर जा कर उसने कुँए से अपनी माँ का शरीर बाहर निकाला। वह उसकी मौत पर दुखी हो कर रोने लगा।

इस तरह डोनाल्ड तो केवल दुखी होने का बहाना कर रहा था पर उस स्त्री की हालत बहुत ही खराब थी। वह अपने आपको डोनाल्ड की माँ का हत्यारा समझ रही थी।

उस शहर के लोगों ने डोनाल्ड को इस दुर्घटना के बहुत सारे पैसे दिये और इस तरह डोनाल्ड पहले से भी कहीं ज़्यादा पैसे ले कर घर लौटा।

घर आ कर उसने पहले की तरह से हडिन और डडिन को अपने पैसों के बारे में बताया और बोला — "तुम लोग कल रात मुझे मारने के लिये आये थे न, पर यह मेरे लिये अच्छा हुआ कि वह सब मेरी माँ पर गुजरा। अब मुझे बारूद बनाने के लिये काफी पैसे मिल गये।"

उसी रात हडिन और डडिन दोनों ने अपनी माँ को मार दिया और अगली सुबह उनके मरे हुए शरीरों को अपने अपने कन्धों पर डाल कर शहर ले चले।

शहर पहुँच कर वे आवाज लगाने लगे — "इन औरतों को बारूद के बदले में कौन खरीदेगा?" सभी उनकी बात पर हँस पड़े और बच्चों ने तो उनको मार पीट कर ही भगा दिया।

अब उन्होंने फिर से डोनाल्ड से बदला लेने का फैसला किया।

वे जब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि डोनाल्ड नाश्ता कर रहा है। वे पीछे से आये, उन्होंने डोनाल्ड को एक थैले में डाला और नदी की तरफ ले चले।

रास्ते में उनको सामने ही एक खरगोश दिखायी पड़ गया। खरगोश देख कर उन्होंने थैला तो सड़क पर रख दिया और उस खरगोश को पकड़ने दौड़ पड़े।

उन्होंने सोचा कि खरगोश जल्दी ही पकड़ में आ जायेगा तो क्यों न उसको भी रास्ते में पकड़ लिया जाये परन्तु वह खरगोश तो भागता ही चला गया और उसके पीछे भागते भागते वे भी काफी दूर निकल गये।

इधर जब कुछ देर हो गयी तो डोनाल्ड ने थैले में बैठे बैठे गाना गाना शुरू कर दिया। एक आदमी सड़क पर से गुजर रहा था कि उसने थैले में से गाने की आवाज सुनी तो वह रुक गया।

उसने पूछा — "यह क्या मामला है कि तुम थैले में बन्द हो और गाना गा रहे हो?"

डोनाल्ड बोला — "मैं स्वर्ग जा रहा हूँ और बहुत जल्दी ही मैं इन सब मुश्किलों से आजाद हो जाऊँगा।"

वह आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारी जगह इस थैले बन्द हो जाऊँ तो तुम मुझसे क्या लोगे?"

डोनाल्ड बोला — "कह नहीं सकता पर इसके लिये तुम्हें काफी पैसा देना पड़ेगा क्योंकि स्वर्ग जाना कोई आसान काम नहीं है।"

वह आदमी बोला — "मेरे पास ज़्यादा पैसे तो नहीं हैं पर मेरे पास बीस जानवर हैं जो मैं तुमको दे सकता हूँ। चलेगा?"

डोनाल्ड बोला — "ठीक है मैं बीस जानवरों से ही काम चला लूँगा।"

आदमी ने खुशी खुशी थैला खोल कर डोनाल्ड को बाहर निकाल दिया। बाद में डोनाल्ड ने उस आदमी को उस थैले मे बन्द कर दिया और उसके बीस बढ़िया जानवर ले कर घर आ गया।

कुछ देर बाद हडिन और डडिन खरगोश पकड़ कर लौटे और उस थैले को अपनी पीठ पर लाद कर चलने लगे। यह समझते हुए कि उस थैले में अभी भी डोनाल्ड बन्द है उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया। वह थैला तुरन्त ही पानी में डूब गया।

वे जल्दी जल्दी घर लौटने लगे ताकि डोनाल्ड की जायदाद पर जल्दी ही कब्जा कर सकें, पर यह क्या? घर आ कर तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उन्होंने देखा कि डोनाल्ड तो घर में है और उसके पास कई सारे अच्छे किस्म के जानवर भी हैं जो पहले उसके पास कभी नहीं थे।

उन्होंने आ कर डोनाल्ड से पूछा — "अरे डोनाल्ड, यह क्या? हम तो समझे कि तुम डूब गये हो परन्तु तुम तो यहाँ हमारे सामने खड़े हो।"

डोनाल्ड बोला — "ओह हाँ, वहाँ तो मैं डूब ही गया था पर मुझे वहाँ डुबो कर तुमने मेरी बड़ी सहायता की क्योंकि वहाँ मुझे ये जानवर और सोना मिल गया था पर मैं उनमें से केवल एक ही चीज़ ले सकता था सो मैं जानवर ले कर चला आया पर सोना अभी भी वहीं पड़ा हुआ है।"

यह सुन कर दोनों के मन में लालच आ गया। उन्होंने फिर से कसम खायी कि वे डोनाल्ड के दोस्त बने रहेंगे पर वह किसी तरह उनको वह सोना दिलवा दे।

डोनाल्ड इस बार उनको नदी में उस जगह पर ले गया जहाँ वह नदी सबसे ज़्यादा गहरी थी।

उसने एक पत्थर उठाया और उसको नदी में फेंकते हुए बोला — "देखो, यही वह जगह है जहाँ पर सोना है। अब तुम ऐसा करो कि तुममें से एक इस जगह पर कूद जाओ और अगर तुमको किसी सहायता की जरूरत हो तो दूसरे को पुकार लेना।"

यह सुन कर हडिन तुरन्त ही उस जगह पर कूद गया। कुछ ही पल बाद वह ऊपर आ गया और ऐसी आवाज में कुछ बोला जैसे कोई डूबता आदमी बोलता है।

डडिन ने डोनाल्ड से पूछा — "यह क्या कह रहा है?"

डोनाल्ड बोला — "अरे, कह क्या रहा है सोना निकालने में तुम से सहायता मॉग रहा है, और क्या कह रहा है।

यह सुन कर डडिन भी हडिन के साथ ही नदी में कूद गया और दोनों नदी में डूब कर मर गये। डोनाल्ड दोनों की बेवकूफी पर हॅसता हुआ घर वापस आ गया।

11 लो अर्न के सुनहरी सेब[43]

यह उस समय की बात है जब आयरलैंड के पश्चिमी प्रान्तों का कोई नाम नहीं हुआ करता था। बस जो कोई भी वहॉ पहले बस जाता था उसी के नाम से वह जगह जानी जाती थी जब तक कि वह मर नहीं जाता था। फिर वही जगह दूसरे आदमी के नाम से जानी जाती थी जो कोई वहॉ रहने आ जाता था।

वहॉ एक राजा राज करता था जिसका नाम था कौन[44]। उस की पत्नी बिटेन की थी जिसका नाम था ऐडा[45]। कौन के राज्य में किसी भी बात की कोई कमी नहीं थी इसलिये उसकी सारी जनता आनन्द से अपने दिन बिता रही थी।

उन दोनों के एक बेटा था जिसका नाम उन्होंने कौन–ऐडा रख दिया क्योंकि किसी ज्योतिषी ने उनको बताया था कि उस लड़के के अन्दर उसके माता और पिता दोनों के गुण आयेंगे।

जैसे जैसे कौन–ऐडा बड़ा होता गया उसके अन्दर सचमुच में ही उसके माता और पिता दोनों के गुण दिखायी देने लगे।

पर उसी समय बदकिस्मती से ऐडा बहुत बीमार पड़ी और उसी बीमारी में वह चल बसी। राजा और उसकी जनता ने रानी की मौत

[43] Story of Conn Edda, or Lough Earne's Golden Apples – a folktale of Ireland, Europe
[44] Conn – name of the King
[45] Edda – name of Conn's wife

का एक साल तक बहुत दुख मनाया और फिर ज्योतिषियों के समझाने पर राजा ने दूसरी शादी कर ली।

नयी रानी बहुत अच्छी थी। बरसों तक वह पुरानी रानी की तरह ही रही और सभी उससे बहुत खुश थे।

इस बीच उसके कई बच्चे हुए पर कुछ साल बाद ही उसको लगने लगा कि राजा कौन–ऐडा को बहुत चाहता है और बाद में भी वह उसी को राजगद्दी देगा और उसके अपने बच्चों की परवाह नहीं करेगा।

यह सोच कर रानी बहुत परेशान हुई। रानी की यह परेशानी इतनी बढ़ी कि उसने कौन–ऐडा को मारने का फैसला कर लिया। वह एक जादूगरनी के पास पहुँची और उसको अपने आने की वजह बतायी।

जादूगरनी वह सब सुन कर बोली — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या इनाम दोगी?"

रानी बोली — "जो तुम चाहो।"

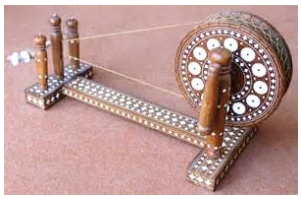

जादूगरनी बोली — "तुमको मेरी बाँह से बनी खाली जगह रुई से भरनी पड़ेगी और जहाँ मैं अपने तकुए[46] से छेद करूँगी वहाँ लाल गेहूँ भरना पड़ेगा।"

[46] Takuaa is an iron needle which is a part of Charakhaa which spins the cotton to make its thread. In the picture it is on the left side where the white cotton can be seen wrapped around it.

रानी बोली — "मैं तैयार हूँ।"

जादूगरनी ने अपने घर के पास अपनी बॉह को नीचे जमीन पर रख कर एक छेद सा बना लिया और अपना घर रुई से भरवा लिया।

फिर वह अपने भाई के घर पर चढ़ गयी। वहॉ उसने तकुए से छेद किया और उसके घर को उसने लाल गेहूँ से भरवा लिया। इस सबको करने के बाद वह रानी बोली — "अब तुमको अपना इनाम मिल गया अब तुम मेरा काम करो।"

जादूगरनी बोली — "तुम यह शतरंज[47] ले जाओ और राजकुमार के साथ शतरंज खेलो। पहले ही खेल में तुम जीत जाओगी पर खेलने से पहले तुम एक शर्त रखना, वह यह कि जो कोई भी बाजी जीतेगा वह हारने वाले से कोई भी काम करा सकता है।

जब तुम बाजी जीत जाओ तब तुम उससे कहना कि या तो वह तुमको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोग[48] के बाग

में लगे तीन सुनहरे सेब, उसका काला घोड़ा और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दे और वह अगर यह काम नहीं कर सकता तो फिर कभी तुमको अपनी शक्ल न दिखाये।

[47] Chess – a game. See the picture above

[48] Firbolg

फ़िरबोग लो अर्न[49] में रहता है और इन सबकी इतनी ज़्यादा देखभाल करता है कि उसके महल में से इनको लाना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

वह खुद अपनी ताकत से इनको नहीं ला सकता और अगर उसने लाने की कोशिश की तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई और वह जादूगरनी से शतरंज ले कर घर चली गयी। घर पहुँचते ही उसने राजकुमार को शतरंज खेलने के लिये बुलाया और दोनों शतरंज खेलने बैठे।

जैसा कि जादूगरनी ने कहा था रानी शतरंज की पहली ही बाजी जीत गयी।

परन्तु वह राजकुमार को पूरी तरह से अपने कब्जे में करना चाहती थी इसलिये उसने दूसरी बाजी बिछा दी। परन्तु आश्चर्य, दूसरी बाजी राजकुमार बिना किसी कोशिश के ही जीत गया।

राजकुमार बोला — "क्योंकि पहली बाजी आप जीती थीं इसलिये पहले आप अपनी शर्तें बताइये।"

रानी बोली — "मेरी शर्त यह है कि तुम मुझको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोग के बाग में लगे तीन सुनहरे सेब, उसका काला घोड़ा और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दो और अगर यह काम न कर सको तो देश छोड़ कर चले जाओ, और या फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

[49] Lough Erne – a place in Ireland

राजकुमार बोला — "ठीक है। अब आप मेरी शर्त सुनें। जब तक मैं लौट कर आऊँ आप पास वाली मीनार की चोटी पर बैठें और उतना ही लाल गेहूँ खायें जितना कि आपका तकुआ उठा सकता है और कुछ भी नहीं।

और अगर मैं एक साल और एक दिन तक न लौटूँ तो समय पूरा होने पर आप आजाद हैं।"

कौन–ऐडा को लम्बा सफर करना था सो वह रानी को मीनार की खुली छत पर एक साल और एक दिन के लिये बिठा कर चल दिया।

उसको मालूम था कि वह खुद अपनी ताकत से तो इन चीज़ों को पा नहीं सकता इसलिये वह अपने एक जादूगर दोस्त फ़ियोन डाढना[50] के पास सलाह करने जा पहुँचा। फ़ियोन डाढना ने उसका प्रेम से स्वागत किया, गरम पानी से उसके पैर धोये, कुछ खिलाया पिलाया और फिर उससे उसके वहाँ आने की वजह पूछी।

कौन–ऐडा ने उसको अपनी सारी कहानी बता कर पूछा — "अब यह बताओ कि तुम मेरी इसमें क्या सहायता कर सकते हो?"

फ़ियोन डाढना बोला — "मैं अभी तो तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता पर कल सुबह मैं अपने हरे कमरे में जाऊँगा और जादू से पता करूँगा कि मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ।"

[50] Fionn Dadhna

अगले दिन जब सुबह हुई, सूरज उगा तो फ़ियोन डाढना ने अपने जादू से अपनी पूजा से अपने देवता से बात की।

बाद में उसने कौन–ऐडा को बुला कर कहा — "दोस्त, तुम एक भारी परेशानी में पड़ गये हो। यह जाल तुमको मारने के लिये बिछाया गया है।

क्योंकि धरती पर लौ कौरिब की सबसे बड़ी जादूगरनी कैल्लीच[51] जो लो अर्न के राजा की बहिन है और आजकल यहीं आयरलैंड में है, वही रानी को ऐसी सलाह दे सकती है।

वह जादूगरनी मेरी और मैं जिस देवता की पूजा करता हूँ उसकी, हम दोनों की ताकत से बाहर है। पर तुम उम्मीद न छोड़ो।

ऐसा करो कि तुम आदमी के सिर वाली चिड़िया स्लियाभ मिस[52] के पास चले जाओ। उसके बस में अगर कुछ होगा तो वह तुम्हारे लिये जरूर कर देगी। क्योंकि इस पश्चिमी दुनियॉ में उसके जैसी चिड़िया और कोई नहीं है।

वह भूत, वर्तमान और भविष्य सबके बारे में सब कुछ जानती है। वह कहॉ रहती है यह जानना थोड़ा मुश्किल काम है पर सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है उससे जवाब पाना। पर मैं कोशिश करता हूँ।

[51] Cailleach of Lough Corrib
[52] Sliyabh Mis, the bird

तुम इस लम्बे बालों वाले छोटे घोड़े पर बैठ कर चले जाओ क्योंकि वह चिड़िया तुमको तीन दिन बाद दिखायी देगी। यह घोड़ा तुमको उसके रहने की जगह तक ले जायेगा।

हो सकता है कि वह चिड़िया तुम्हारे सवालों के जवाब देने से इनकार कर दे। ऐसी हालत में तुम यह रत्न रखो। यह तुम उसको भेंट में दे देना। इस भेंट को पा कर वह तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब जरूर दे देगी।"

राजकुमार ने अपने जादूगर दोस्त को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे रत्न ले कर उस छोटे से लम्बे बालों वाले घोड़े पर बैठ कर चल दिया।

जैसा कि उसके दोस्त ने बताया था वह तीन दिन में ही चिड़िया के पास पहुँच गया। जा कर उसने चिड़िया को रत्न भेंट किया और अपना सवाल पूछा।

चिड़िया ने पत्थर पर रखा हुआ रत्न अपनी चोंच में उठाया और एक ऊँची चट्टान पर जा बैठी और आदमी की आवाज में बोली — "ए कौन–ऐडा, कुआचेन[53] के राजा के बेटे, अपने दाहिने पॉव के नीचे का पत्थर हटाओ। उसके नीचे एक गेंद और एक प्याला रखा है। उसे उठा लो।

फिर घोड़े पर चढ़ कर उस गेंद को अपने घोड़े के सामने फेंको। उसके बाद तुम्हारा घोड़ा ही तुमको बता देगा कि तुमको क्या

[53] Cruachen

करना है।" इतना कह कर चिड़िया तुरन्त उड़ कर वहॉ से चली गयी।

राजकुमार ने बड़ी सॅभाल कर चिड़िया के बताये अनुसार सब कुछ किया। गेंद एक तरफ को लुढ़कती चली गयी और उसका घोड़ा उस गेंद के पीछे पीछे चल दिया।

वह घोड़ा उसको लो अर्न के राज्य की हद तक ले आया। वहॉ आ कर वह गेंद झील के पानी में चली गयी और गायब हो गयी।

अब घोड़ा बोला — "देखो, अब तुम मेरे कान में हाथ डाल कर वहॉ से एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल लो और मुझे तेज़ी से भगा ले चलो क्योंकि अब तुम्हारे सामने बहुत सारी मुश्किलें आने वाली हैं।"

कौन–ऐडा ने घोड़े को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसने घोड़े के कान में हाथ डाल कर एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल ली।

जब वह घोड़े पर बैठा जा रहा था तो झील का पानी उसके सिर के ऊपर छत की तरह दिखायी दे रहा था। लगता था घोड़ा झील के अन्दर घुस गया था। झील में घुसने के बाद उसको वह गेंद फिर दिखायी दे गयी थी।

चलते चलते अब वे एक ऐसी जगह आ गये थे जहॉ से एक रास्ता जाता था और उस रास्ते पर तीन डरावने सॉप पहरा दे रहे थे।

घोड़ा बोला — "देखो, टोकरी खोलो और उसमें से तीन मॉस के टुकड़े इन तीनों सॉपों के मुँह में डाल दो और फिर मेरे ऊपर ठीक से बैठ जाओ ताकि हम इन सॉपों के बीच से गुजर सकें।

अगर तुम इन तीनों सॉपों के मुँह में मॉस के टकड़े ठीक से डाल सके तो हम लोग इनके बीच से ठीक से गुजर जायेंगे नहीं तो बस समझो कि गये।"

कौन–ऐडा का निशाना अच्छा था सो उसने तीनों मॉस के टुकड़े उन तीनों सॉपों के मुँह में ठीक से डाल दिये। यह देख कर घोड़ा बोला — "तुम्हारी विजय हो राजकुमार।"

और यह कहते हुए उसने छलॉग लगा दी। उस छलॉग में उसने नदी और सॉपों द्वारा रक्षित दोनों ही जगहें पार कर दीं।

घोड़े ने पूछा — "कौन–ऐडा, तुम मेरे ऊपर बैठे हो न?"

राजकुमार बोला — "यह काम तो मेरी आधी ताकत से ही हो गया।"

घोड़ा बोला — "तुम बहुत बहादुर राजकुमार लगते हो। एक खतरा तो हमने जीत लिया पर अभी दो खतरे और बाकी हैं। भगवान ने चाहा तो तुम उनको भी जीत लोगे।"

वे गेंद के पीछे पीछे आगे बढ़ते जा रहे थे। चलते चलते वे एक ऐसे पहाड़ के पास आ गये जो आग उगल रहा था। घोड़ा बोला — "राजकुमार, अब तुम इस खतरनाक कूद के लिये तैयार हो जाओ।"

राजकुमार डर के मारे कॉप गया। उससे कोई जवाब नहीं बन पा रहा था। वह जितनी अच्छी तरह से हो सकता था घोड़े की पीठ को कस कर पकड़ कर बैठ गया।

घोड़े ने दूसरी कूद लगायी और आग उगलते हुए पहाड़ के दूसरी ओर कूद गया। घोड़ा फिर बोला — "कौनमौर के बेटे कौन-ऐडा, तुम ठीक तो हो न?"

राजकुमार बोला — "बस ज़िन्दा हूँ क्योंकि मैं आग से बहुत झुलस गया हूँ।"

घोड़ा बोला — "क्योंकि तुम ज़िन्दा हो इसी लिये मैं कहता हूँ कि तुम अपने काम में जरूर ही सफल होगे। हमारे भयानक खतरे टल गये हैं और आशा है कि अब हम तीसरा और आखिरी खतरा भी ठीक से पार कर लेंगे।"

कुछ दूर और चलने के बाद घोड़ा बोला — "देखो, बोतल में से मरहम निकाल कर अपने घावों पर लगा लो।"

राजकुमार ने घोड़े की बात मान कर ऐसा ही किया। मरहम लगाते ही उसके सारे घाव भर गये और वह पहले की तरह से ठीक हो गया।

वे गेंद के पीछे पीछे चलते एक शहर के पास आ गये थे। उस शहर के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार खड़ी थी।

उस शहर में घुसने का केवल एक ही दरवाजा दिखायी दे रहा था और वह दरवाजा भी हथियारबन्द लोगों से रक्षित नहीं था बल्कि

दो ऊँची ऊँची मीनारों से सुरक्षित था जिनमें से आग निकल रही थी।

घोड़ा यहाँ आ कर रुक गया और राजकुमार से बोला — "मेरे दूसरे कान में से एक चाकू निकाल लो। मुझे मार डालो और मेरा पेट चीर कर उसमें बैठ जाओ। इस तरह तुम बिना किसी तकलीफ के इन मीनारों के बीच में से निकल जाओगे।

अन्दर शहर में जा कर जब तुम्हारी इच्छा हो तब बाहर निकल आना। एक बार तुम शहर के अन्दर पहुँच गये तो फिर तुम जब चाहो बाहर आ सकते हो और जब चाहो अन्दर जा सकते हो।

इसके बदले में मैं तुमसे एक ही प्रार्थना करना चाहूँगा कि जैसे ही तुम दरवाजे में से शहर के अन्दर घुसोगे तुम उन सब शिकारी चिड़ियों को भगा दोगे जो मेरे शरीर को खाने आयेंगीं।

और दूसरे अगर तुम्हारी बोतल में ज़रा सा भी मरहम बचा होगा तो उसे मेरे शरीर पर डाल देना ताकि मेरा शरीर सड़े नहीं। और अगर हो सके तो एक गड्ढा खोद कर मेरे शरीर को उसमें गाड़ देना।"

कौन–ऐडा बोला — "ओ वफादार घोड़े, तुमने मेरी इतनी ज़्यादा सहायता की है कि ऐसा कह कर तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

मैं राजकुमार की हैसियत से तुम्हारा बहुत ही आभारी हूँ और यह कहता हूँ कि मेरे ऊपर कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों न आ

जाये मैं कभी अपनी दोस्ती को अपनी जान बचाने के लिये कुर्बान नहीं करूँगा। मैं ऐसा नहीं कर सकता जो तुम मुझसे कह रहे हो।"

घोड़ा बोला — "तुम मेरी फिक्र न करो, जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। भगवान तुमको तुम्हारे काम में सफलता दे।"

राजकुमार बोला — "नहीं, कभी नहीं, मैं ऐसा कर ही नहीं सकता।"

घोड़ा दुखी आवाज में बोला — "राजकुमार, अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम दोनों ही बरबाद हो जायेंगे और फिर हम कभी नही मिल पायेंगे पर अगर तुम जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करोगे तो सब कुछ इतना आसान हो जायेगा कि तुम अभी उसे सोच भी नहीं सकते।

मैंने तुम्हें अभी तक कभी धोखा नहीं दिया इसलिये तुम्हें मेरी इस सलाह पर भी शक नहीं करना चाहिये इसलिये जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही तुम करो वरना मेरी मौत से भी बदतर हालत होगी। और अगर अब भी तुमने मेरा कहा न माना तो समझ लेना कि हमारी तुम्हारी दोस्ती खत्म।"

राजकुमार को घोड़े की बात समझ में आ गयी। और दूसरा कोई उपाय दिखायी न देने पर राजकुमार ने घोड़े के दूसरे कान में से चाकू निकाला और कॉपते हाथों से उसकी गरदन पर चला दिया। राजकुमार की ऑखों से टपाटप ऑसू बह निकले।

पर जैसे ही वह चाकू उसने घोड़े की गरदन में घुसाया वह जैसे किसी जादुई ताकत से वहीं अटक कर रह गया। घोड़ा मर गया और गिर पड़ा।

राजकुमार घोड़े के मरने पर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया और इतना रोया कि रोते रोते बेहोश हो गया। कुछ देर बाद जब उसे होश आया तो उसने घोड़े के कहे अनुसार काम करना शुरू किया।

उसने घोड़े का पेट चीरा। उसकी खाल को उसने उसके शरीर से अलग कर लिया और उसमें छिप कर वह उस शानदार शहर में चला।

वह बिना किसी रोक टोक के उस शहर में घूम रहा था। वह शहर बड़ा और शानदार था पर राजकुमार अपने दोस्त घोड़े के मर जाने से बहुत दुखी था। वह केवल पचास कदम ही चला होगा कि उसको घोड़े की आखिरी बात याद आयी।

वह लौटा तो क्या देखता है कि बहुत सारी मॉस खाने वाली चिड़ियें घोड़े का मॉस खाने पर लगी हुई हैं। उसने कुछ ही पल में वे सारी चिड़ियें भगा दीं और बोतल में से निकाल कर मरहम की कुछ बूँदें उसके शरीर पर डाल दीं।

मरहम की वे बूँदें घोड़े के शरीर पर पड़ते ही उसमें कुछ बदलाव आये और देखते ही देखते वह एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

जब एक की खुशी कम हुई और दूसरे का आश्चर्य, तो वह नौजवान राजकुमार से बोला — "ओ कुलीन राजकुमार, आज तुमको देख कर मैं धन्य हो गया। मैं लो अर्न शहर के राजा फ़िरबोग का भाई हूँ। उस बदमाश फ़ियोन डाढना ने मुझे घोड़ा बना कर रखा हुआ था।

उसको मुझे तुम्हें देना ही पड़ा क्योंकि मैं अपनी शर्त तोड़ चुका था। फिर भी जैसा मैंने तुमसे कहा था अगर तुमने वैसा नहीं किया होता तो मैं कभी भी अपने इस रूप को वापस नहीं पा सकता था।

वह मेरी ही बहिन थी जिसने तुम्हारी सौतेली मॉ को वह सब लाने के लिये कहा जो मेरे भाई के पास है। पर तुम मेरा विश्वास करो कि मेरी बहिन तुमको किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी बल्कि तुम्हारा कुछ भला ही करना चाहती थी, यह तुम बाद में जानोगे।

क्योंकि अगर वह तुम्हारा ज़रा भी बुरा चाहती तो बिना किसी कठिनाई के कुछ भी कर सकती थी। पर वह तुमको आगे आने वाले खतरों से भी बचाना चाहती थी और साथ में मुझे भी मेरा पुराना रूप वापस दिलवाना चाहती थी।

आओ, तुम मेरे साथ आओ। घोड़ा, वह अनोखी ताकत वाला कुत्ता और सुनहरी सेब सब कुछ तुम्हारा है। मेरे भाई के घर में तुम्हारा बड़ा शानदार स्वागत किया जायेगा क्योंकि तुम केवल इन्हीं के नहीं बल्कि और बहुत कुछ चीज़ों के भी अधिकारी हो।"

समय गॅवाने की बजाय वे दोनों लो अर्न के राजा के महल की तरफ चल दिये। राजा और उसके दरबारियों ने सचमुच ही उन दोनों का बड़ा शानदार स्वागत किया।

जब राजा ने कौन–ऐडा के आने की वजह सुनी तो उसने कौन–ऐडा को काला घोड़ा, अनोखी ताकत वाला कुत्ता और ज़िन्दगी देने वाले तीन सुनहरे सेब जो उसके बगीचे में लगे थे एक शर्त पर उसको दे दिये कि जब तक उसका एक साल और एक दिन पूरा होता है वह उसका मेहमान बन कर रहेगा।

कौन–ऐडा राजी हो गया और आनन्द से वहॉ रहा।

जब उसके जाने का समय आया तो राजा ने अपने आनन्द भवन के बगीचे के क्रिस्टल के पेड़ से तीन सुनहरी सेब तोड़ कर उसे दे दिये। कुत्ते के गले में चॉदी की एक जंजीर बॉध कर कौन–ऐडा के हाथ में पकड़ा दी और घोड़े के ऊपर उसका साज सजा कर कौन–ऐडा की सवारी के लिये तैयार कर दिया।

राजा ने खुद कौन–ऐडा को उस घोड़े पर चढ़ाया और उसके हाथों में कुत्ते की चॉदी की जंजीर दी।

राजा ने कौन–ऐडा को यह भी यकीन दिलाया कि रास्ते में उसको अब आग उगलने वाला पहाड़, मीनार और दोनों सॉपों से डरने कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह घोड़ा उन सबसे बचा कर उसको उसके देश पहुॅचा देगा।

उन्होंने कौन–ऐडा से भी एक वायदा लिया कि वह हर साल कम से कम एक बार उन लोगों से मिलने जरूर आता रहेगा। कौन–ऐडा ने दोनों से विदा ली। उसका दोस्त बहुत दुखी था। कौन–ऐडा बिना किसी रोक टोक के आराम से अपने घर पहुँच गया।

उधर रानी यह सोचे बैठी थी कि कौन–ऐडा तो अब वापस नहीं आयेगा इसलिये राजगद्दी अब उसी के बेटों को मिलेगी। पर जब उसने कौन–ऐडा को काले घोड़े पर सवार और कुत्ते को उसके पीछे आते देखा तो उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया और वह दुखी हो कर मीनार से कूद गयी। नीचे गिरते ही वह मर गयी।

राजा अपने बेटे को देख कर बहुत खुश हुआ। वह तो एक साल से इसी लिये दुखी था कि पता नहीं उसका बेटा ज़िन्दा भी है या नहीं। जब उसको रानी के बुरे इरादों का पता चला तो गुस्से के मारे उसने रानी का शरीर जला दिया।

कौन–ऐडा ने वे तीनों सेब अपने बगीचे में लगा दिये और उनको बोते ही वहाँ एक हरा पेड़ निकल आया जिसके ऊपर वैसे ही तीन फल लगे थे।

इस पेड़ की मेहरबानी से उनके राज्य में खूब पैदावार होने लगी। घोड़ा और कुत्ता भी राज्य के बहुत काम आये। इसी कौन–ऐडा के नाम पर उस जगह का नाम कौनौट[54] पड़ा।

[54] Cannaught – there is a Cannaught Place in Delhi, India too. Maybe this name has come from there only.

12 निडर आदमी[55]

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके लौरैन्स और कैरौल[56] नाम के दो बेटे थे। लौरैन्स शुरू से ही बड़ा निडर था और कैरौल शाम से ही घर में छिप कर बैठ जाता था।

उन दिनों आयरलैंड में कुछ ऐसा रिवाज था कि जब कभी कोई मर जाता था तो उसकी कब्र की तीन दिन तक रखवाली करनी पड़ती थी क्योंकि रात को कब्रिस्तान में प्रेत आत्माएँ घूमती रहती थीं और कभी कभी वे कब्र से शरीर को चुरा कर भी ले जाती थीं।

जब लौरैन्स और कैरौल की माँ मरी तो इन दोनों को भी अपनी माँ की कब्र की रखवाली करनी थी। कैरौल बोला — "भाई, तुम तो बड़े निडर हो तो आज तुम ही माँ की कब्र की पहरेदारी करो तो जाने।"

लौरैन्स बोला — "तुम क्या समझते हो कि मैं अपनी माँ की कब्र की रखवाली नहीं कर सकता? मेरे अन्दर इतना साहस है कि मैं यह काम बड़े आराम से कर सकता हूँ।" यह कह कर लौरैन्स चला गया।

वह माँ की कब्र के पास पहुँचा और वहाँ पास में पड़े एक पत्थर के ऊपर बैठ कर पहरा देने लगा। बहुत रात बीत गयी। उसे नींद

[55] Dauntless Man – a folktale from Ireland, Europe

[56] Lawrence and Carol – names of the two sons of a woman

भी आने लगी कि उसने देखा कि बिना शरीर का एक सिर लुढ़कता हुआ चला आ रहा है।

वह डरा नहीं। उसने अपनी तलवार निकाल ली कि अगर वह उसके पास आया तो वह उसको अपनी तलवार से काट कर रख देगा। पर वह उसके पास आया ही नहीं।

लौरैन्स भी उसको बराबर देखता रहा। इतने में सवेरा हो गया। वह बिना शरीर का सिर गायब हो गया और इधर लौरेन्स भी अपने घर वापस आ गया।

कैरौल ने पूछा — "भाई, तुमने कब्रिस्तान में कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, देखा तो था, और आज अगर मैं वहॉ न होता तो मेरी मॉ के शरीर की चोरी जरूर हो जाती।"

कैरौल ने फिर पूछा — "जो कुछ तुमने देखा वह ज़िन्दा था कि मुर्दा?"

लौरैन्स बोला — "यह तो मुझे पता नहीं चला क्योंकि वह तो बिना शरीर का एक सिर था।"

कैरौल मुस्कुरा कर बोला — "तुम डरे नहीं?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, बिल्कुल भी नहीं। तुम्हें मालूम नहीं क्या कि मैं दुनियॉ में किसी भी चीज़ से नहीं डरता।"

कैरौल बोला — "तो फिर तुम अगर आज फिर से मॉ की कब्र की पहरेदारी करो तो जानूँ?"

लौरैन्स बोला — "आज की यह शर्त मैं तुमसे लगाता हूँ। आज मुझे नींद आ रही है। माँ की कब्र की रखवाली के लिये आज तुम जाओ।"

कैरौल बोला — "मुझे तो अगर कोई दुनियाँ भर का खजाना भी दे न, तो भी मैं यह काम नहीं कर सकता।"

लौरैन्स बोला — "पर अगर आज कब्र की पहरेदारी न की गयी तो माँ का शरीर चला जायेगा।"

कैरौल बोला — "अगर तुम आज और कल के बदले में यह काम कर लो तो फिर मैं तुमसे कभी किसी काम के लिये नहीं कहूँगा। पर मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे तुम कुछ डर गये हो।"

लौरैन्स बोला — "तुमको यह बताने के लिये कि मैं डरा नहीं हूँ मैं दोनों दिन माँ की कब्र की पहरेदारी करूँगा।" और यह कह कर वह सोने चला गया।

शाम होने पर वह उठा, अपनी तलवार सँभाली और कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। वह सीधा उसी पत्थर के पास पहुँचा जहाँ वह पिछले दिन बैठा था और उसी पत्थर पर बैठ कर अपनी माँ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

आधी रात के करीब फिर उसको कोई बड़ी सी चीज़ ज़ोर की आवाज के साथ अपनी तरफ आती दिखायी दी। उसने तुरन्त अपनी तलवार निकाली और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। मगर तुरन्त ही वे दोनों टुकड़े गायब भी हो गये।

सुबह होने पर लौरैन्स घर वापस आ गया।

कैरौल ने उससे फिर पूछा — "भाई, आज भी तुमने कहीं कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था और अगर आज भी मैं मॉ की कब्र की पहरेदारी न कर रहा होता तो आज तो मॉ का शरीर उसकी कब्र से ज़रूर ही चला जाता।"

कैरौल ने पूछा — "क्या वही बिना शरीर वाला सिर फिर से वहॉ आया था?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, अबकी बार वह तो नहीं था पर वह कोई बड़ी सी काली सी चीज़ थी जो मेरी मॉ की कब्र खोद रही थी तभी मैंने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।"

उस दिन लौरैन्स फिर सो गया और जब वह शाम को उठा तो फिर अपनी तलवार ले कर कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। और फिर उसी पत्थर पर बैठ कर मॉ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

इस बार आधी रात के बाद उसे कोई सफेद सी चीज़ आती दिखायी दी। वह तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसे भी मारने के लिये तैयार हो गया।

लौरैन्स ने देखा कि उस सफेद चीज़ के ऊपर एक आदमी का सिर था और उसके दॉत बहुत बड़े थे। जैसे ही लौरैन्स ने उसको मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो वह सिर बोला — "रुक जाओ, तुमने अपने मॉ के शरीर की रक्षा की है और तुम्हारे जैसा

बहादुर आदमी तो इस आयरलैंड की धरती पर और दूसरा कोई है भी नहीं। अगर तुम ढूँढने निकलोगे तो एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।"

सबेरा होने पर लौरैन्स घर पहुँचा तो कैरौल ने फिर पूछा — "भाई, आज भी तुम्हें कोई दिखायी दिया क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ दिखायी तो दिया परन्तु क्योंकि मैं वहॉ था इसी लिये मेरी मॉ का शरीर बच गया पर अब उसके शरीर को कोई खतरा नहीं है।"

अगले दिन लौरैन्स ने कैरौल से कहा कि वह उसको उसके हिस्से का पैसा दे दे क्योंकि वह देश विदेश घूमने जाना चाहता है। कैरौल ने उसके हिस्से का पैसा उसे दे दिया और लौरैन्स देश विदेश घूमने के लिये निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बड़े से शहर में पहुँचा। वहॉ वह एक डबल रोटी बनाने वाले के घर पहुँचा और खाने के लिये उससे डबल रोटी मॉगी।

डबल रोटी वाला उससे बात करने लगा तो बातों बातों में उसने पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लौरैन्स बोला कि वह किसी ऐसी चीज़ की तलाश में था जो उसे डरा सके।

डबल रोटी वाले ने पूछा "क्या तुम्हारे पास काफी पैसा है?"

इस पर लौरैन्स बोला — "हॉ मेरे पास पचास पौंड हैं।"

डबल रोटी वाला बोला — "ठीक है मैं तुमको पचास पौंड और दूँगा अगर तुम मेरे बतायी हुई जगह पर चले जाओ तो।"

लौरैन्स बोला — "अगर वह जगह यहाँ से बहुत दूर नहीं है तो मैं तुम्हारी शर्त मान लेता हूँ।"

डबल रोटी बनाने वाला बोला — "ओह नहीं नहीं, वह तो यहाँ से एक मील दूर भी नहीं है। शाम होने तक तुम यहीं रहो। रात में तुम उस कब्रिस्तान में जाना। वहाँ पर एक पुराना चर्च है। निशानी के तौर पर तुम वहाँ से मुझको वहाँ रखा हुआ एक प्याला ला कर दे देना।"

डबल रोटी बनाने वाले ने जब यह शर्त उसके सामने रखी थी तब उसे पूरा विश्वास था कि शर्त वही जीतेगा क्योंकि उस कब्रिस्तान में एक भूत रहता था और वहाँ जो कोई भी जाने की कोशिश करता था वह भूत उसको मार डालता था।

रात हुई तो लौरैन्स अपनी तलवार ले कर उस कब्रिस्तान में पहुँचा। वह चर्च के दरवाजे तक पहुँच गया। अपनी तलवार की नोक मार कर उसने चर्च का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही उसमें से लम्बे सींगों वाला एक बड़ा काला बकरा निकला।

लौरैन्स ने तुरन्त ही उस पर तलवार से वार किया तो बकरा तो भाग गया पर वह जगह उसके खून से लाल हो गयी। लौरैन्स अन्दर चला गया, उसने वहाँ रखा प्याला उठाया और ला कर डबल रोटी वाले को दे दिया। इस तरह लौरैन्स शर्त जीत गया।

डबल रोटी वाले ने पूछा — "भाई, तुमने वहॉ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, मुझे वहॉ पर एक बड़ा काला बकरा दिखायी दिया था। उसको मैंने तलवार से मारा तो बकरा तो भाग गया पर तलवार के वार से उसका काफी खून बह गया। इतना कि उसमें एक नाव तैर सकती थी। मुझे लगता है कि वह बकरा तो अब तक कभी का मर गया होगा।"

सबेरा होते ही डबल रोटी वाले ने काफी लोगों को इकट्ठा किया और चर्च की तरफ चला तो वहॉ वाकई काफी सारा खून पड़ा पाया। यह सब देख कर वह पादरी के पास पहुँचा और उसको बताया कि अब चर्च में काला बकरा नहीं है।

पादरी को तो विश्वास ही नहीं हुआ सो वह खुद चर्च गया और वहॉ जा कर देखा तो वास्तव में अब वहॉ कोई काला बकरा नहीं था सो वह तो बहुत ही खुश हो गया। क्योंकि जब भी वह वहॉ पूजा किया करता था वह काला बकरा आ कर उसकी पूजा की सारी चीज़ें इधर उधर कर दिया करता था।

आज उस पादरी ने निडर हो कर बिना किसी रोक टोक के पूजा की और लौरैन्स को खास आशीर्वाद दिया और साथ ही उसको पचास पौंड और भी दिये।

अगले दिन लौरैन्स फिर से अपने सफर पर निकल पड़ा। सारा दिन वह सफर करता रहा पर उसे कोई घर ही नहीं दिखायी पड़ा। आधी रात के समय वह एक सुनसान अकेली घाटी में आ गया।

आसमान में पूरा चॉद खिला हुआ था। उसकी रोशनी पूरी घाटी में फैली पड़ी थी।

उसी रोशनी में उसने देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग इकट्ठा हैं और वे दो आदमियों को भागते हुए देख रहे थे। इतने में उन दो आदमियों में से एक आदमी ने एक गेंद लौरैन्स की छाती में मारी।

लौरैन्स का हाथ तुरन्त ही अपनी छाती की तरफ चला गया ताकि वह उस गेंद को वहॉ से निकाल सके पर वहॉ तो गेंद नहीं थी बल्कि कुछ और ही था – वहॉ तो एक आदमी का सिर था।

लौरैन्स ने उस सिर को ही पकड़ लिया तो वह सिर चीखने लगा और बोला — "क्या तुमको मुझसे डर नहीं लग रहा है?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, मुझे तुमसे डर क्यों लगेगा?" और लौरेन्स के ये शब्द बोलते ही वहॉ उसको दिखायी देने वाला सब कुछ गायब हो गया और वह फिर से उस चॉदनी भरी घाटी में अकेला खड़ा रह गया।

चलते चलते वह एक दूसरे शहर में आया। वहॉ घूमते घूमते वह सड़क के किनारे बने एक बड़े से घर के सामने रुक गया। रात होने वाली थी सो वह रात को वहीं सोना चाहता था।

तभी एक नौजवान घर में से बाहर निकला और उससे पूछा — "क्या चाहते हो भाई?"

लौरैन्स बोला — "मैं एक ऐसी चीज़ की तलाश में हूँ जिससे मैं डर जाऊँ।"

वह नौजवान बोला तब तुमको दूर जाने की जरूरत नहीं है।"

कह कर वह उसको अपने सामने वाले घर में ले गया और बोला — "देखो, इस मकान में नीचे एक तहखाना है। वहाँ जा कर तुम अपने लिये आग जला लो। मैं तुम्हें खूब सारा खाना पीना भेज देता हूँ। अगर तुम सुबह तक वहाँ रह गये तो मैं तुमको पचास पौंड दूँगा।"

लौरैन्स बोला "मैं तैयार हूँ।"

इतना कह कर लौरैन्स नीचे तहखाने में चला गया और वहाँ जा कर उसने आग जलायी। तभी एक लड़की उसके लिये खूब सारा खाना और शराब की बोतलें ले कर आ गयी। लौरैन्स ने आराम से खाना खाया और सोने के लिये लेट गया।

आधी रात के करीब वहाँ एक घोड़ा और साँड़ आ गये और आपस में लड़ने लगे। लौरैन्स ने कुछ नहीं कहा, बस वह केवल उनकी लड़ाई देखता रहा। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो वे चले गये। उधर लौरैन्स भी सो गया।

सुबह उस नौजवान ने ही आ कर उसे उठाया। उस नौजवान को लौरैन्स को ज़िन्दा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने पूछा — "क्या तुमने रात को यहाँ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था। एक घोड़ा और एक सॉड़ आये और आपस में लड़ने लगे। वे करीब करीब दो घंटे तक लड़ते रहे फिर चले गये।"

उस नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

लौरेन्स बोला "नहीं।"

वह नौजवान बोला — "अगर तुम आज रात को यहॉ और रुको तो मैं तुम्हें पचास पौंड और दूँगा।" लौरैन्स इसके लिये भी राजी हो गया।

रात दस बजे लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था कि वहॉ दो काले बकरे आये और आ कर लड़ने लगे। लौरैन्स आज भी उनकी लड़ाई केवल देखता रहा, कुछ किया नहीं। रात को बारह बजे के बाद वे भी चले गये।

अगले दिन उस नौजवान ने आ कर पूछा — "क्या कल रात तुम्हें कुछ दिखायी दिया?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, कल रात यहॉ दो काले बकरे आये थे। वे भी लड़ते रहे और फिर चले गये।"

नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

"नहीं तो।"

नौजवान बोला — "अच्छा, तो आज की रात तुम और रुको और मैं तुमको कल पचास पौंड और दूँगा।"

सो तीसरी रात जब लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था तो एक बूढ़ा वहॉ आया। यह वही बूढ़ा था जो लौरैन्स के पास तब आया था जब वह अपनी मॉ की कब्र की रखवाली कर रहा था और जिसने उसे खजाने की खोज में यात्रा पर भेजा था।

वह लौरेन्स से बोला — "तुम आयरलैंड के सबसे अच्छे आदमी हो। मुझे मरे हुए बीस साल हो गये तबसे आज तक मैं तुम्हारे जैसे आदमी की तलाश में हूॅ।

आओ मैं तुमको खजाना दिखाता हूॅ। तुम्हें याद है न? जब तुम अपनी मॉ की कब्र की पहरेदारी कर रहे थे तब मैंने तुमसे कहा था कि एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आज वह समय आ गया है।"

वह लौरेन्स को और भी नीचे वाले तहखाने में ले गया और सोने से भरा एक बड़ा सा बर्तन दिखाते हुए बोला — "यह सब खजाना तुम्हारा है अगर बीस पौंड तुम मेरी विधवा पत्नी मैरी को दे दोगे और उससे मेरी की हुई एक गलती की माफी मॉग लोगे।

उसके बाद तुम यह घर खरीद लेना और मेरी बेटी से शादी कर लेना। फिर तुम ज़िन्दगी भर खुश और अमीर रहना।"

सबेरे वह नौजवान फिर आया और लौरैन्स से पूछा कि क्या उसने वहॉ रात में कुछ देखा था?

इस बार लौरेन्स बोला — "हॉ, देखा था और यह पक्की बात है कि इसमें हमेशा ही भूत रहेगा। पर दुनियॉ की कोई भी चीज़ मुझे

किसी से भी नहीं डरा सकती। मैं यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन खरीदना चाहता हूँ।"

नौजवान बोला — "मैं यह घर तो तुम्हें मुफ्त दे दूँगा पर इसके चारों तरफ की जमीन तुम्हें एक हजार पौंड से कम में नहीं दूँगा और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास इतने पैसे होंगे नहीं।"

लौरैन्स बोला — "मेरे पास इतना सारा पैसा है जिसका तुम्हें अन्दाजा भी नहीं है। मुझे मंजूर है।"

जब उस नौजवान को यह पता चला कि लौरैन्स इतना ज़्यादा अमीर है तो उसने लौरैन्स को अपने घर खाने की दावत दी। लौरेन्स उसके घर गया। वहाँ जब उस बूढ़े की लड़की ने उसको देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

लौरेन्स फिर मैरी के घर गया। वहाँ उसने उसे बीस पौंड दिये और उस बूढ़े की गलती के लिये माफी माँगी। फिर उसने उस नौजवान की बहिन के साथ शादी कर ली और खुशी खुशी रहने लगा। जितने दिन भी वह ज़िन्दा रहा कभी किसी से डरा नहीं।

13 कवि शौनचन और बिल्लियों का राजा[57]

जब कवि शौनचन[58] को आयरलैंड का कविराज घोषित किया गया तो कौनौट के राजा गुऐर[59] ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें देश के टीचर, विद्वान, कलाकार, वैज्ञानिक आदि सबको बुलाया गया था।

राजा ने सबकी मेहमानी का खूब अच्छा इन्तजाम कर रखा था। रोज वह सबसे जा कर पूछता — "आप सब ठीक तो हैं न?" पर फिर भी वे सब राजा के इन्तजाम से खुश नहीं थे।

वे लोग कुछ ऐसी चीज़ें चाहते थे जिनको राजा जुटा नहीं पा रहा था। इसलिये राजा भी बहुत दुखी था और रोज भगवान से प्रार्थना करता था कि वह उसको उनके नाखुश होने से बचाये। फिर भी वह दावत तीन दिन और तीन रात चली और लोगों ने खूब खाया और खूब पिया।

कवि शौनचन बहुत दुखी था। वह न कुछ खा रहा था और न कुछ पी रहा था क्योंकि वह कौनौट के दरबारियों से बहुत जलता था और जब वह यह देखता कि वे सबसे अच्छा मॉस और शराब खा पी रहे थे तो उसने यह घोषणा कर दी कि जब तक उन

[57] Poet Seanchan and the King of Cats – a folktale from Ireland, Europe
[58] Seanchan – name of the poet
[59] King Guair of Connaught town

दरबारियों और उनके नौकरों को उस घर से नहीं भेज दिया जायेगा वह न कुछ खायेगा और न कुछ पियेगा।

और जब गुऐर ने उनसे फिर पूछा — "आप सब लोग ठीक तो हैं न?"

तो शौनचन ने जवाब दिया — "इससे पहले मैंने इतने बुरे दिन और इतनी खराब रातें कभी नहीं बितायीं और न ही इतना खराब खाना खाया।" और सचमुच ही उसने पूरे तीन दिन तक कुछ भी नहीं खाया था।

राजा बहुत दुखी हुआ। उसके दूसरे मेहमान तो सब आनन्द मना रहे थे और उसका जो खास मेहमान था जिसके लिये इस दावत का इन्तजाम किया गया था वह उपवास कर रहा था।

यह देख कर राजा ने अपने सबसे प्रिय और सबसे ज़्यादा होशियार नौकर को बुलाया और उसको कविराज के पास खास खाना ले जाने के लिये कहा। वह वह खास खाना ले कर कविराज के पास गया।

शौनचन ने उसे देखते ही कहा — "इस सबको ले जाओ यहॉ से। मैं इसमें से कुछ भी नहीं खाऊॅगा।"

नौकर बड़ी नम्रता से बोला — "ऐसा क्यों हुजूर?"

शौनचन बोला — "क्योंकि तुम साफ आदमी नहीं हो। तुम्हारे दादा जी के हाथों के सब नाखून टूटे हुए थे। मैंने उनको देखा है।

ऐसी हालत में मैं तुम्हारे हाथ का खाना तो बिल्कुल नहीं खा सकता।"

राजा ने फिर एक सुन्दर लड़की को बुलाया और उसको कविराज के पास खाना ले जाने के लिये कहा पर जब शौनचन ने उसे देखा तो कहा — "तुमको यहाँ किसने भेजा है और तुम यह खाना मेरे लिये क्यों लायी हो?"

लड़की बोली — "मालिक, मुझे राजा ने भेजा है। क्योंकि मैं बहुत सुन्दर हूँ इसलिये राजा ने कहा कि मैं खुद अपने हाथों से आप को खाना खिलाऊँ।"

शौनचन बोला — "ले जाओ यह सब। तुम बिल्कुल भी सुन्दर नहीं हो। तुमसे ज़्यादा बदसूरत तो मैंने और कोई देखा ही नहीं। एक दिन तुम्हारी दादी दीवार पर बैठी राह चलते कोढ़ी को उँगली दिखा रही थी। मैं तुम्हारे हाथ का खाना तो छू भी नहीं सकता।"

इस पर राजा गुऐर बहुत नाराज हुआ और बोला — "मैं उन होठों को शाप देता हूँ जिन्होंने ऐसा कहा। उसके मरने से पहले उन होठों को कोई कोढ़ी जरूर चूमेगा।"

वहाँ खड़ी एक नौकरानी यह सब सुन रही थी। वह शौनचन से बोली — "एक जगह एक मुर्गी का अंडा रखा है कविराज। अगर आप कहें तो मैं आपके लिये वह अंडा ला दूँ?"

शौनचन बोला — "ठीक है वही ला दो। मैं उसी से अपना काम चला लूँगा।" पर जब वह वह अंडा लाने गयी तो वह अंडा तो अपनी जगह पर नहीं था।

कविराज बोले — "लगता है कि वह अंडा तूने ही खाया है।"

नौकरानी गिड़गिड़ाते हुए बोली — "नहीं मालिक, लगता है कि कोई चुहिया उसको ले गयी है।"

इस पर शौनचन बोला — "अगर ऐसा है तो मैं उन चुहियों पर एक व्यंग्य वाली कविता लिख दूँगा।"

और जब कविराज ने ऐसी एक कविता लिखी तो उसके असर से बहुत सारी चुहियें तो उसके सामने ही मर गयीं।

शौनचन बोला — "यह सब तो ठीक है पर वास्तव में बिल्ला ही इस सबका जिम्मेदार है क्योंकि उसको चुहियों को दबा कर रखना चाहिये था इसलिये अब मैं बिल्लियों के राजा पर व्यंग्य वाली कविता लिखूँगा।

"ओ इरूसन[60], तुम चूहों को मारते तो हो परन्तु उनको छोड़ भी देते हो। ओ कमजोर बिल्ले, तुम सबको तो अपनी मूँछें नीची कर लेनी चाहिये क्योंकि तुमने चूहों को जरूरत से ज़्यादा आजादी दे रखी है और वे तुम्हारी हँसी उड़ा रहे हैं।"

[60] Irusan – name of the King of cats

इरूसन अपने घर में बैठा बैठा उसकी यह व्यंग्य वाली कविता सुन रहा था। वह अपनी बेटी से बोला — "शौनचन ने मेरी खिल्ली उड़ायी है मैं उससे इसका बदला जरूर लूँगा।"

बेटी बोली — "पिता जी, आप उनसे बदला न लें बल्कि उन्हें यहाँ ज़िन्दा ही ले आयें ताकि हम सब उनसे अपना बदला ले सकें।"

इरूसन को अपनी बेटी की बात समझ में आ गयी। वह बोला — "तुम ठीक कहती हो बेटी। अच्छा ऐसा करो, अपने भाइयों को बोलो कि वे भी मेरे साथ चलें।"

इधर जब शौनचन ने सुना कि बिल्लियों का राजा उसे पकड़ने आ रहा है तो वह घबरा गया। उसने राजा गुएर और वहाँ पर मौजूद सभी दरबारियों से प्रार्थना की कि वे सब उसके पास रहें और बिल्लियों के राजा से उसकी रक्षा करें क्योंकि वह उसको पकड़ने आ रहा था।

इतने में ही उनको किसी के आने की बड़ी ज़ोर की आवाज सुनायी देने लगी और जल्दी ही बिल्लियों का राजा उनको आता भी दिखायी देने लगा। वह बिल्ला उन लोगों को बैल जितना बड़ा दिखायी दे रहा था।

वह बिल्ला बहुत गुस्से में भरा था। वह हाँफ रहा था, उसके कान खड़े हुए थे और उसके तेज़ दाँत बाहर निकले हुए थे। वह वहाँ खड़े हुए लोगों की तरफ बिल्कुल भी ध्यान न देते हुए सीधा

कवि शौनचन के पास जा पहुँचा। उसने शौनचन की बाँह पकड़ कर उसको अपनी पीठ पर लादा और अपने घर की तरफ चल दिया।

शौनचन तो कवि था सो रास्ते में उसने बिल्लियों के राजा की तारीफ करनी शुरू कर दी — "ओ इरूसन, तुम कितने बड़े हो, तुम्हारी कूद कितनी शानदार है, ताकतवर है और सुन्दर है।

परन्तु मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? ओ इरूसन, ओ अरूसन[61] के बेटे, मुझे छोड़ दो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, ओ बिल्लियों के राजा।"

परन्तु इरूसन के कानों पर इस तारीफ का कोई असर नहीं हुआ। वह सीधा क्लौनमैकनोइज़[62] आ गया जहाँ सेन्ट कीरन[63] दरवाजे पर खड़ा उसका इन्तजार कर रहा था।

सेन्ट उसको देखते ही बोला — "अरे यह क्या? ऐरिन[64] का महाकवि बिल्ले की पीठ पर? क्या राजा गुएर की उदारता बिल्कुल ही खत्म हो चुकी है?"

और यह कहता हुआ वह भट्टी में से लोहे का गरम डंडा निकाल लाया और उसको उस बिल्ले के ऊपर ऐसे मारा कि वह बिल्ले के शरीर के पार हो गया और बिल्ला वहीं गिर कर मर गया।

कवि बोला — "बिल्ले को मारने वाले को मैं शाप देता हूँ।"

---

[61] Arusan – name of the father of the King of Rats

[62] Clonmacnoise

[63] Saint Kieran

[64] Erin – a place in Ireland

सेन्ट कीरन बोला — "मगर क्यों?"

कवि बोला — "क्योंकि मैं इरूसन के हाथों मारा जाना और उसके द्वारा खाया जाना ज़्यादा पसन्द करता ताकि यह राजा गुऐर को बदनाम करता कि उसने मुझे कितना खराब खाना खिलाया क्योंकि यह सब उसी की वजह से हुआ।"

यह सब जब और दूसरे राजाओं ने सुना तो उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनके दरबार में आ जाये लेकिन शौनचन कहीं नहीं गया। वह सीधा "कवियों के घर" चला गया जहॉ हमेशा ही अच्छा रहना सहना था।

जितने दिन वह वहॉ रहा उन सबका सरदार बन कर रहा। सारे दरबारी उससे नीचे बैठते थे। कुछ दिनों बाद राजा गुऐर से भी उसकी दोस्ती हो गयी। उन्होंने फिर वहॉ तीस दिन तक आनन्द मनाया।

आयरलैंड की कुछ और लोक कथाऐं

ये सब कहानियॉ एक वैव साइट से ली गयी हैं।

14 जैमी फ्रील और एक नौजवान स्त्री[65]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि फ़ैनैट[66] में जैमी फ्रील और उसकी मॉ रहा करते थे। जैमी की मॉ का जैमी के अलावा और कोई सहारा नहीं था। जैमी की मजबूत बॉहें अपनी मॉ के लिये हमेशा काम करती रहतीं।

जब भी शनिवार की रात आती तो वह अपनी सारी कमाई ला कर अपनी मॉ की झोली में डाल देता। मॉ भी उसकी सारी कमाई ले कर उसको आधा पैन्स उसके तम्बाकू के लिये वापस कर देती जिसके लिये वह अपना फर्ज समझ कर हमेशा उसको धन्यवाद दे देता।

उसके पड़ोसी लोग उसकी बहुत बड़ाई करते और उसको सबसे अच्छा बेटा कह कर उसकी सराहना करते कि इतना अच्छा बेटा उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में कहीं देखा नहीं अऐर कहीं सुना नहीं।

पर उसके कुछ ऐसे पड़ोसी भी थे जो उसको गॅवार कहते थे। ये पड़ोसी उसके बहुत ही पास रहते थे पर उसने उनको देखा कभी नहीं था। जो दुनियॉ के लोगों को भी शायद ही कभी नजर आते हों सिवाय मई की शामों के या फिर हैलोवीन के त्यौहार[67] के दिन।

---

[65] Jamie Freel and the Young Lady. A folktale from Ireland : http://oaks.nvg.org/irtales1-2.html#jaldy

[66] Fennet – name of a place

[67] Halloween (a contraction of Hallows' Even or Hallows' Evening), is a celebration observed in several countries on 31 October, the eve of the Western Christian feast of All Hallows' Day.

उसके अपने घर से करीब दो फर्लांग की दूरी पर एक पुराना टूटा फूटा किला था जहॉ ऐसे अजीब आदमियों का घर था। हर हैलोवीन को उस किले की हर खिड़की में रोशनी हो जाती और आस पास से गुजरने वाले उनमें से लोगों को आते जाते देखते और साथ में पाइप और बॉसुरी पर बजाया गया संगीत भी सुनते।

यह तो सभी को मालूम था कि वहॉ परियॉ[68] आनन्द मनाया करते थे पर किसी को उनमें जाने की हिम्मत नहीं होती थी।

जैमी अक्सर ही उन छोटी छोटी शक्लों को दूर से देखता उनके संगीत को सुनता और सोचता रहता कि उनका वह किला अन्दर से कैसा होगा पर उसको यह कभी ठीक से देखने का मौका नहीं मिला था।

एक हैलोवीन को वह उठा उसने अपनी टोपी उठायी और अपनी मॉ से बोला — "मॉ मैं अपनी किस्मत आजमाने किले जा रहा हूँ।"

मॉ ज़ोर से चिल्लायी — "वहॉ तुम क्या करने जा रहे हो। तुम जो एक विधवा मॉ के अकेले बेटे हो। तुम इतने ज़्यादा भी उत्साही और बेवकूफ मत बनो जैमी। वे तुम्हें मार डालेंगे फिर मेरा क्या होगा।"

जैमी बोला — "डरो नहीं मॉ। मुझे कुछ नहीं होगा बल्कि मैं खुशी खुशी घर वापस आऊँगा। तुम देखना।"

[68] Fairies – fairies can be both male or female

कह कर वह वहॉ से चल दिया। उसने आलू का खेत पार किया और किले को सामने आ पहुँचा। उसकी सब खिड़कियों में रोशनी हो रही थी। जिसमे आलू के खेत में आलू के पेड़ों के पत्ते के सोने की तरह से हिलते चमकते दिखायी दे रहे थे।

वह किले के एक तरफ पेड़ों के एक झुंड में जा कर खड़ा हो गया। वहॉ खड़े खड़े उसने उन छोटे लोगों के आनन्द मनाने की आवाजें सुनीं। हॅसी की गाने की आवाजों ने उसे सहारा दिया कि वह आगे बढ़े।

बहुत सारे छोटे लोग थे और उनमें सबसे बड़ा एक था जो एक पॉच साल के बच्चे जितना बड़ा था सभी पाइप और बॉसुरी की धुन पर नाच रहे थे। जबकि दूसरे लोग खाने पीने में मस्त थे।

अपने घर में मेहमान को देख कर वहॉ के सारे लोग चिल्लाये — "आओ जैमी फ्रील आओ।" लोगों ने "आओ" शब्द पकड़ लिया और सब लोग "आओ आओ" बुलाने लगे।

समय उड़ने लगा और जैमी वहॉ आनन्द मनाता रहा। जैमी के मेजबान ने कहा — "हम लोग आज एक नौजवान लड़की को उठा लाने के लिये डबलिन[69] जा रहे हैं क्या तुम हमारे साथ चलोगे?"

जैमी फ्रील बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

कुछ घोड़े बाहर खड़े हुए थे। जैमी बाहर जा कर अपने घोड़े पर बैठ गया। उसके बैठते ही उसका घोड़ा हवा में उड़ने लगा।

[69] Dublin – is the largest city and the capital of Ireland, built by Vikings.

वह इस समय अपने घर के ऊपर से उड़ रहा था उसके चारों तरफ उसके साथियों के घोड़े उड़े जा रहे थे।

उन्होंने कई पहाड़ पार किये, कई छोटी पहाड़ियों के ऊपर से उड़े, कई घाटियों से गुजरे, शहरों और मकानों के ऊपर से गये जहॉ लोग गिरियॉ भून रहे थे सेब खा रहे थे और हैलोवीन मना रहे थे। जैमी को ऐसा लगा जैसे मानो डबलिन पहुॅचने से पहले पहले वह हर जगह उड़ आया हो।

परियों में से एक ने एक कैथेड्रल[70] के ऊपर से उड़ते हुए कहा — "यह डैरी[71] है।" जो कुछ एक ने कहा वह सारे लोगों ने दोहरा दिया। पचास लोगों की आवाजें "डैरी डैरी डैरी" चिल्ला रही थीं।

इस तरह से जैमी को हर शहर आदि का नाम पता चला जो वहॉ से डबलिन के रास्ते में पड़ते थे। कुछ ही देर में वे आवाजें चिल्लायीं — "डबलिन डबलिन जिसे वाइकिंग्स[72] ने बनाया था।"

परियॉ वहॉ बने किसी और मकान में जाना नहीं चाहते थे केवल स्टीफैन्स ग्रीन[73] में बने हुए एक बहुत ही शानदार मकान के अन्दर। वहॉ पहुॅच कर सब लोग एक खिड़की के पास उतरे। जैमी ने एक बहुत ही सुन्दर बिस्तर पर एक तकिये पर रखा सुन्दर मुखड़ा देखा।

---

[70] Cathedral is a big church

[71] Derry

[72] Vikings were Scandinavians (present day Denmark, Sweden and Norway), who from the late 8th to late 11th centuries, raided and traded from their Northern European homelands across wide areas of Europe, and explored westwards to Iceland, Greenland, and Vinland.

[73] Stephen's Green – a place in Dublin

उसने देखा कि उस नौजवान स्त्री को उठा लिया गया और वहॉ से ले जा गया। जबकि उस लड़की की जगह एक डंडी छोड़ दी गयी जिसने तुरन्त ही उसी लड़की जैसी शक्ल ले ली।

उस स्त्री को एक सवार के आगे बिठा लिया गया और उसे कुछ दूर तक ले जाया गया फिर उसे किसी और को दे दिया गया।

वे सब लोग फिर से शहरों के नाम बोलते हुए वहॉ से चले गये। अब वे लोग घर पहुॅचने ही वाले थे कि जैमी ने सुना "रथमुलन, मिलफोर्ड, टैम्ने।"[74] इसके बाद वे अपने घर थे।

जैमी बोला — तुम सब लोगों ने इस लड़की को एक एक कर के उठाया तुम लोगों ने उसे मुझे दे कर थोड़ा आराम क्यों नहीं किया।"

वे बोले — "ए जैमी तुम भी उसको ले जाने का अपना हिस्सा यकीनन लोगे।"

जैमी ने उस लड़की को ले लिया और अपने घर के पास उतर गया। बाकी के लोग बोले —"यह क्या जैमी तुम क्या इस तरह से हमसे व्यवहार करते हो।" कह कर वे भी वहीं उतर गये।

जैमी ने अपने हाथ में ली हुई चीज़ को कस कर पकड़ा हुआ था हालॉकि उसको यह पता नहीं था कि वह क्या पकड़े हुए था क्योंकि उन छोटे लोगों ने उसको कई प्रकार की शक्लों में बदल दिया था।

[74] Rathmullan, Milford, Temne – all are the names of places

किसी पल तो वह एक काला कुत्ता थी भौंकती हुई और उसको काटने की कोशिश करती हुई। किसी दूसरे पल में वह एक आग से जलता हुआ लोहे का डंडा थी जिसमें कोई गर्मी नहीं थी। फिर वह ऊन की एक बोरी बन गयी।

फिर भी जैमी उसको कस कर पकड़े ही रहा और परेशान परियॉ उससे दूर हटने लगे। तभी एक सबसे छोटी स्त्री बोली — "जैमी फील उसको हमसे दूर ले गया है पर वह अब उसके किसी काम की नहीं है क्योंकि मैं उसे बहरा और गूँगा बना दूँगी।" कह कर उसने कुछ उस नौजवान लड़की के ऊपर फेंक दिया।

जबकि वे सब अपने घर निराश हो कर लौटे जैमी ने अपने घर का ताला खोला।

उसके देखते ही उसकी मॉ चिल्लायी — "ओह जैमी तुम आ गये। तुम तो सारी रात बाहर ही रहे। उन्होंने तुम्हारे साथ क्या किया। कुछ बताओ तो।"

जैमी बोला — "मॉ उन्होंने मेरे साथ कुछ बुरा नहीं किया। मेरी तो किस्मत बहुत अच्छी थी। लो यह एक सुन्दर लड़की है जिसे मैं तुम्हारे साथ के लिये ले आया हूँ।"

मॉ बोली — "भगवान हमारा भला करे और हमारी रक्षा करे।" कुछ देर के लिये तो वह इतनी आश्चर्य में पड़ी रह गयी कि इसके बाद उसे क्या बोलना चाहिये उसे कुछ समझ ही नहीं आया।

जैमी ने उसको अपनी उस रात की कहानी सुना कर कहा — "यकीनन तुम तो मुझे उस रात को उनके साथ जाने ही नहीं देतीं ताकि मैं हमेशा के लिये न खो जाऊँ।"

जैमी की मॉ बोली — "पर बेटा जैमी। वह तो एक बड़े घर की बेटी है वह हम गरीबों के घर का खाना कैसे खायेगी। और हम गरीबों की तरह से कैसे रहेगी। ओ बेवकूफ लड़के मैं तुझसे पूछती हूँ।"

जैमी बोला — "पर मुझे लगता है मॉ कि यह बजाय उस किले में रहने के यहॉ ज़्यादा सुख से रहेगी।"

इस बीच वह गूँगी बहरी लड़की जो बहुत ही हल्के कपड़े पहने हुए थी कॉप उठी सो उसको आग के पास ले जाया गया। बेचारी लड़की वह बहुत कोमल और सुन्दर थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उनका दिल उस पर आ गया था।

वह उसकी तरफ देर तक प्यार से देखती रही फिर बोली — "हम आदमी लोग पहले इसको कपड़े पहनाते हैं पर मैं इसके पहनने के लिये लिये इसकी पसन्द के कपड़े कहॉ से लाऊँ।"

कह कर वह अपने कमरे में गयी और चर्च में पहनने लायक कत्थई रंग का एक गाउन निकाल लायी। फिर उसने एक ड्रौअर खोली और उसमें से एक जोड़ी मोजे निकाले एक सफेद रंग की लिनन की लम्बी पोशाक निकाली और एक टोपी निकाली।

वह इस पोशाक को अपने "मर जाने पर पहनने वाली पोशाक" बोलती थी निकाली। इसको उसने एक खास दुख वाले मौके पर पहनने के लिये रखा हुआ था जिसमें वह एक खास काम करने वाली थी। जब भी वह उनको हवा दिखाने के लिये बाहर लटकाती तो उसे कुछ रोशनी नजर आती

पर वह इन कपड़ों को इस सुन्दर लड़की को देने को भी तैयार हो गयी जो कभी अपनी कॉपती ऑखों से कभी उसको और कभी जैमी को देख रही थी।

उस लड़की को वे कपड़े पहनने में बहुत तकलीफ हुई फिर वह चिमनी पास वाले कोने में बैठ गयी और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।

बुढ़िया कुछ रोती हुई सी बोली — "बेटी हम तुम्हें अपने घर में रखने के लिये क्या करें।"

जैमी बोला — "मॉ मैं तुम दोनों के लिये काम करूॅगा।"

उसकी मॉ ने फिर कहा कि "यह कुलीन लड़की हमारे यहॉ मिलने वाला खाना कैसे खायेगी।"

जैमी बस इतना ही बोल सका — "मॉ मैं इसके लिये काम करूॅगा।"

उसने अपना वायदा रखा। वह लड़की कुछ दिनों तक तो वहॉ बहुत दुखी रही। वह वहॉ रोती रहती। कई शाम बुढ़िया वहॉ बैठ

कर सूत कातती रहती, जैमी वहॉ बैठ कर सैमौन मछली[75] पकड़ने के लिये जाल बनाता रहता जो उसने अभी अभी सीखा था ताकि वह अपने मेहमान को आराम से रख सके।

वह लड़की हमेशा ही बहुत ही नम्र व्यवहार करती थी। जब भी वह उनको अपनी तरफ देखते हुए देखती तो वह धीमे से मुस्कुरा देती। धीरे धीरे उसने उन लोगों के तौर तरीके अपना लिये। जल्दी ही उसने सूअर को खाना खिलाना, आलू मसलना, मुर्गियों को खाना खिलाना और नीले रंग के मोजे बनाना भी सीख लिया।

इस तरह से एक साल गुजर गया। हैलोवीन फिर से आ गयी। जैमी ने अपनी टोपी उतारते हुए अपनी मॉ से कहा — "मॉ मैं अपनी किस्मत आजमाने के लिये किले में फिर से जाना चाहता हूॅ।"

उसकी मॉ बोली — "जैमी क्या तुम पागल हो गये हो। जो कुछ तुमने उनके साथ पिछले साल किया था उसके लिये इस बार वे लोग तुम्हें तुम्हें यकीनन मार देंगे।"

पर जैमी कहॉ सुनने वाला था। उसने मॉ को समझाया और किले की तरफ चल दिया। जब वह पहले की तरह से पेड़ों के झुंड के पास पहुॅच गया तो उसने फिर किले की खिड़कियों से रोशनी आती देखी और ज़ोर ज़ोर से बातें करने की आवाज सुनी।

[75] Salmon fish

उसने सुना वे कह रहे थे — "पिछले साल जैमी फ्रील ने हमारे साथ बहुत ही कमजोर चाल खेली जब उसने हमसे उस सुन्दर लड़की को चुरा लिया था।"

छोटी स्त्री बोली — "तो मैंने उसे सजा दे तो दी थी। क्योंकि अब वह वहाँ है और उसकी अँगीठी के पास गूँगी बैठी रहती है। पर जैमी को यह नहीं पता कि इस गिलास की जो मैं इस समय अपने हाथ में पकड़े हुए हूँ तीन बूँदें उसकी सुनने और बोलने की ताकत वापस ला सकती हैं।"

जैमी के दिल की एक धड़कन जैसे कहीं रुक गयी हो। वह तुरन्त ही उनके कमरे में घुसा। पिछली बार की तरह से इस बार भी उसका ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

"आओ जैमी आओ। तुम्हारा स्वागत है जैमी आओ।"

जब स्वागत की आवाज थोड़ी दबी तो छोटी स्त्री बोली — "आओ जैमी तुमको हमारी तन्दुरुस्ती के लिये मेरे गिलास से पीना पड़ेगा।"

जैमी ने तुरन्त ही उसके हाथ से गिलास छीन लिया और दरवाजे की तरफ तीर की तरह से भाग लिया। उसको पता ही नहीं कि वह अपने घर कैसे पहुँचा पर जब वह वहाँ पहुँचा तो बुरी तरह से हाँफ रहा था। घर पहुँच कर वह आग के पास बने एक स्टोव के ऊपर गिर पड़ा।

उसकी मॉ बोली — "इस बार वे तुम्हें जरूर मार देंगे मेरा बेचारा बच्चा।"

जैमी बोला — "नहीं मॉ। इस बार तो मेरी किस्मत बहुत अच्छी रही।"

कह कर आलू के खेत में लगायी गयी दौड़ को तो वह भूल गया और उसने अपने लाये गिलास में से तीन बूँदें लड़की को पिला दीं जो अभी भी उस गिलास की तली में लगी हुई थीं।

लड़की ने बोलना शुरू कर दिया और उसके सबसे पहले शब्द थे "धन्यवाद जैमी।"

उस घर के तीनों लोगों को एक दूसरे को इतना कुछ बताना पूछना था कि वे तीनों उस रात सारी रात जागते रहे और बातें करते रहे।

लड़की ने जैमी से कहा — "मेहरबानी कर के मुझे एक कलम स्याही की दवात और कागज दो दो ताकि मैं अपने पिता को चिट्ठी लिख सकूँ और उनको यह बता सकूँ कि मेरा क्या हुआ।"

उसने चिट्ठी लिखी पर हफ्तों गुजर गये उसका कोई जवाब ही नहीं आया। उसने फिर और भी कई चिट्ठियॉ लिखीं पर उसे किसी का भी जवाब नहीं मिला।

आखिर वह बोली — "तुमको मेरे साथ डबलिन चलना पड़ेगा ताकि हम मेरे पिता को ढूँढ सकें।"

जैमी बोला — "पर तुमको वहॉ ले जाने के लिये मेरे पास इतने पैसे नहीं है कि मैं तुम्हारे लिये एक कार किराये पर ले सकूँ। और वहॉ तक पैदल तुम यात्रा करोगी कैसे।"

पर उस लड़की ने जैमी से इतनी विनती की कि उसने उसको फ़ैनेट से डबलिन अपने साथ पैदल चलने के लिये मना ही लिया। अब यह कोई बहुत आनन्ददायक यात्रा तो नहीं थी पर आखिर वे स्टीफैन्स ग्रीन में बने घर तक पहुँच ही गये और जा कर उनके दरवाजे पर दस्तक दी।

एक नौकर ने दरवाजा खोला तो लड़की ने उससे कहा कि वह अन्दर जा कर कहे कि "आपकी बेटी आयी है।"

नौकर बोला — "पर मैडम यहॉ जो भला आदमी रहता है उसके तो कोई बेटी ही नहीं है। उसके एक बेटी थी पर वह तो एक साल पहले मर गयी।"

"सुलीवान। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते।"

"नहीं ओ लड़की बिल्कुल नहीं।"

"ठीक है तुम मुझे उस भले आदमी से बस मिलवा दो। बस मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि तुम मुझे उससे मिलवा दो।"

"यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है। मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

कुछ ही पलों में उस लड़की का पिता बाहर आया तो लड़की चिल्लायी और उसने उससे पूछा — "प्रिय पिता जी क्या आप अपनी बेटी को नहीं जानते।"

उस भले आदमी ने गुस्से में कहा — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे अपना पिता पुकारने की। लगता है कि तुम उसका रूप बना कर आ गयी हो। मेरे तो कोई बेटी नहीं है।"

"पिता जी मेरी ऑखों में देखिये तब आपको मेरी याद आ जायेगी।"

"मैंने कहा न कि मेरी बेटी मर चुकी है और उसको दफ़नाया भी जा चुका है। उसको मरे हुए बहुत बहुत दिन हो गये।" कहते कहते उस भले आदमी की आवाज में गुस्से की बजाय दर्द और दुख झलकने लगा। "मेहरबानी कर के तुम यहॉ से चली जाओ।"

"ज़रा रुकिये पिता जी। जब तक आप यह अँगूठी मेरी उँगली से न उतार लें। ज़रा देखिये इस पर आपका और मेरा दोनों का नाम लिखा है।"

भला आदमी बोला — "यकीनन यह मेरी बेटी की अँगूठी है पर मैं यह नहीं कह सकता कि यह तुम्हारे पास आयी कैसे। मैं ईमानदारी के रास्ते से नहीं डरता।"

"अच्छा तो मेरी मॉ को बुलाइये वह मुझे देखते ही जरूर पहचान जायेंगीं।" लड़की इस समय तक परेशानी से ज़ोर ज़ोर से रोने लगी थी।

"मेरी पत्नी तो अभी अभी उस दुख को भूलने की कोशिश कर रही है। वह तो अब अपनी बेटी के बारे में कुछ बोलती भी नहीं। मै उसे यहॉ बुला कर उसके दुख को ताजा क्यों करूँ।"

पर लड़की जिद करती रही तो उस भले आदमी को अपनी पत्नी को वहॉ बुलाना ही पड़ा। जैसे ही वह स्त्री दरवाजे पर आयी तो लड़की ज़ोर ज़ोर से चीख कर उससे कहने लगी — "मॉ क्या तुम अपनी बेटी को नहीं पहचान रहीं।"

स्त्री बोली — "मेरे कोई बेटी नहीं है वह बहुत दिन पहले मर चुकी है और दफ़नायी भी जा चुकी है।"

"पर मॉ तुम मेरा चेहरा ध्यान से देखो तो तुम मुझे यकीनन जान जाओगी।"

स्त्री ने अपना सिर ना में हिलाया।

लड़की बोली — "क्या तुम सब लोग मुझे भूल गये हो। अच्छा ठीक है। पर मेरी गरदन पर इस निशान को देखो। मॉ अब तो तुम्हें यकीनन ही मेरी याद आ गयी होगी।"

तब स्त्री ने कहा — "हॉ हॉ। मेरी बेटी ग्रेसी की गरदन पर भी एक निशान तो था पर मैंने तो खुद उसको ताबूत में देखा और उसका ढकना ढके जाते देखा।"

अब जैमी के बोलने की बारी थी। उसने उनको परियों के लड़की को वहॉ से ले जाने वाला पुराना किस्सा बताया। उनको बताया कि कैसे उसने उस लड़की की शक्ल की एक लड़की को

पिछले हैलोवीन के समय दफ़नाते हुए देखा था और फिर कैसे तीन बूँदों ने उसको इस जादू से आजाद कर दिया।

इसके बाद उसने अपनी कहानी रोक दी। उसके बाद लड़की ने वहाँ से कहानी कहना शुरू किया कि उस लड़के और उसकी माँ ने उसकी कितनी अच्छी तरह देख भाल की।

लड़की के माँ बाप को जैमी की बात कुछ पल्ले नहीं पड़ी पर फिर भी उन्होंने जैमी को आदर के साथ बिठाया। और जब उसने वापस फ़ैनै जाने की इजाज़त माँगी तो उन लोगों को यही समझ में नहीं आया कि उसका धन्यवाद कैसे दें।

लेकिन तभी एक और उलझन पैदा हो गयी। उनकी बेटी उसको वहाँ से जाने ही न दे। लड़की ने कहा — "अगर जैमी यहाँ से जायेगा तो मैं भी उसके साथ ही जाऊँगी। उसने मुझे परियों से बचाया है नहीं तो माँ और पिता जी आप लोग मुझे कभी नहीं देख पाते। सो अगर वह यहाँ से जायेगा तो मैं भी इसके साथ ही जाऊँगी।"

लड़की का यह पक्का इरादा देख कर भले आदमी ने यह तय किया कि वह जैमी को अपना दामाद बना ले। जैमी की माँ को फ़ैनेट से एक गाड़ी भेज कर बुलवा लिया गया और फिर वहाँ एक शानदार शादी की तैयारियाँ हुईं।

फिर वे सब डबलिन में एक बहुत बड़ा घर ले कर रहने लगे। और जैमी को अपनी ससुर की मौत के बाद उनकी सारी जायदाद मिल गयी।

15 लालची लोमड़ा[76]

एक बार की बात है कि कौनमारा[77] में एक स्त्री रहती थी। उसका पति एक मछियारा था। क्योंकि उसकी किस्मत बहुत अच्छी थी सो उसकी स्त्री का घर हमेशा किस्म किस्म की मछलियों से भरा रहता था। वह उनको बाजार में बेचने के लिये तैयार रहती।

एक बार तो वह बहुत नाराज हुई जब उसने देखा कि एक लोमड़ा उसकी मछलियॉ खा जाता है। वह रात को किसी समय आता और उसकी सबसी अच्छी मछलियों को खा जाता। सो उसने अपना एक बड़ा सा डंडा लिया और मछलियों के पास उनकी पहरेदारी के लिये बैठ गयी।

एक दिन जब वह एक स्त्री के साथ सूत कात रही थी तो उसका घर में अचानक ही अॅधेरा हो गया और दरवाजा भी अचानक से ही खुल गया जैसे कोई तूफान आया हो। और इसके साथ आया एक बहुत बड़ा लाल लोमड़ा जो सीधा आग के पास गया और फिर घूम कर उन पर चिल्लाया।

पास में ही एक छोटी लड़की मछलियॉ छॉट रही थी बोली — "अरे यह तो लोमड़ा है।"

---

[76] The Greedy Fox. A folktale from Ireland. Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales3-4.html#foxy

[77] Connemara

लोमड़ा बोला — "तू रुक जा मैं सिखाता हूँ तुझे इज़्ज़त करना।" यह कह कर वह उसके ऊपर कूद पड़ा और उसे खरोंच लिया। जहाँ जहाँ उसने उसको खरोंचा था वहाँ वहाँ से उसके खून निकलने लगा।

तब लोमड़ा बोला — "अब समझ में आया तेरी। अब तू आगे से घर आये किसी भी भले आदमी से जो तुझसे मिलने आता है ठीक से बात करेगी।"

कह कर वह दरवाजे की तरफ चला गया और उसे बन्द कर दिया ताकि कोई अन्दर से बाहर न जा सके। वह बेचारी लड़की डर के मारे बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। वह वहाँ से बाहर जाने के लिये बहुत बेचैन होने लगी।

उसी समय वहाँ से एक आदमी गुजर रहा था। उसने रोने चिल्लाने की आवाज सुनी तो उसने दरवाजा खोलने के लिये उसमें धक्का दिया और अन्दर आने की कोशिश करने लगा कि लोमड़ा देहरी पर खड़ा हो गया और वह उसको अन्दर न आने दे। यह देख कर आदमी ने उसे अपने डंडे से बहुत ज़ोर से मारा।

अब लोमड़े से तो उस आदमी का कोई मुकाबला नहीं था। लोमड़ा तुरन्त ही कूदा और आदमी के मुँह पर काट लिया इससे वह आदमी वहाँ से चिल्लाता हुआ जितनी जल्दी हो सकता था भाग लिया।

लोमड़ा बोला — "अब मेरे खाने का समय हो गया है।" कह कर वह मछलियॉ देखने चल दिया जो मेज पर रखी हुई थीं। "मुझे आशा है कि आज की मछलियॉ बहुत अच्छी होंगी। अब मुझे तंग मत करना मैं अपना खाना खाने जा रहा हूॅ और मुझे बीच में टोकना भी नहीं। और वह स्त्री पर गुर्राता हुआ मेज पर कूद गया।

स्त्री चिल्लायी — "ओ बालों वाले जंगली जानवर दूर हट।" और उसने उसको अपने चिमटे से मारा। पर लोमड़ा केवल मुस्कुराया और वहॉ रखी सब मछलियों को फाड़ता और खाता हुआ घूमने लगा।

यह देख कर स्त्री और लड़की दोनों ने उसे डंडे से मारना शुरू कर दिया। पर लोमड़ा उनकी तरफ घूरता रहा फिर वह उन दोनों पर ही कूद पड़ा और उनके सिर और बॉहों को फाड़ दिया। वहॉ से उनके खून निकलने लगा। वे दोनों डर गयीं और घर से बाहर भागने लगीं।

पर स्त्री एक खास किस्म का जादुई पानी[78] ले कर वापस लौटी तो उसने देखा कि लोमड़ा अभी भी उसकी मछलियॉ खा रहा था। वह बेआवाज आगे बढ़ी और बिना कुछ कहे सुने उसने वह पानी उसके ऊपर डाल दिया।

[78] Druid water means Magical water

जैसे ही वह पानी उसने लोमड़े के ऊपर डाला कि वहॉ से बहुत घना काला धुऑ उठने लगा और सारे कमरे में भर गया। सिवाय लोमड़े की दो ऑखों के और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

और वे तो ऐसी दिखायी दे रही थीं जैसे दो जलते हुए अंगारे। पर जब धुऑ साफ हो गया तो लोमड़ा वहॉ से उठ कर भाग गया।

उस दिन के बाद से मछलियॉ खाने वहॉ कोई नहीं आया।

16 बिना मोजे वाली स्त्री[79]

यह करीब 200 साल पुरानी बात है कि मई के महीने में क्वीन्स काउन्टी में रैथडाउनी के पास[80] एक पादरी[81] को आधी रात को जगाया गया कि वह उसके पारिश[82] के किसी दूर के हिस्से में जा कर एक मरते हुए आदमी को देखे।

सो पादरी वहॉ गया और वहॉ जा कर मरते हुए पापी के अन्तिम संस्कार किये और उसे उसका घर छोड़ने से पहले पहले ही इस दुनियॉ को छोड़ते देखा।

क्योंकि अभी भी अँधेरा था तो जिस आदमी ने पादरी को बुलाया था उसने पादरी से कहा कि वह उसे उसके घर छोड़ आता है पर पादरी ने मना कर दिया और अपने घर के लिये अकेला ही चल दिया।

कुछ ही देर में पूर्व में सॉवला सा धुँधलका निकलने लगा। भले पादरी को यह दृश्य बहुत अच्छा लग रहा था। वह अपने घोड़े पर सवार आगे चलता चला जा रहा था और साथ में रास्ते में पड़ने वाली हर चीज़ को भी देखता जा रहा था।

---

[79] The Woman Without Stockings. A folktaled from Ireland. Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales5-6.html

[80] Near Rathdowney in Queen's County – county is like a Muhalla

[81] Translated for the word "Druid" – Druid is a priest, magician or a soothsayer in the ancient Celtic religion.

[82] Jurisdiction of a priest

वह अपने कोड़े से चिमगादड़ों और बड़े बड़े रात वाले कीड़ों को मारता चला जा रहा था जो उसके रास्ते में एक तरफ से दूसरी तरफ को उड़ रही थीं।

इस तरह से इस काम में लगे रहने की वजह से उसकी रफ्तार कुछ धीमी हो गयी। इतने में सूरज की रोशनी भी इतनी तेज़ हो गयी कि धरती की हर चीज़ अब उसको साफ साफ नजर आने लगी।

वह अपने घोड़े से नीचे उतरा और उसने घोड़े की रास हाथ से छोड़ी और अपनी जेब से डायरी निकाली और अपना "मौर्निंग औफिस" पढ़ता जा रहा था।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि उसने अपना घोड़ा देखा तो उसे लगा कि जैसे वह कोई घोड़ा न हो कर कोई आत्मा हो। वह सड़क पर रुक कर एक तरफ एक मैदान की तरफ देख रहा था जहॉ तीन चार गायें चर रही थीं। उसने इस तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और और आगे चल दिया।

इतने में घोड़ा बहुत ही हिंसात्मक हो उठा और इधर उधर भागने लगा। पादरी ने उसको काबू करने की बहुत कोशिश की पर उसको काबू करना उनके लिये बहुत मुश्किल हो गया। उसको काबू करने में उसको पसीना आ गया।

अब घोड़ा शान्त हो गया था पर वह जहॉ था वहॉ से हिलना नहीं चाहता था। कोई डॉट या कोई विनती उसको अपनी जगह से नहीं हिला सकी।

पादरी यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया। पर जितना ज्ञान उसको घोड़ों का था उसके हिसाब से उसने उसकी ऑखों पर पट्टी बॉध कर ले जाने की सोचा।

उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला उसकी ऑखों पर उसे बॉधा और उस पर चढ़ कर उसको धीरे से धक्का दिया। इससे घोड़ा चल तो दिया पर खुशी खुशी नहीं। वह अभी भी आगे जाने में हिचकिचा रहा था। उसको बहुत पसीना आ रहा था।

वे अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि वे एक तंग रास्ते के सामने आ पहुॅचे जिसके दोनों तरफ हैज खड़ी हुई थी। यह तंग रास्ता बड़ी सड़क से ले कर उस मैदान तक जाता था जहॉ वे गायें चर रही थीं।

पादरी की निगाह इस तंग सड़क पर पड़ी तो वहॉ उसने एक ऐसा दृश्य देख लिया जिसको देख कर उसकी नसों में उसका खून जम गया। वहॉ किसी आदमी की केवल दो टॉगें थीं। न तो उसका सिर था और न ही उसका शरीर था। वे उस गली में जल्दी जल्दी चली जा रही थीं।

पादरी तो यह देख कर सन्न रह गया पर काफी बहादुर होने के नाते उसने सोचा जो होता है होने दो वह इस दृश्य को जरूर

देखेगा। सो वह खड़ा हो गया तो उसके साथ में वे चलती हुई टॉगें भी रुक गयीं जैसे वे उसके पास आने से डर रही हों।

पादरी ने जब यह देखा तो वह गली के पास से थोड़ा सा पीछे हट गया। उन टॉगों ने फिर से चलना शुरू कर दिया। जल्दी ही वे टॉगें सड़क पर आ गयीं। पादरी को भी अब उन्हें अच्छी तरह से देखने का मौका मिल गया।

वह हिरन की खाल की ब्रीचेज़ पहने था जो घुटनों पर हरे रिबन से कसी हुई थीं। उसने न तो जूते पहन रखे थे न मोजे। उसकी टॉगे लाल लाल बालों से ढकी हुई थीं और खून और मिट्टी से गीली हो रही थीं। ऐसा लगता था कि गली में आते समय हैजेज़ के कॉटों से वैसी हो गयी थीं।

पादरी हालॉकि डरा हुआ था फिर भी उसकी उसको जॉचने की इच्छा हुई। सो इसलिये उसने बोलने के लिये अपनी सारी ताकत लगा ली थी।

वह भूत उससे थोड़ा सा आगे था और वह थोड़ा तेज़ भी चल रहा था। पादरी भी अपने घोड़े को उसके बराबर ले आया और उससे बोला — "हलो। तुम कौन हो और इतनी सुबह कहॉ जा रहे हो?"

वह बेचारा चुप रहा पर उसने एक भयानक दैवीय आवाज निकाली "उॅह।"

पादरी फिर बोला — "भूतों के घूमने के लिये यह तो बहुत सुन्दर सुबह है।"

उसने फिर से कहा "उॅह।"

पादरी ने फिर पूछा "तुम बोलते क्यों नहीं?"

"उॅह।"

"लगता है कि इस सुबह तुम बात करने के मूड में नहीं हो।"

"उॅह।"

पादरी को इस दैवीय मेहमान के न बोलने पर थोड़ा सा गुस्सा आ गया। वह बोला — "मैं तुम्हें सारे पादरियों का वास्ता देता हूॅ और तुम्हें बोलने का हुक्म देता हूॅ। तुम कौन हो और कहॉ जा रहे हो बताओ।"

इस बार वह और ज़ोर से और पहले से ज़्यादा नाराज हो कर बोला "उॅह।"

पादरी फिर बोला — "शायद मैं अगर तुम्हें एक कोड़ा मारूॅ तो तुम बोल सको।"

ऐसा कह कर उसने उसकी ब्रीच पर बहुत ज़ोर से एक कोड़ा मारा। उसने एक बहुत ज़ोर की चीख मारी और सड़क पर आगे की तरफ गिर पड़ा।

पादरी ने आश्चर्य से देखा कि वहॉ तो बहुत सारा दूध फैला पड़ा था। उसके मुॅह से तो कोई शब्द ही नहीं निकला। गिरा हुआ फैन्टम अभी भी अपने हर हिस्से से दूध निकाले जा रहा था।

पादरी का सिर उसमें तैरने लगा। उसकी ऑखें बन्द होने लगीं। उसके ऊपर कुछ मिनट के लिये एक बेहोशी सी छा गयी।

जब वह होश में आया तो उसकी ऑखों के सामने से यह आश्चर्यजनक दृश्य जा चुका था और उसकी जगह बुढ़िया सैरा कैनेडी[83] उस दूध में लेटी हुई थी।

सैरा कैनेडी उसकी पड़ोसन थी और वह अपने शहर में अपनी जादूगरी[84] और अन्धविश्वासी कामों के लिये बहुत बड़ी शैतान समझी जाती थी। अब पता चल रहा था कि उसने तो एक बहुत बड़े राक्षसी का रूप ले लिया था। उस सुबह उसको गॉवों की गायों को चूसने का काम दिया गया था।

पहले तो वह चुप सा यह दृश्य देखता रहा। वह बुढ़िया रह रह कर कॉप रही थी और कराह रही थी।

कुछ देर बाद पादरी बोला — " सैरा। मैंने तुमसे कितनी बार कहा था कि तुम अपने ये बुरे तरीके छोड़ दो पर तुमने तो मेरी प्रार्थनाओं पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। और अब ओ नीच स्त्री तू यहॉ अपने पापों में पड़ी हुई है।'

बुढ़िया चिल्लाायी — "ओह ओह ओह। क्या तुम मुझे बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। अगर तुम कुछ कर सकते हो तो बस मुझे थोड़ी सी ही सहायता की जरूरत है।"

[83] Sarah Kennedy – name of the neighbor of the Priest
[84] Translated for the word "Witchcraft"

पर जब वह बात कर रही थी तो उसका शरीर फूलता जा रहा था और मरोड़ खाता जा रहा था। उसका चेहरा डूब रहा था। उसकी ऑखें बन्द होती जा रही थीं। कुछ ही मिनटों में वह मर गयी।

यह देख कर पादरी अपने घर की तरफ चल दिया पर अगले घर पर उन सब अजीब हालातों को बताने के लिये रुक गया। सैरा कैनेडी का मरा हुआ शरीर वहॉ से हटा कर उसके घर ले जाया गया जो पास के ही एक जंगल के किनारे पर था।

हालॉकि वह वहॉ बहुत दिनों से रह रही थी पर फिर भी वह उन सबके लिये अजनबी ही थी। वह वहॉ न जाने कहॉ से आयी थी। कोई उसके बारे में कुछ नहीं जानता था। वह अपनी बेटी के साथ आयी थी। उसकी वह बेटी भी अब बहुत बड़ी हो गयी थी। वह उसी के साथ रहती थी।

सैरा के पास केवल एक गाय थी पर वह दूसरे किसानों से कहीं ज़्यादा मक्खन बेचती थी। लोगों को शक था कि वह वह मक्खन किसी नाजायज तरीके से पाती थी। उसको आखीर में उसके घर के पास वाले एक रेत के गड्ढे में दफ़ना दिया गया।

उसकी बेटी बच कर भाग गयी और फिर कभी नहीं देखी गयी।

17 बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियॉ[85]

पैसेज और कौर्क के बीच की सड़क पर[86] एक बहुत पुराना बहुत बड़ा मकान[87] है जिसको रोनेन की कोर्ट[88] कहते हैं। इसको बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि इसमें बहुत सारी चिमनियॉ हैं और बहुत सारे तिकोने हिस्से हैं।

यहॉ मौरिस रोनेन और उसकी पत्नी मारगरेट गोल्ड का घर था। उनका एक ही बेटा था जिसका नाम था फिलिप।[89] यह नाम उन्होंने स्पेन के एक राजा के नाम पर रखा था।

माता पिता को अपने बेटे पर बहुत गर्व था। एक सुबह जब बच्चा केवल सात साल का था वह घर में नहीं था। कोई यह भी नहीं बता सका कि वह कहॉ गया था।

उसको ढूँढने के लिये सब दिशाओं में नौकर भेजे गये – कुछ पैदल कुछ घोड़े पर वे सब बिना उसकी किसी खबर के वापस लौट आये। कोई यह भी नहीं बता सका कि वह वहॉ से कैसे गायब हुआ। उसके ढूँढने वाले को बहुत बड़ा इनाम देने का ऐलान भी किया गया पर फिर भी उसका कोई पता नहीं चला। बरसों बीत गये।

---

[85] The Giant's Stairs. A folktale from Ireland. Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales5-6.html
[86] On the road between Passage and Cork
[87] Translated for the word "Mansion"
[88] Ronayne's Court
[89] Here lived Maurice Ronayne and his wife Margaret Gould and their son Philip

इसी समय कैरीगालीन[90] के पास रोबिन कैली नाम का एक लोहार[91] रहता था। वह एक ऐसा आदमी था जो बहुत सारे काम करता था। पड़ोस के लड़के लड़कियों में उसकी बहुत इज़्ज़त थी। क्योंकि घोड़ों का जूता बनाने के अलावा जो कि वह बहुत अच्छा करता था लोहे के हल भी बनाता था।

वह नौजवान लड़कियों के लिये उनके सपनों का मतलब भी बताता था। उनकी शादियों में "आर्थर ओ ब्रैडले" भी गाया करता था। उसका स्वभाव भी बहुत अच्छा था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि एक दिन रोबिन को खुद को ही एक सपना आया और बच्चा फिलिप उसके सामने उस काली रात में उसके सामने प्रगट हुआ। रोबिन को लगा कि फिलिप एक सफेद घोड़े पर बैठा हुआ है और वह उससे कह रहा है कि एक बड़े साइज़ वाले आदमी महोन मैकमहोन[92] ने उसे अपने पास नौकर रख लिया है। वह उसे दूर ले गया है। उसका दरबार चट्टान के सख्त दिल में लगता था।

मेरी नौकरी के सात साल अब पूरे हो गये हैं। अब मेरा यहाँ का समय खत्म हो गया है सो रोबिन अगर तुम आज की रात मुझे उससे छुड़ा लो तो यह मेरे लिये भी अच्छा होगा और तुम्हारे लिये भी।"

[90] Carrigaline
[91] Robin Kelly blacksmith
[92] The Giant Mahone MacMahone

रोबिन ने सोते में भी चालाकी से काम लिया वह बोला — "मगर मैं यह कैसे जानूँगा कि यह सच है या सपना।"

लड़का बोला — "लो यह निशान लो।" जैसे ही उसने यह कहा कि उसके सफेद घोड़े ने अपने पिछले एक पैर से उसके माथे पर उसे यह सोच कर ज़ोर से मारा जैसे वह कोई लाश हो। रोबिन इतनी ज़ोर से चिल्लाया जैसे उसका दिमाग बाहर निकल आयेगा और जाग गया।

उसने देखा कि वह तो अपने बिस्तर में पड़ा है पर उसके माथे पर घोड़े के पिछले पैर के जूते का एक निशान पड़ा है। वह खून जैसा लाल था। रोबिन कैली ने अपने आपको दूसरों के सपने सुनने पर ऐसी उलझन में पहले कभी नहीं पाया था जैसा कि उसको अपने सपने के बाद लग रहा था। उसको पता नहीं था कि वह अब अपने सपने का क्या मतलब निकाले।

रोबिन उस बन्दरगाह को अच्छी तरह जानता था जिसे "बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियाँ" कहा करते थे। वहाँ बहुत सारी चट्टानें थीं जो एक के ऊपर एक लगी हुई थीं और ऐसा लगता था जैसे वे गहरे पानी में से एक सीढ़ी के रूप में कैरिगमहोन की पहाड़ी[93] के ऊपर जा रही थीं।

[93] Carrigmahon Cliff

वे सीढ़ियॉ ऐसे लोगों के लिये कोई ऐसी बुरी भी नहीं थीं जिनकी टॉगें लम्बी हों। वे एक बीच वाले साइज़ के घर तक जाती थीं जहॉ तक वे एक दो बार की कूद में ही पहुँच जाते थे।

रोबिन के दिमाग पर उसके सपने ने यही छाप छोड़ी और वह इसकी सच्चाई की जॉच करने के लिये उधर चल दिया।

उसको ऐसा लगा कि इससे पहले कि वह अपने इस काम पर जाये कि उसको एक लोहे का हल अपने साथ ले लेना चाहिये। क्योंकि अपने अनुभव से उसे पता था कि वह एक बहुत ही अच्छा हराने वाला हथियार था। कई मौकों पर उसने बड़ी शान्ति से दूसरे को चुप कर दिया था।

सो उसने अपने एक कन्धे पर हल रखा और वह वहॉ से चल दिया। शाम ठंडी थी। वह हौक्स ग्लैन से मौन्क्सटाउन[94] चल दिया।

यहॉ उसका एक दोस्त टौम क्लैन्सी[95] रहता था। जब उसने रोबिन का सपना सुना तो उसने रोबिन से वायदा किया कि वह इस काम के लिये अपनी नाव इस्तेमाल करने ही नहीं देगा बल्कि उसको बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियों तक खेने में भी सहायता करेगा।

शाम को बहुत बढ़िया खाना खा कर वे दोनों चल दिये। बहुत सुन्दर शान्त रात थी। उसकी छोटी सी नाव तेज़ी से बहती हुई चल

[94] Through Hawk's Glen to Monkstown
[95] Gossip Tom Clancey

दी। कभी तो पतवार के पानी में डूबने की आवाज कभी किसी दूर नाविक के गाने की आवाज और कभी देर से आने वाले यात्री की आवाज धरती आसमान और समुद्र की शान्ति तोड़ जाती थी।

समुद्र उनके अनुकूल था सो कुछ ही मिनटों में दोनों बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियों के काले साये के नीचे पहुँच गये।

रोबिन ने बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियों पर जाने का रास्ता ढूँढना शुरू किया क्योंकि लोगों का कहना था कि वह किसी को भी मिल सकता था जो उसे आधी रात के समय ढूँढता। पर उसको तो ऐसा घुसने का कोई रास्ता कहीं दिखायी नहीं दिया।

उसका धीरज छूटता जा रहा था शायद इसलिये कि वह वहाँ नियत समय से पहले ही पहुँच गया था। वह बहुत देर तक शक में पड़ा रहा कि वह क्या करे जिसे बताया नहीं जा सकता।

जब वह बिल्कुल ही बेचैन हो गया तो वह अपने साथी से बोला — "यह हम कैसे बेवकूफ लोगों का जोड़ा है टौम क्लैन्सी जो केवल एक सपने को देख कर ही यहाँ चला आ रहा है।"

टौम बोला — "और यह सब किया किसने है। तुमने खुद ने न।"

जैसे ही वह यह बोला कि उन्होंने पहाड़ की चोटी से आती रोशनी की एक किरन देखी। वह रोशनी देखते देखते बढ़ने लगी जब तक कि किसी राजा के महल के पोर्च के बराबर उसने पानी की सतह पर जगह नहीं घेर ली।

तो उन्होंने अपनी नाव उसी तरफ खे दी। रोबिन कैली ने अपना हल पकड़ा और बहादुरी से उसमें घुस गया। उसके हाथ और दिल दोनों बहुत मजबूत थे।

वह घुसने का दरवाजा तो बहुत ही विचित्र था। सारा का सारा दरवाजा ऐसा लगता था जैसे वह किसी बहुत ही बदसूरत चेहरों का मिला जुला बना हो। जैसे एक चेहरे की ठोढ़ी दूसरे की नाक हो। किसी की ऑख दूसरे का खुला हुआ मुँह हो। और माथे पर पड़ी लाइनें किसी की शानदार दाढ़ी हो आदि आदि।

रोबिन जितना ज़्यादा इन शक्लों के बारे में सोचता जाता था वह उसे और ज़्यादे डरावने लगते जाते थे। चेहरों की इस भीड़ में इन पत्थरों के चहरों ने एक भयानक दृश्य बना दिया था।

उस धुँधलके में जिसमें ये चेहरे दिखायी दे रहे थे वह धुँधलका अब खत्म होता जा रहा था सो वह एक अँधेरे रास्ते पर आगे बढ़ा तभी उसे एक बहुत तेज़ पत्थरों के लुढ़कने की आवाज सुनायी दी। उसे ऐसा लगा जैसे वह चट्टान उसके घुसने के बाद में दरवाजा बन्द कर रही हो और हमेशा के लिये ज़िन्दा निगल जाना चाहती हो। अब रोबिन को डर लगने लगा।

वह बोला — "रोबिन रोबिन। अगर तुमने यहॉ आने की बेवकूफी की है तो तुम क्या समझते हो कि तुम क्या हो।"

पर पहले की तरह से वह बस यह बोला ही था कि उसने दूर के अँधेरे में एक छोटी सी रोशनी चमकती देखी जैसे आधी रात में कोई तारा चमक रहा हो।

अब वापस जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था क्योंकि रास्ते में बहुत सारे मोड़ थे घुमाव थे। इससे उसको लग रहा था कि वह अब लौट कर वापस नहीं जा पायेगा। सो वह आगे की तरफ रोशनी की तरफ चल दिया।

चलता चलता वह एक बहुत बड़े कमरे में आ गया उसमें केवल एक लैम्प जल रहा था जो उसकी छत से लटक रहा था। वह उसी के सहारे वहाँ तक आ पाया था।

रोबिन क्योंकि अँधेरे में से रोशनी में आ रहा था सो उसको जल्दी ही उसमें बहुत बड़े बड़े साइज़ की शक्लें दिखायी देने लगीं। वे सब पत्थर की एक बहुत बड़ी मेज के चारों तरफ बैठी हुई थीं। ऐसा लगता था जैसे वे लोग किसी गम्भीर विषय पर बात कर रहे थे। पर उस शान्ति में कोई भी शब्द सुनायी नहीं पड़ रहा था।

मेज के सिरहाने की तरफ महोन मैकमहोन खुद बैठा हुआ था। जिसकी शान वाली दाढ़ी नीचे तक आ रही थी। समय के बीतने के साथ साथ वह पत्थरों में जा कर बढ़ रही थी।

वही पहला आदमी था जिसने रोबिन को देखा। उसने खड़े हो कर इतनी जल्दी से एक झटके में अपनी दाढ़ी पत्थर के नीचे से निकाली कि वह तो पल में ही सारी चूर चूर कर बिखर गयी।

उसने कड़कती आवाज में पूछा — "तुम किसे ढूँढ रहे हो।"

रोबिन से जितनी हिम्मत से जवाब दिया जा सकता था उसने उतनी हिम्मत से जवाब दिया क्योंकि अन्दर से तो उसका दिल डूबा जा रहा था — "मैं यहाँ फिलिप रोनेन को लेने आया हूँ जिसकी सेवा का समय आज की रात खत्म हो चुका है।"

"और तुम्हें भेजा किसने है।"

रोबिन बोला — "मैं यहाँ अपनी तरफ से आया हूँ।"

महोन बोला — "तब मेरे नौकरों में से तुम उसको खुद ही पहचान लो। और अगर तुम किसी गलत आदमी को चुन लोगे तो तुम मर जाओगे। आओ मेरे पीछे पीछे आओ।"

वह रोबिन को एक और बहुत बड़े कमरे मे ले गया जिसमें बहुत सारी रोशनी हो रही थी। उस रोशनी के दोनों तरफ वहुत सुन्दर सुन्दर लड़के बैठे हुए थे। सब लड़के सात साल की उम्र के से थे पर उससे बड़ा और कोई नहीं लग रहा था। सबने हरे रंग के कपड़े पहने हुए थे और सबने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे।

महोन बोला — "यह लो। यहाँ से तुम फिलिप महोन को ले जाने के लिये आजाद हो। याद रखना कि बस तुम्हारे पास एक ही मौका है।"

रोबिन दुखी हो कर बहुत उदास हो गया। उसको फिलिप को देखे बहुत दिन हो गये थे। उसको बच्चे की कोई चीज़ याद नहीं

थी। सो वह कमरे में महोन के साथ साथ चल दिया। जैसे उसको किसी बात से कोई मतलब ही नहीं था।

उसकी इस्तरी की गयी पोशाक आज चलते समय इतनी ज़्यादा आवाज कर रही थी जितनी कि हर कदम पर उसकी स्ले भी उतनी ज़्यादा आवाज नहीं करती थी।

चुपचाप चलते चलते वे कमरे के आखीर तक पहुँच गये और रोबिन को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था कि वह फिलिप को कैसे पहचाने। वह परेशान था। उसने सोचा कि अगर वह बड़े साइज़ के आदमी से दोस्ती कर लेता है तो शायद कुछ बात बन जाये। सो उसने उससे कुछ मीठे शब्द बोलने के लिये कोशिश की।

वह बोला — "यहाँ ये सब बच्चे बैठे हुए कितने अच्छे लग रहे हैं। हालाँकि ये यहाँ पर काफी दिनों से सूरज की धूप और ताजा हवा से दूर बन्द हैं। तुमने इनको बहुत ही प्यार से पाला होगा।"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "ए। यह तो तुम ठीक कहते हो। सो मुझे अपना हाथ दो क्योंकि मेरा विश्वास है कि तुम बहुत ही ईमानदार लोहार हो।"

पहले तो रोबिन को उसका इतना बड़ा हाथ बिल्कुल अच्छा नहीं लगा सो उसने अपना हाथ देने की बजाय उसके हाथ में अपना हल पकड़ा दिया जिसको कि उसने पकड़ते हुए गोल गोल ऐंठ दिया जैसे

कि वह कोई आलू का पौधा हो। सारे बच्चे यह देख कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़े।

उनकी इस हॅसी के बीच में रोबिन को ऐसा लगा जैसे कि किसी ने उसका नाम लिया हो। उसने उसी लड़के पर हाथ रख दिया जिसको कि उसे लगा कि उसने उसका नाम लिया था और बोला — "अब इसी के नाम पर मैं जीता हूॅ या मरूॅगा। यही वह फिलिप रोनेन है।"

उसके साथियों ने खुश हो कर बोला — "हॉ यही फिलिप रोनेन है। हॉ यही फिलिप रोनेन है।" तभी सारे कमरे में अॅधेरा छा गया। तोड़ फोड़ की आवाजें सुनायी देने लगीं। सब लोग परेशान हो गये पर रोबिन ने फिलिप को नहीं छोड़ा। फिर उसने अपने आपको सॉवले धुॅधलके में बड़े साइज़ के आदमी की सीढ़ियों के ऊपर लेटा पाया। फिलिप अभी भी उसकी बॉहों में था।

रोबिन को इस कहानी की बहुत सारी बातें लोगों को बताने के लिये थीं। एक सवाल तो रोबिन से हर आदमी ने यही पूछा कि "क्या तुमको यकीन है कि तुम असली फिलिप को ही साथ ले कर आये हो।"

हालॉकि बच्चा सात साल तक दूर रहा था पर उसकी शक्ल अभी भी वैसी ही थी जैसी कि उसको चुराने वाले दिन थी। इतने दिनों में न तो वह लम्बा ही हुआ था और न बड़ा ही हुआ था। इसके अलावा उसने अपने बीते हुए समय की बातें भी बतायीं।

और वह ऐसे बतायीं जैसे कि वे कल ही हुई हों सात साल पहले नहीं।

रोबिन बोला — "क्या मैं यह यकीन के साथ कह सकता हूँ? यह तो एक बड़ा अजीब सा सवाल है। मैंने उसकी ऑखें उसकी मॉ की आखों की तरह से नीली देखीं उसके बाल उसके पिता के लोमड़े जैसे बालों की तरह देखे और उस निशान का तो कुछ कहना ही नहीं जो उसकी नाक के दॉयी तरफ है।"

रोबिन कैली से भी कई सवाल पूछे गये। रोनेन कोर्ट में रहने वाले जोड़े को तो इस बात में कोई शक ही नहीं था कि रोबिन ही उनके बेटे को बड़े साइज़ के आदमी महोन मैकमहोन से आजाद करा कर लाया था। उन्होंने उसको उसके उपकार जैसा ही इनाम भी दिया।

फिलिप रोनेन बूढ़ा होने तक ज़िन्दा रहा और वह जब तक रहा तब तक पीतल और लोहे का सामान बनाने के काम में चतुर रहा। लोगों का विश्वास था कि यह काम उसने महोन के पास सात साल रह कर ही सीखा था।

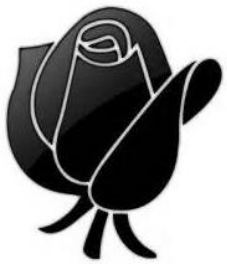

18 अंडों की टोकरी[96]

एक बार की बात है कि एक स्त्री एक अंडे की टोकरी ले कर उन्हें बेचने के लिये बाजार जा रही थी। वह उसके पैसे गिनती चली आ रही थी।

"अगर अंडों के दाम कल से बढ़ गये होंगे तो मुझे कुछ चॉदी के सिक्के और मिल जायेंगे और अगर कम भी हो गये होंगे तो कोई बात नहीं। मुझे इतना ज़्यादा नुकसान भी नहीं होगा क्योंकि मेरे पास बेचने के लिये काफी अंडे होंगे।

यह कह कर उसने एक छोटे से बच्चे की तरफ देखा जो एक हैज के पास बैठा हुआ था और एक जूता सिल रहा था। उसने सोचा कि "अगर मैं उस बच्चे को पकड़ सकती तो मैं उसको बहुत बड़ा खजाना दिलवा देती क्योंकि उस जैसे बच्चों को पता होता है कि सोना कहॉ छिपा हुआ है।

उसने उसके पीछे से झॉका जैसे कोई बिल्ली चिड़िया के पीछे से ताक लगाती है और उसकी गरदन को कस कर पकड़ लिया। वह आश्चर्य से चीख उठा। स्त्री बोली "आहा मैंने तुम्हें पकड़ लिया।"

लड़का बोला — "यकीनन। तुमने मुझे पकड़ लिया।"

---

[96] The Basket of Eggs. A folktale from Ireland. Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales11.html##baegg

स्त्री ने उससे पूछा — "क्या तुम मुझे खजाना बताओगे। लैप्राकौन्स[97] तो इसी के लिये बनाये जाते हैं।"

लड़का बोला — "यकीनन। लेकिन वह सोने का बर्तन जो मैं तुम्हें ला कर दूँगा वह एक बहुत अजीब से मेंढक पहरेदार के सामने से हो कर तुम्हें ले जाना पड़ेगा।"

"पर मैं मेंढक की परवाह क्यों करूँ। मेंढक तो मुझे नहीं डरा सकेगा।"

उसने लड़के को टोकरी के हैन्डिल पर बिठा लिया। वह खुद उसका एक कान भी पकड़े रही और खजाना लेने के लिये जैसे जैसे वह बताता गया वह स्त्री उसके साथ साथ चलती रही।

लड़का बोला "तुम तो बहुत ही बड़ी मजबूत और पक्के इरादे वाली स्त्री हो। मैंने इससे पहले तुम्हारे जैसी कोई और स्त्री नहीं देखी।"

स्त्री बोली — "ऐसे ही बातें करते रहो।"

उनको चलते चलते घंटों बीत गये। फिर उसने अंडे बाहर फेंकने शुरू कर दिये।

स्त्री बोली — "यह तुम क्या कर रहे हो। मेरे अंडे तोड़ने बन्द करो।" कह कर उसने पीछे की तरफ देखा यह देखने के लिये कि अभी उसका कोई अंडा साबुत बचा भी है या नहीं।

[97] Lepracon is a kind of fairy in Irish folklore literature.

पर जैसे ही उसने अपना सिर पीछे किया कि वह लड़का उसके हाथ से फिसल कर भाग गया। वह टोकरी के हैन्डिल से हैज पर कूदा और फिर वहॉ से गायब हो गया।

स्त्री बोली — "ओह इस लड़के ने मुझे बहुत बेवकूफ बनाया। इसने मेरे सारे अंडे भी बर्बाद कर दिये और मुझे खजाना भी नहीं दिलवाया। पर चलो उसने कम से कम यह तो कहा कि मैं दुनियॉ की सबसे अच्छी स्त्री हूँ मुझे यही बात जानने से बहुत खुशी मिली।

19 एक वकील और एक शैतान[98]

एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। वह उनको ज़िन्दगी में कुछ बनाना चाहता था पर उसके पास पैसे नहीं थे। सो उसने अपने आपको एक शैतान को सात साल के लिये बेच दिया ताकि वह अपने तीनों बेटों को स्कूल भेज सके। एक को वह पादरी बनाना चाहता था दूसरे को डाक्टर और तीसरे को वकील।

सात साल के बाद शैतान बूढ़े को नरक ले जाने के लिये आया। जब वह शैतान उस बूढ़े को ले जाने के लिये आया उस समय उसका एक बेटा भी वहीं खड़ा हुआ था। यह उसका पादरी बेटा था।

यह देख कर उसने प्रार्थना करनी शुरू की और शैतान से विनती की कि वह उसके पिता को न ले जाये। अन्त में शैतान ने उसको वहीं छोड़ दिया और इस तरह उसके पिता को जीने के लिये कुछ दिन और मिल गये।

समय खत्म होने पर शैतान फिर बूढ़े को नरक ले जाने के लिये फिर से आया। अबकी बार उसके पास उसका डाक्टर बेटा बैठा हुआ था। उसने भी शैतान से उसको छोड़ देने की बहुत प्रार्थना की तो शैतान उसको कुछ समय और जीने की मोहलत दे कर चला गया

[98] The Lawyer and the Devil. A folktale from Ireland : Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales11.html##baegg

और इस तरह से उसको जीने के लिये फिर से कुछ और समय मिल गया।

समय समाप्त होने पर शैतान फिर बूढ़े को लेने के लिये आया। अबकी बार उसका तीसरा बेटा जो वकील था वह वहॉ बैठा हुआ था।

वकील बोला — "आपने मेरे पिता को दो बार तो छोड़ दिया इसलिये मैं अब आपसे यह तो उम्मीद तो नहीं करता कि आप उसे फिर से छोड़ देंगे। पर क्या आप उनको इतनी छूट दे सकते हैं कि वह तब तक ज़िन्दा रहें जब तक यह मोमबत्ती जलती है।"

यह कह कर उसने एक मोमबत्ती की तरफ इशारा किया जो वहीं एक मेज पर जल रही थी।

शैतान बोला "ठीक है।"

अब यह मोमबत्ती केवल पीछे से एक टुकड़ा ही रह गयी थी सो वह तो बहुत समय तक जली नहीं रह सकती थी। वकील ने कहा कि शैतान उस मोमबत्ती को न तो छुएगा और न उसमें फूॅक मारेगा।

इस पर वकील ने मोमबत्ती का पिछला हिस्सा लिया उसको फूॅक मार बुझाया और जेब में रख लिया। और बस। वकील ने मोमबत्ती का वह टुकड़ा अपने पास रख लिया तो शैतान को अपना वायदा निभाना पड़ा और वह बिना बूढ़े को लिये हुए ही वहॉ से चला गया।

20 स्नीम का भूत[99]

मार्टिन डौयल[100] की बुढ़िया पत्नी ने एक बार बताया कि उसका पति कहीं एक बहुत बड़े मकान पर काम कर रहा था जो स्नीम[101] से कुछ ही दूरी पर था।

एक शाम जिस भले आदमी ने मार्टिन को यह काम दिया था उसने मार्टिन को रात में किसी काम से स्नीम भेजा। मार्टिन ने कहा कि "इस समय देर हो चुकी है और सड़क भी अकेली ही है। मेरी मॉ की देखभाल करने वाला भी सिवाय मेरे और कोई नहीं है। अगर मुझे कुछ हो गया तो उसकी देखभाल करने वाला तो कोई नहीं बचेगा। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो मैं कल सुबह चला जाऊॅ।"

भले आदमी ने कहा — "उससे काम नहीं बनेगा। मुझे उसको एक चिट्ठी भेजनी है जो उसको आज रात ही मिलनी चाहिये।"

मार्टिन बोला — "मैं यह खतरा मोल नहीं ले सकता। मैं नहीं जा सकता।"

मार्टिन का एक चाचा का बेटा था जेम्स। वह ये सब बातें सुन रहा था। वह सामने आया और बोला — "मैं जाऊॅगा। मैं किसी

---

[99] The Ghost of Sneem. A folktale from Ireland. Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales15.html [From Jeremiah Curtin's "Tale of Irish Fairies and Ghosts", p 140-144.

[100] Martin Doyle. He had a cousin named James.

[101] Sneem is the name of a place.

भूत या आत्मा से नहीं डरता। और मैं तो उस सड़क पर कई रातों में गया हूँ।"

भले आदमी ने उसे धन्यवाद दिया और उसे एक तलवार दे कर बोला — "लो यह तलवार लो अगर तुम्हें कभी इसकी जरूरत पड़े तो।" फिर उसने उसको चिट्ठी दी और बताया कि उसको उसे कहाँ देना है।

जेम्स वहाँ से चल दिया और वहाँ से उसने एक बहुत ही छोटा सा रास्ता ले लिया। जब उसने देखा कि वह स्नीम के आधे रास्ते में पहुँच चुका है तो उसने देखा कि सड़क पर एक भूत उसके सामने खड़ा है और उसकी तरफ आ रहा है।

जब भी वह भूत उसकी तरफ आता तो जेम्स उसकी तरफ अपनी लोहे की तलवार से शोर करता आगे बढ़ता। क्योंकि आयरलैंड के लोहारों के बनाये लोहे के फलों में बहुत ताकत होती थी।

भूत जेम्स की तरफ चलता चला आ रहा था। आखिर वे दोनों स्नीम के पास के एक चौराहे तक आ गये। वहाँ पहुँच कर भूत गायब हो गया। यह देख कर जेम्स जल्दी जल्दी स्नीम की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसे पता चला कि वह भला आदमी जिसको उसे वह चिट्ठी देनी थी वह तो वहॉ से करीब छह मील दूर ब्लैकवाटर पुल के पास चला गया है – स्नीम और कैनमेयर के बीच में।[102]

यह जगह बहुत खराब थी। बूढ़ों ने तो यहॉ तक कह रखा था कि उस जगह कोई रात ऐसी नहीं बीतती जिस रात ब्लैकवाटर पुल के पास कोई भूत, या बिना सिर के आदमी या कोई आत्मा न दिखायी देते हों।

जेम्स इस जगह को जानता था पर उसने पक्का इरादा कर लिया था कि वह वहॉ वह चिट्ठी दे कर जरूर आयेगा। जब वह पुल के पास आया और उसको पार करने लगा एक भूत ने उसके ऊपर हमला किया।

यह भूत पहले वाले भूत से ज़्यादा ताकतवर था। वह जेम्स पर दोगुना तेज़ भागा तो जेम्स ने भी अपनी तलवार से उसके ऊपर हमला किया। तभी उसने एक बिना सिर वाला आदमी देखा जो सामने से सड़क पार कर पहाड़ी की चोटी की तरफ जा रहा था। अजीब बात तो यह थी कि उस तरफ कोई रास्ता नहीं था।

भूत ने उस पर हमले बन्द करने बन्द कर दिये थे और वह उस बिना सिर वाले आदमी के पीछे भाग गया था।

[102] Six miles far from Sneem at Blackwater Bridge, between Sneem and Kemmare

जेम्स ने पुल पार किया और थोड़ी ही दूर आगे चला था कि उसको एक अजनबी मिला। दोनों ने एक दूसरे को नमस्ते की। अजनबी ने जेम्स से पूछा कि वह कहॉ रहता था।

जेम्स बोला — "मैं ड्रमफादा[103] से आया हूँ।"

जेम्स ने पूछा — "क्या तुम्हें मालूम है कि इस समय क्या बजा है।"

"नहीं मुझे नहीं मालूम पर जब मैं उस घर से गुजर रहा था तो वहॉ उसके नीचे मुर्गे अपनी बॉग देने वाले हो रहे थे। क्या तुमने वहॉ कुछ देखा?"

जेम्स बोला — "हॉ देखा।" और उसे बताया कि कैसे एक भूत ने वहॉ उस पर हमला किया था और फिर कैसे वह उस पहाड़ी तरफ एक बिना सिर वाले आदमी के पीछे पीछे भाग गया था।"

अजनबी बोला — "ओह। वह बिना सिर का शरीर तो पुल के आस पास रात को हमेशा ही घूमता रहता है। सैंकड़ों लोगों ने उसे वहॉ देखा है। वह पहाड़ की चोटी की तरफ भाग गया और मुर्गे बोलने के समय में गायब भी हो गया। और वह भूत भी मुर्गे की बॉग के समय भाग गया जिसने तुम पर हमला किया था।"

अजनबी चलता रहा। जेम्स ने चिट्ठी दी। जिस आदमी को वह चिट्ठी मिली थी उसने उसको बहुत धन्यवाद दिया और अच्छे पैसे दिये। जेम्स वहॉ से ठीक से वापस लौट आया।

---

[103] Drumfada

पर वह बोला — "अगर मेरे पास तलवार न होती तो अब तक तो मैं कभी का मर जाता।

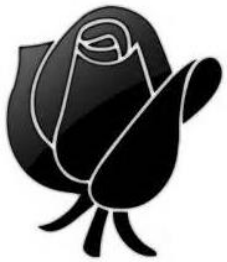

21 परी नर्स[104]

एक बार एक किसान और उसकी पत्नी कूलगैरो[105] के पास रहते थे। उनके तीन बच्चे थे जिनमें से सबसे छोटा बच्चा तो अभी बच्चा ही था। किसान की पत्नी बहुत अच्छी थी वह अपने अच्छे दिमाग से अपना घर चलाती थी और खेत को भी देखती थी।

एक रात अपने बच्चों के रोने से किसान की ऑख खुल गयी। वे मॉ मॉ चिल्ला रहे थे। वह उठा और ऑखें मलता हुआ चारों तरफ को देखने लगा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी उसके पास नहीं है।

जब उसने बच्चों से पूछा कि उनकी मॉ को क्या हुआ तो उन्होंने बताया कि उन्होंने देखा कि कमरा छोटे छोटे आदमियों और स्त्रियों से भर गया था। वे सब लाल हरे और सफेद कपड़े पहने हुए थे। उनके बीच में उनकी मॉ थी और वह दरवाजे से बाहर जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह नींद में चल कर जा रही हो।

यह सुनते ही वह उठ कर बाहर भागा चारों तरफ देखा भाला पर उसको कहीं कुछ दिखायी नहीं दिया। बहुत दिनों तक उसकी कोई खबर भी नहीं मिली। बेचारा किसान बहुत परेशान था क्योंकि वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

---

[104] The Fairy Nurse. A folktale from Ireland : Taken from : http://oaks.nvg.org/irtales17.html

[105] Coolgarrow – name of a place

अब उसके बच्चों की देख भाल करने वाला घर में कोई नहीं था सो उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि एक पड़ोसन आ कर उनकी थोड़ी बहुत देखभाल कर जाती थी। सबसे छोटे बच्चे को जो एक लड़की थी एक नर्स देख रही थी।

करीब छह हफ्ते के बाद एक दिन सुबह को वह अपने काम पर जा रहा था कि उसकी एक पड़ोसन उसके पास आयी और उसके साथ साथ उसके खेत की तरफ चलने लगी।

उसने उससे कहा — "कल रात जब मैं सोने जा ही रही थी तो मैंने बाहर घास पर एक घोड़े की टाप की आवाज सुनी और फिर अपने घर के दरवाजे पर खटखट की आवाज सुनी।

मैं बाहर आयी तो मैंने देखा कि बाहर एक काले घोड़े पर बहुत अच्छा सुन्दर सॉवले रंग का नौजवान खड़ा है। उसने मुझे बहुत जल्दी तैयार होने के लिये कहा क्योंकि किसी स्त्री को मेरी जरूरत थी। जैसे ही मैं अपने कपड़े पहन कर तैयार हुई उसने मेरा हाथ पकड़ा और अपने पीछे बिठा लिया।

मैंने उससे पूछा — "सर हम लोग कहॉ जा रहे हैं।"

वह बोला — "तुम्हें अभी पता चल जायेगा।"

मैंने उसको कस कर पकड़ रखा था। आखिर हम लोग एक सोने वाले कमरे में आये। वहॉ एक बिस्तर पर एक सुन्दर स्त्री लेटी

हुई थी और उसके बराबर में एक बच्चा था। उस स्त्री ने ताली बजायी तो वह सॉवला नौजवान अन्दर आया।

उसने स्त्री और बच्चे को चूमा और मेरी प्रशंसा की। उसने मुझे हरे रंग का एक मरहम दिया कि मैं उसे बच्चे के शरीर पर मल दूँ। मैंने उससे वह मरहम लिया और बच्चे के शरीर पर मलने लगी।

तभी मेरी दॉयी ऑख फड़कने लगी। मैंने अपनी उँगली उठायी और फिर मरहम मलने लगी और फिर देखा कि वह सुन्दर कमरा तो एक गुफा थी और जो कीमती कपड़े थे वे सब चिथड़े बन गये थे।

कुछ देर बाद सॉवले नौजवान ने कहा — "तुम कमरे की दरवाजे तक चलो मैं अभी थोड़ी देर में तुमसे आ कर मिलता हूँ और तुम्हें तुम्हारे घर तक सुरक्षित छोड़ कर आता हूँ।"

जैसे ही मैं गुफा से बाहर निकलने के लिये घूमी तो मैंने तुम्हारी बेचारी मौली को वहॉ देखा। वह चारों तरफ डरी डरी सी देख रही थी। वह मुझसे फुसफुसा कर बोली — "मुझे यहॉ के परियों के राजा से बचाने का एक तरीका मालूम है।

अगले शुक्रवार की रात को सारे लोग ओल्ड रौस[106] की परियों से मिलने के लिये टैम्पिलशैम्बो[107] के पास से हो कर गुजरेंगे। तो जब मैं वहॉ से जा रही होऊँगी अगर जौन मुझे मेरा हाथ या मेरा शाल पकड़ कर खींच ले और हिम्मत से मुझे कस कर पकड़े रहे तो

[106] Old Ross
[107] Templeshambo

मैं सुरक्षित रहूँगी। राजा यहीं है सो मेरी बात का जवाब देने के लिये तुम अपना मुँह मत खोलना।"

मैंने यह सब मरहम लगाने के बाद देखा। सॉवले नौजवान ने मौली की तरफ एक बार भी नहीं देखा और मेरे ऊपर भी उसको कोई शक नहीं हुआ।

जब हम गुफा से बाहर निकले तो मैंने अपने चारों तरफ देखा तो तुम क्या सोचते हो कि हम कहॉ थे – हम लोग थे क्रोमोग के रथ के डाइक में।[108] जल्दी ही मैं अपने घर में थी। राजा ने मेरे हाथ में पॉच गिनी[109] दीं। मैंने उनको उठा कर मेज की ड्रौअर में रख दिया और सोने चली गयी।

पर उसके बाद मैं बहुत देर तक नहीं सो सकी। जब सुबह मैंने अपनी पॉच गिनी दोबारा देखीं जो मैंने अपनी मेज की ड्रौअर में रखी थीं तो वहॉ तो मुझे कोई गिनी नहीं थी बल्कि वहॉ ओक के पॉच मुरझाये हुए पत्ते रखे थे।"

जब शुक्रवार की रात आयी तो किसान और उसकी पड़ोसन वहॉ खड़े हुए थे जहॉ रौस को जाते समय पहाड़ी सड़कें आपस में एक दूसरे को काटती थीं। वे लोग वहॉ खड़े खड़े थुआर पुल[110] की तरफ देखते हुए उनके आने का इन्तजार कर रहे थे। थोड़ा सा चॉद चमका तो थोड़ी सी रोशनी फैली।

---

[108] In the dyke of Rath of Cromogue

[109] Guineas – currency

[110] Thuar Bridge

आखिर पड़ोसन ने किसान से कॉपते हुए अपनी ऑखें चौड़ी चौड़ी खोलते हुए कहा — "देखो उधर देखो। वे लोग वहॉ से अपनी लगामें बजाते हुए और पंख उछालते हुए चले आ रहे हैं।"

किसान ने उस तरफ देखा तो उसे तो कुछ भी दिखायी नहीं दिया। पड़ोसन फिर बोली — "देखो मुझे तुम्हारी पत्नी दिखायी दे रही है। वह बाहर की तरफ को बैठी है ताकि वह हमसे छू कर जा सके। हम लोग शान्ति से चलेंगे जैसे हमें कुछ पता ही नहीं है।

जब हम उसके पास से गुजर रहे होंगे तो मैं तुम्हें हल्का सा धक्का दूँगी। अगर उस समय तुम अपना काम नहीं करोगे तो फिर तुम सारी उम्र दुखी ही रहना।"

यह तय कर के वे आराम से चलने लगे। उनका दिल उनकी छाती के अन्दर ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था। हालॉकि किसान को कुछ दिखायी नहीं दे रहा था पर उसने बहुत हल्की लगामों के हिलने की और घोड़ों के कूदने की आवाज सुनी।

आखिर उसने धक्का महसूस किया तो उसने अपने हाथ फैलाये तो उसकी बॉहों में उसकी पत्नी की कमर थी। अब वह उसको साफ साफ देख सकता था। पर वहॉ इतना हल्ला गुल्ला मचा जैसे वहॉ कोई भूचाल आ गया हो। उसने देखा कि वह तो चारों तरफ से बहुत सी भयानक चीज़ों से घिरा हुआ है।

वे सब उस पर गरज रही थीं गुर्रा रही थीं और उसकी पत्नी को उसके हाथों से छीन रही थीं। पर वह उनसे जाने के लिये कहता

रहा और उसे अपनी बॉहों में ऐसा जकड़ा रहा जैसे उसकी बॉहें मॉस हड्डी की न बनी हों बल्कि लोहे की बनी हों।

पल भर में ही सब शान्त हो गया। किसान की पत्नी किसान और अपनी पड़ोसन की बॉहों में बेहोश सी पड़ी थी।

उसको ठीक होने में थोड़ा समय लग गया। ठीक होने के बाद वह फिर से अपना घर और खेत सॅभालने में लग गयी थी। फिर उसे कभी कोई परी आदमी नहीं मिला।[111]

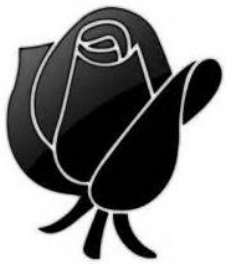

[111] This tale does not tell that "was the baby's nurse a fairy?" and why she did all this? OR if she was not that fairy then why its title is "The Fairy Nurse".

List of Stories of “Folktales of Ireland”

1. Magical Milk
2. Witches With Horns
3. Spirit of a Priest
4. Countess Kathleen Oshi
5. Three Wishes
6. Twelve Wild Sons
7. A Lazy Girl and Her Aunts
8. Proud Princess
9. Moonachar and Manachar
10. Donald and His Neighbors
11. Lough Earne's Golden Apples
12. Dauntless Man
13. Poet Seanchan and the King of Cats
14. Jamie Freel and the Young Lady
15. The Greedy Fox
16. The Woman Without Stockings
17. The Giant's Stairs
18. The Basket of Eggs
19. The Lawyer and the Devil
20. The Ghost of Sneem
21. The Fairy Nurse

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022